NEKIYO KI JAZAE AUR GUNAHO KI SAZAE

नेकियों की जज़ाओं और गुनाहों की सज़ाओं से मुतअ़ल्लिक़ आयात,

अहादीष और हिकायत पर मुश्तमिल तालीफ़

قُرَّةُ الْعُيُوْنِ وَمُفَرِّحُ الْقَلْبِ الْمَحْزُوْن

तर्जमा बनाम

नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं

मुअल्लिफ़ :- फ़क़ीह अबुल्लैस नस्र बिन मुहम्मद समरक़न्दी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه

(मुतवफ़्फ़ा सि. 375 हि.)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **दीनी** किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(المُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکربیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम **1428** हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा **ह़सरत** क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में **इ़ल्म** ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने **इ़ल्म** ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां **ख़राबी** हो या **सफ़ह़ात** कम हों या **बाइन्डिंग** में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

www.dawateislami.net

नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" ने येह किताब "**उर्दू**" ज़बान में पेश की है और **मजलिसे तराजिम** ने इस किताब का "**हिन्दी**" रस्मुल ख़त (लीपियांतर) करने की सआदत हासिल की है [**भाषांतर** (TRANSLATION) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (TRANSLITERATION) या'नी ज़बान तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि **हिन्दी** रखी है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़लती** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए SMS या E-MAIL) **मुत्तलअ़** फ़रमा कर सवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त का लीपियांतर चार्ट

त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ
ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ

अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س
ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق	फ़ = ف	ग़ = غ	' = ءُ
य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل	घ = گھ
्‍ = ٗ	ु = ُ	ि = ِ	– = َ	ी = ئ	ु = ؤ	ा = آ

-: राबित़ा :-
मजलिसे तराजिम, मक्तबतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)
मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर,
नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द
Mo. + 91 9327776311
E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

www.dawateislami.net

नेकियों की जज़ाओं और गुनाहों की सज़ाओं
से मुतअ़ल्लिक़ आयात, अहादीस और हिकायात का
मदनी गुलदस्ता

قُرَّةُ الْعُيُوْنِ وَمُفَرِّحُ الْقَلْبِ الْمَحْزُوْنِ

–: तर्जमा बनाम :–

नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं

–: मुअल्लिफ़ :–
फ़क़ीह अबुल्लैस नस्र बिन मुहम्मद समरक़न्दी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه
(मुतवफ़्फ़ा सि. 375 हि.)

–: पेशकश :–
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
शो'बए तराजिमे कुतुब, (दा'वते इस्लामी)

–: नाशिर :–
मक्तबतुल मदीना
421, उर्दू मार्केट, मटया महल, जामेअ़ मस्जिद,
देहली–110006 फ़ोन : 011-23284560

www.dawateislami.net

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ الله وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ الله

नाम किताब : قُرَّةُ الْعُيُوْنِ وَمُفَرِّحُ الْقَلْبِ الْمَحْزُوْنِ

तर्जमा बनाम : नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं

मुअल्लिफ़ : फ़क़ीह अबुल्लैस नस्र बिन मुह़म्मद समरक़न्दी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه

मुतर्जिमीन : मदनी उ़-लमा (शो'बए तराजिमे कुतुब)

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

सिने तृबाअ़त : ज़िल क़ा'दतुल ह़राम, सि. 1435 हि.

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, देहली - 6 (अल हिन्द)

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 17 रबीउ़न्नूर, 1431 हि. हवाला नम्बर : 166

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْن

तस्दीक़ की जाती है कि किताब قُرَّةُ الْعُيُوْنِ وَمُفَرِّحُ الْقَلْبِ الْمَحْزُوْنِ के तर्जमे **"नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं"** (उर्दू) (**मत़बूआ़ : मक्तबतुल मदीना**) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे अ़क़ाइद, कुफ़्रिय्या इ़बारात, अख़्लाक़िय्यात, फ़िक़्ही मसाइल और अ़रबी इ़बारात वग़ैरा के हवाले से मक़्दूर भर मुलाह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लत़ियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल
(दा'वते इस्लामी)

04-03-2010

E - mail : ilmiapak@dawateislami.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं।

www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी ।

उ़नवान	सफ़्ह़ा	उ़नवान	सफ़्ह़ा

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

मज़ामीन	सफ़ह़ा	मज़ामीन	सफ़ह़ा
इस किताब को पढ़ने की निय्यतें	5	हर शराब ह़राम है	23
पहले इसे पढ़ लीजिये !	8	जन्नत की ख़ुश्बू से महरूम लोग	23
तआ़रुफ़े मुसन्निफ़	11	मुर्दार से ज़ियादा बदबू दार	23
पहला बाब : बे नमाज़ी की सज़ा	14	शराबी के साथ तआ़वुन का वबाल	23
मुसलमान और काफ़िर के दरमियान फ़र्क़	15	शराबी का दर्दनाक अन्जाम	24
नमाज़ तेरी मीज़ान है	15	जहन्नमियों का ख़ून और पीप पिलाया जाएगा	26
जहन्नम और निफ़ाक़ से आज़ादी	15	क़ब्र में शराबी का चेहरा क़िब्ले से फिर जाता है	26
जन्नतुल फ़िरदौस में मह़ल	15	लोहे के गुर्ज़ों से इस्तिक़बाल	27
नमाज़ गुनाहों को धो डालती है	16	शराबी की सज़ाओं का ख़ौफ़नाक मन्ज़र	28
जहन्नम पर ह़राम कर दिया जाएगा	16	शराबी को कलिमे की तल्क़ीन, मगर...!	32
नजात, नूर और दलील	16	जब बन्दा तौबा कर लेता है	33
फ़िरिश्तों की दुआ़	16	**तीसरा बाब : ज़ानी की सज़ा**	34
नमाज़ की ताकीद	17	ज़िना के छे नुक़्सानात	34
जहन्नम के दरवाज़े पर नाम	17	आग की ज़न्जीरें और सलाख़ें	34
बद बख़्त व महरूम कौन ?	17	तांबे का लिबास	35
सिह़्ह़त व तन्दुरुस्ती में नमाज़ छोड़ने का वबाल	18	शादी शुदा से ज़िना करने का अ़ज़ाब	36
बिग़ैर गोश्त के चेहरे	18	शर्मगाहों पर आग	37
आस्मान से ला'नत बरसती है	19	ग़ैर औ़रत से हाथ मिलाने की सज़ा	38
अ़ज़ाब से छुटकारे के अस्बाब	20	**चौथा बाब : लूती की सज़ा**	41
अज़दहों और बिच्छूओं की वादी	21	लिवात़त की दुन्यावी सज़ा	41
दूसरा बाब : **शराबी की सज़ा**	22	अ़र्शे इलाही कांप उठता है	41
शराब बेचने वाले पर ला'नत	22	आग ने लड़के की शक्ल इख़्तियार कर ली	42
क़ियामत में शराबी का ह़ुल्या	22	सात क़िस्म के लोगों पर ला'नत	43

www.dawateislami.net

शैतान का पसन्दीदा अ़मल	43	दो बुरी आवाज़ें	55
क़ौमे लूत़ के अफ़्आ़ल	44	नौहा़ का दल्लाल	56
आग की चादरें	44	तारकोल का लिबास	58
जिस घर में ज़नाना मर्द हो उस पर ला'नत	45	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से शर्म क्यूं न आई ?	59
क़ौमे लूत़ की बस्ती में फेंक दिया जाता है	45	हाए बरबादी ! हाए हलाकत	60
बे सर के बच्चे	46	आंसूओं पर उजरत	61
पांचवां बाब : सूद ख़ोर की सज़ा	47	कुफ़्र के मुतरादिफ़ तीन बातें	61
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से नाराज़ी मोल लेने वाला	47	हम में से नहीं	62
घरों जैसे पेट	47	शो'ले, पहलूओं को खा डालेंगे	62
गोया अपनी मां से ज़िना किया	48	साबिरीन के लिये उख़रवी इन्आ़मात	63
सूदी लैन दैन करने वालों पर ला'नत	48	बच्चे की मौत पर सब्र का इन्आ़म	65
बीमारियां और ख़ूं रैज़ियां आ़म हो जाएंगी	49	क़ियामत में झन्डे लहराए जाएंगे	65
पेट को आग से भर दिया जाएगा	49	पुल सिरात़ आ'माल के मुत़ाबिक़ होगा	67
सूद नेकियां मिटाता और गुनाह बढ़ाता है	50	अ़र्श के नीचे सोने का घर	68
कम तोलने वाले की सज़ा	50	नाबीनाओं के लिये ख़िल्अ़ते ख़ास	68
सियाह चेहरा	51	रेशमी जुब्बे और नूरी रूमाल	70
पांच से बचने के लिये पांच से बचो	51	जन्नत के दरवाज़े पर चीख़	70
ह़राम के एक दिरहम का वबाल	52	**सातवां बाब : ज़कात अदा न करने वाले की सज़ा**	72
भयानक आवाज़	52	माल आग की सलाख़ें बन जाएगा	72
छटा बाब : नौहा़ करने वाली की सज़ा	53	अहले महशर कांप उठेंगे	73
कपड़े फाड़ने पर वईद	54	आग के सींग	74
क़ियामत में रोने पीटने की उजरत	54	दय्यूस पर जन्नत ह़राम है	76
नौहा़ करने वाली पर ला'नत	54	आस्मानों में नाम	76
कभी नहीं रोऊंगी	55	6 दिन की ज़िन्दगी 70 साल कर दी गई	77

www.dawateislami.net

ज़कात अदा न करने वाले पर 70 ला'नतें	78	रहमत से महरूम	99
आठवां बाब : क़ातिल और क़त्ए रेह़्मी करने वाले की सज़ा	80	**नवां बाब : वालिदैन के नाफ़रमान की सज़ा**	100
ख़ुदकुशी का अ़ज़ाब	80	वालिदैन से अच्छे सुलूक का ताकीदी हुक्म	100
50 हज़ार साल तक अ़ज़ाब	81	वालिदैन के नाफ़रमान पर ग़ज़बे इलाही	100
चिड़या को अज़िय्यत देने पर अ़ज़ाब	82	आग की शाख़ों से लटके हुवे लोग	101
हुस्ने मुआ़शरत	87	अंगारों की बरसात	101
घर वालों से अच्छा सुलूक	87	नाफ़रमान अवलाद की दोज़ख़ में चीख़ो पुकार	101
ज़कात के बा'द अफ़्ज़ल सदक़ा	87	लम्बी उ़म्र पाने का नुस्ख़ा	105
मुर्ग़ी से भी हुस्ने सुलूक करो	88	पस्लियां टूट फूट जाएंगी	106
अपनी औ़रतों पर ज़ुल्म न करो	88	नाफ़रमान को क़ब्र में गधा बना दिया गया	107
मर्द और औ़रत से क्या सुवाल होगा ?	89	**दसवां बाब : गाने बाजे की मुमानअ़त**	108
घर वालों को ईज़ा पहुंचाने वाले की पकड़	89	बाजों से बचने वालों के लिये ख़ुश ख़बरी	108
बीवी को नमाज़ का हुक्म दो	90	शबे क़द्र में भी नज़रे रहमत से महरूम	108
टेढ़ी पस्ली	90	मौसीक़ी की आवाज़ सुनें तो क्या करें ?	108
शोहर पर बीवी के बा'ज़ हुक़ूक़	91	सीटी और ताली बजाने की मुमानअ़त	109
इ़ल्म ह़ासिल करना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है	91	बाजा बजाने और सुनने वाला मलऊ़न है	109
घर वालों को आग से बचाओ	92	**जन्नत का बयान (नेकियों की जज़ाएं)**	111
हर ह़ाकिम से सुवाल होगा	92	मौत, ख़ूब सूरत मेंढे की शक्ल में	111
घर वालों को इ़ल्मे दीन सिखाना लाज़िम है	93	क़ुरआन और ह़दीस सुनने वालों के लिये ने'मतें	111
सिलए रेह़्मी और क़त्ए रेह़्मी का बयान	94	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "ख़ुश आमदीद" फ़रमाएगा	113
सिलए रेह़्मी रिज़्क़ को बढ़ाती है	94	जन्नती अंगुश्तरियां और कंगन	115
बहन से रिश्ता तोड़ने वाले को सज़ा	94	जन्नती ज़ेवर तस्बीह़ बयान करेगा	117
सिलए रेह़्मी करने वाले के लिये आ़लीशान मह़ल्लात	97	जन्नत में ज़बूर शरीफ़ की तिलावत	118
साबिर शोहर और साबिरा बीवी का अज्र	98	जन्नत में साह़िबे क़ुरआन की तिलावत	119

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सूरए अन्आ़म सुनाएगा	120	ऊंट की मिस्ल सब्ज़ परन्दे	130
जन्नत में दीदारे इलाही की ने'मते कुब्रा	120	सुर्ख़ याकू़त के घोड़े और सफ़ेद ऊंट	132
बाज़ारे मा'रिफ़त की सैर और दोस्तों की पहचान	122	दीदारे इलाही, मक़ाम व मर्तबे के	
अन्वारे इलाही से चमकते दमकते चेहरे	123	ए'तिबार से होगा	134
तूबा दरख़्त और इस में मौजूद ने'मतें	124	सेब से हूर निकल आएगी	135
जन्नत के आ़लीशान महल्लात	126	दीदारे इलाही के लिये जुलूस	136
जन्नत में वली की हूर से गुफ़्तगू	126	फ़िरिश्ते मेहमान नवाज़ी करेंगे	139
रोज़ाना पांच हदिय्ये मिलेंगे	128	ने'मतों से महरूमी	140
क्या जन्नत में दिन और रात होंगे ?	129	याददाश्त सफ़्हा बराए मुतालआ़	142

(...अच्छी आ़दतों की नसीह़त...)

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ 43 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**इमामे आ'ज़म** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم **की वसिय्यतें**" सफ़्ह़ा 27 पर ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने अपने एक शागिर्द को यूं नसीह़त फ़रमाई : "तुम हर शख़्स को उस के मर्तबे के लिह़ाज़ से इ़ज़्ज़त देना, शुरफ़ा की इ़ज़्ज़त और अहले इ़ल्म की ता'ज़ीम व तौक़ीर करना, बड़ों का अदबो एह़तिराम और छोटों से प्यार व मह़ब्बत करना, आ़म लोगों से तअ़ल्लुक़ क़ाइम करना, फ़ासिक़ो फ़ाजिर को ज़लीलो रुस्वा न करना, अच्छे लोगों की सोह़बत इख़्तियार करना, सुल्त़ान की इहानत करने से बचना, किसी को भी ह़क़ीर न समझना, अपने अख़्लाक़ व आ़दात में कोताही न करना, किसी पर अपना राज़ ज़ाहिर न करना, बिग़ैर आज़्माए किसी की सोह़बत पर भरोसा न करना, किसी ज़लील व घटया शख़्स की ता'रीफ़ न करना।"

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

"गुनाहों का इलाज" के 12 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "12 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ या'नी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (المعجم الکبیر للطبرانی، الحدیث:۵۹۴۲،ج۶، ص۱۸۵)

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ हर बार हम्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिय्या से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़हे पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ﴾5﴿ रिज़ाए इलाही के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुतालआ़ करूंगा। ﴾6﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) इन्दज़्ज़रूरत ख़ास ख़ास मक़ामात पर अन्डर लाइन करूंगा। ﴾7﴿ हत्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और क़िब्ला रू मुतालआ़ करूंगा। ﴾8﴿ जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴾9﴿ जहां जहां "**सरकार**" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। ﴾10﴿ दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। ﴾11﴿ अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र किया करूंगा और ﴾12﴿ किताबत वग़ैरा में शरई ग़लत़ी मिली तो नाशिरीन को तहरीरी त़ौर पर मुत्तलअ़ करूंगा।

(नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बता देना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : *शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल* ***मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार*** *क़ादिरी रज़वी ज़ियाई* دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **"दा'वते इस्लामी"** नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और **इशाअ़ते इल्मे शरीअ़त** को दुन्याभर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब ह़ुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दिद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** भी है जो **दा'वते इस्लामी** के उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَ هُمُ اللّٰهُ السَّلَام पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत ﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब
﴾3﴿ शो'बए इस्लाह़ी कुतुब ﴾4﴿ शो'बए तराजिमे कुतुब
﴾5﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब ﴾6﴿ शो'बए तख़रीज

www.dawateislami.net

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, **ह़ज़रते** अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़सरे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह़ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती **मदनी काम** में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "**दा'वते इस्लामी**" की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में जगह नसीब फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

रमज़ानुल मुबारक, 1425

www.dawateislami.net

पहले इसे पढ़ लीजिये !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन्सान को अशरफ़ुल मख़्लूक़ात बना कर इस कुर्रए अर्ज़ में भेजा और उस की हिदायत के लिये अपने अम्बिया व रुसुल عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मबऊ़स फ़रमाए और इन के ज़रीए इन्सान को अपनी इबादत करने और गुनाहों से बचने का हुक्म दिया, उस पर कुछ फ़राइज़ भी आइद किये और उस के इख़्तियारात की कुछ हुदूद भी मुतअ़य्यन फ़रमाईं। लेकिन इन्सान बड़ा नाशुक्रा है कि वोह ज़िन्दगी की लज़्ज़तों से तो लुत्फ़ अन्दोज़ होता है मगर ज़िन्दगी अ़ता फ़रमाने वाले ख़ालिक़ो मालिक عَزَّوَجَلَّ की इबादत की त़रफ़ कमा हक़्क़ुहू माइल नहीं होता।

आज के पुर फ़ितन मुआ़शरे में जब कि लोगों के दिलों से ख़ौफ़े ख़ुदा ख़त्म होता जा रहा है और वोह गुनाहों पर दिलैर होते जा रहे हैं, ज़रूरत इस अम्र की है कि अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश की जाए। ज़ेरे नज़र किताब **"नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं"** मुह़द्दिसे जलील फ़क़ीह अबुल्लैस समर क़न्दी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा **375** हि.) की मुख़्तसर मगर जामेअ़ तस्नीफ़ قُرَّةُ الْعُيُوْن وَمُفْرِحُ الْقَلْبِ الْمَحْزُوْن (مطبوعہ:دار احیاء التراث العربی، ۱۴۱۶ھ/۱۹۹۵ء الطبعة الاولی) का तर्जमा है। इस किताब में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने जन्नत की ने'मतों का तज़किरा किया है और बा'ज़ गुनाहों के बारे में क़ुरआनो ह़दीस में वारिद सज़ाओं का ज़िक्र किया हैं। मसलन बे नमाज़ी, ज़ानी, शराबी, सूद ख़ोर, कम तोलने वाले और वालिदैन के नाफ़रमान वग़ैरा की सज़ाएं। येह किताब गुनाहों के इलाज का बेहतरीन नुस्ख़ा है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की

www.dawateislami.net

रह़मत से क़वी उम्मीद है कि इस किताब को पढ़ने वाले के दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा ज़रूर पैदा होगा जिस के नतीजे में उसे गुनाहों से नफ़रत और नेकियों की रग़बत नसीब होगी और उसे अपनी जबीने नियाज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाहे बे नियाज़ में झुकाने की तौफ़ीक़े रफ़ीक़ मिल जाएगी। लिहाज़ा "**अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश**" का मुक़द्दस जज़्बा उजागर करने के लिये ख़ुद भी इस किताब का मुत़ालआ़ कीजिये और ह़स्बे इस्तित़ाअ़त **मक्तबतुल मदीना** से हदिय्यतन ह़ासिल कर के दूसरों को बत़ौरे तोह़्फ़ा पेश कीजिये।

इस तर्जमे में जो भी ख़ूबियां हैं वोह यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के **प्यारे ह़बीब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़त़ाओं, औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की इनायतों और शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की पुर ख़ुलूस दुआ़ओं का नतीजा है और जो ख़ामियां है इन में हमारी कोताह फ़ह्मी का दख़्ल है।

तर्जमा करते हुवे दर्जे ज़ैल उमूर का ख़ास त़ौर पर ख़याल रखा गया है :

۞....सलीस और बा मुह़ावरा तर्जमा किया गया है ताकि कम पढ़े लिखे इस्लामी भाई भी समझ सकें।

۞....तमाम आयाते मुबारका कुरआन पब्लीशिंग सॉफ़्टवेर से पेस्ट की गई हैं।

۞....आयाते मुबारका का तर्जमा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत अश्शाह इमाम **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के तर्जमए कुरआन "**कन्ज़ुल ईमान**" से लिया गया है।

www.dawateislami.net

۞....आयाते मुबारका के ह़वाले का एहतिमाम किया गया है।

۞....बा'ज़ मक़ामात पर मुफ़ीद व ज़रूरी ह़वाशी का इल्तिज़ाम किया गया है।

۞...मुश्किल अल्फ़ाज़ पर ए'राब लगाने की सई की गई है।

۞....मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी हिलालैन (....) में लिखने का एहतिमाम किया गया है।

۞....अ़लामाते तरक़ीम (रुमूज़े अवक़ाफ़) का भी ख़याल रखा गया है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ है कि हमें "**अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश**" करने के लिये **मदनी इन्आ़मात** पर अ़मल और **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाएं और दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल **मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

शो'बए तराजिमे कुतुब (मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

۞۞۞۞۞

(....ता'रीफ़ और सआ़दत....)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बैज़ावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی (मुतवफ़्फ़ा **685** हि.) इरशाद फ़रमाते हैं कि "जो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी करता है दुन्या में उस की ता'रीफ़ें होती हैं और आख़िरत में सआ़दत मन्दी से सरफ़राज़ होगा।"

(تفسیر البیضاوی، پ۲۲، الاحزاب، تحت الآیۃ: ۷۱، ج۴، ص ۳۸۸)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

तआरुफ़े मुसन्निफ़

विलादते बा सआदत :

हज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल्लैस समरक़न्दी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی उज़्बेकिस्तान के शहर **समरक़न्द** में पैदा हुवे जिसे अ़रबी में समरान कहा जाता है। येह शहर "**मावराउन्नहर**" के नाम से मा'रूफ़ है। इस की मसाजिद और मदारिस आज भी इस की रोशन तारीख़ और शोहरत पर दलालत करते हैं।

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का नाम नस्र बिन मुह़म्मद बिन अह़मद बिन इब्राहीम है। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मुफ़स्सिर, मुहद्दिस, फ़क़ीह, ह़ाफ़िज़, मश्हूर आ़बिदो ज़ाहिद, सूफ़ी और अइम्मए अह़नाफ़ में से हैं, फ़क़ीह और इमामुल हुदा के लक़ब से मुलक़्क़ब हैं, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने अस्ल नाम के बजाए **फ़क़ीह अबुल्लैस समरक़न्दी** के नाम से मश्हूर हैं।

असातिज़ए किराम :

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने कई असातिज़ा से इ़ल्मी फ़ैज़ ह़ासिल किया, चन्द के नाम दर्जे ज़ैल हैं :

(1)....आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के वालिदे गिरामी मुह़म्मद बिन इब्राहीम अल तूज़ी

(2)....फ़क़ीह अबू जा'फ़र हिन्दवानी

(3)....मुफ़स्सिर मुह़म्मद बिन फ़ज़्ल बल्ख़ी

(4)....ख़लील बिन अह़मद क़ाज़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن

www.dawateislami.net

तलामिज़ा :

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से कई तिश्नगाने इल्म ने इल्मी फ़ुयूज़ो बरकात हासिल किये जिन में से चन्द के नाम येह हैं :

(1)....लुक़मान बिन हकीम फ़रग़ानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه (येह आप की किताबों के रावी हैं)

(2)....अबू सहल अहमद बिन मुहम्मद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه

(3)....मुहम्मद बिन अ़ब्दुर्रहमान ज़बीरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه इन के इलावा भी आप के कई शागिर्द हैं।

तसानीफ़ :

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की चन्द तसानीफ़ के नाम दर्जे ज़ैल हैं :

(۱)بُسْتَانُ الْعَارِفِيْن(۲)تَفْسِيْرُالْقُرْاٰن (चार जिल्दें)(۳) تَنْبِيْهُ الْغَافِلِيْن (۴)حَصْرُالْمَسَائِل(فِي الْفُرُوْع)(۵)خِزَانَةُ الْفِقْه(۶)دَقَائِقُ الْاَخْبَارفِيْ ذِكْرِ الْجَنَّةِ وَالنَّار(۷)شَرْحُ الْجَامِعِ الصَّغِيْرِلِلشَّيْبَانِيْ(فِي الْفُرُوْع)(۸)عُيُوْنُ الْمَسَائِل (۹)اَلْفَتَاوٰى(۱۰)مَبْسُوْط(فِي الْفُرُوْع)(۱۱)مُخْتَلَفِ الرِّوَايَة(فِيْ مَسَائِلِ الْخِلَاف) (۱۲)مُقَدَّمَةٌ فِي الْفِقْه(۱۳)نَوَادِرُالْفِقْه(۱۴)اَلنَّوَازِل(فِي الْفُرُوْع) (۱۵)مُقَدَّمَةُ الصَّلٰوةِ الْمَشْهُوْرَة(۱۶)تَأْسِيْسُ النَّظَائِرِالْفِقْهِيَّة(۱۷)قُرَّةُ الْعُيُوْن وَمُفَرِّحُ الْقَلْبِ الْمَحْزُوْن(۱۸)عُمْدَةُالْعَقَائِد(۱۹)فَضَائِل رَمَضَان (۲۰)شِرْعَةُ الْإِسْلَام(۲۱) تَفْسِيْرُجُزْءِ"عَمَّ يَتَسَآءَلُوْن" (۲۲)رِسَالَةٌ فِيْ اُصُوْلِ الدِّيْن-

विसाले पुर मलाल :

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की तारीख़े सिने विसाल में इख़्तिलाफ़ है। साहिबे जवाहिरुल मुज़ीह और साहिबे ताजुत्तराजिम ने

www.dawateislami.net

373 हिजरी ज़िक्र किया है और अ़ल्लामा दावूदी ने त़बक़ातुल मुफ़स्सिरीन में ज़िक्र किया कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का विसाल **383** हिजरी में हुवा।

जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़हबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने सिय्यरे आ'लामुन्नबला में इस बात को तरजीह़ दी है कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का विसाल **375** हिजरी में हुवा।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।*

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

सुन्नत की बहारें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुशनूदी के ह़ुसूल और बा किरदार मुसलमान बनने के लिये **"दा'वते इस्लामी"** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना से **"मदनी इन्आ़मात"** नामी रिसाला ह़ासिल कर के इस के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश कीजिये। और अपने अपने शहरों में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पाबन्दिये वक़्त के साथ शिर्कत फ़रमा कर ख़ूब ख़ूब **"सुन्नतों की बहारें"** लूटिये। **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तर्बिय्यत के लिये बे शुमार **मदनी क़ाफ़िले** शहर ब शहर, गाऊं ब गाऊं सफ़र करते रहते हैं, आप भी सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार फ़रमा कर अपनी आख़िरत के लिये नेकियों का ज़ख़ीरा इकट्ठा करें। اِنْ شَآءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ आप अपनी ज़िन्दगी में ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर **"मदनी इन्क़िलाब"** बरपा होता देखेंगे।

अल्लाह *करम ऐसा करे तुझ पे जहां में ऐ* ***दा'वते इस्लामी*** *तेरी धूम मची हो !*

www.dawateislami.net

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

पहला बाब : बे नमाज़ी की सज़ा

﴿1﴾ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّ الصَّلٰوةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ كِتٰبًا مَّوْقُوْتًا ﴿۱۰۳﴾ (پ۵،النساء:۱۰۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक नमाज़ मुसलमानों पर वक़्त बांधा हुवा फ़र्ज़ है।*

﴿2﴾

وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ﴿۵۹﴾ (پ۱۶،مریم:۵۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अपनी ख़्वाहिशों के पीछे हुवे तो अ़नक़रीब वोह दोज़ख़ में ग़य्य का जंगल पाएंगे।*

﴿3﴾

فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ﴿۴﴾ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ﴿۵﴾ (پ۳۰الماعون:۴،۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो उन नमाज़ियों की ख़राबी है जो अपनी नमाज़ से भूले बैठे हैं।*

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا इरशाद फ़रमाते हैं : "जहन्नम में "**वैल**" नामी एक ख़ौफ़नाक वादी है जिस की गर्मी से ख़ुद जहन्नम भी पनाह मांगता है और येह उस शख़्स का ठिकाना है जो नमाज़ को वक़्त गुज़ार कर पढ़ता है।"

www.dawateislami.net

मुसलमान और काफ़िर में फ़र्क़ :

(1)....हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "मुसलमान और काफ़िर के दरमियान नमाज़ को छोड़ने का फ़र्क़ है।"

पस जिस मुसलमान ने नमाज़ का इन्कार किया वोह काफ़िर हो गया।

नमाज़ तेरी मीज़ान है :

(2)....नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : "नमाज़ तुम्हारी मीज़ान है और इसी पर तुम्हारे वज़्न की इन्तिहा है। अगर वज़्न में पूरे उतरे तो नजात पाओगे और अगर कमी की तो अ़ज़ाब दिये जाओगे।"

जहन्नम और निफ़ाक़ से आज़ादी :

(3)....हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने चालीस दिन तक सुब्ह़ की नमाज़ इस त़रह़ पढ़ी कि उस की एक रक्अ़त भी फ़ौत न हुई तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जहन्नम और निफ़ाक़ से आज़ादी लिख देता है।"

जन्नतुल फ़िरदौस में महल :

(4)....शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो सुब्ह़ की नमाज़ जमाअ़त से अदा करे फिर वहीं बैठा रहे और तुलूए आफ़्ताब तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र में मश्ग़ूल रहे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये सब से आ'ला जन्नत, **जन्नतुल फ़िरदौस** में महल बनाएगा।"

बा'ज़ रिवायात में येह भी है : "**70** महल्लात बनाएगा हर महल में सोने और चांदी के **70** दरवाज़े होंगे।"

www.dawateislami.net

नमाज़ गुनाहों को धो डालती है :

(5)....हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**नमाज़ की मिसाल** उस नहर की त़रह़ है जो तुम में से किसी के दरवाज़े पर जारी हो और वोह दिन में पांच मरतबा उस में ग़ुस्ल करे यहां तक कि उस के बदन पर कुछ भी मैल बाक़ी न रहे, इसी त़रह़ नमाज़ भी गुनाहों को धो डालती है।"

जहन्नम पर ह़राम कर दिया जाएगा :

(6)....ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने पांचों नमाज़ों पर उन के वुज़ू, अवक़ात, रुकूअ़ और सुजूद के साथ इस बात का ए'तिराफ़ करते हुवे हमेशगी इख़्तियार की, कि येह **अल्लाह** तआ़ला का ह़क़ है तो **अल्लाह** तआ़ला उस के जिस्म को जहन्नम पर ह़राम फ़रमा देगा।"

नजात, नूर और दलील :

(7)....हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है : "जिस ने नमाज़ों की हिफ़ाज़त की तो वोह बरोज़े क़ियामत उस के लिये नजात, नूर और दलील होगी और जिस ने नमाज़ों की ह़िफ़ाज़त न की तो क़ियामत के दिन वोह उस के लिये न नजात होगी, न नूर, न दलील और न ही अमान।"

फ़िरिश्तों की दुआ़ :

(8)....हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम में से जो शख़्स नमाज़ में सजदा करे तो वोह अपने चेहरे से मिट्टी साफ़ न

www.dawateislami.net

करे क्यूंकि फ़िरिश्ते उस के लिये उस वक़्त तक दुआए मग़फ़िरत करते रहते हैं जब तक सजदे का असर उस के चेहरे और पेशानी पर रहता है।"

नमाज़ की ताकीद :

(9)....हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रूहे अक़्दस सीनए मुबारका में ही थी कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमा रहे थे : "मैं तुम को नमाज़ और तुम्हारे ग़ुलामों और लौंडियों के बारे में वसिय्यत करता हूं। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बराबर ताकीद फ़रमाते रहे यहां तक कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सिलसिलए कलाम मुन्क़त़अ़ हो गया।"

जहन्नम के दरवाज़े पर नाम :

(10)....सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जो शख़्स जान बुझ कर एक फ़र्ज़ नमाज़ छोड़ देता है तो उस का नाम जहन्नम के दरवाज़े पर लिख दिया जाता है कि फ़ुलां का जहन्नम में दाख़िला लाज़िम हो गया।"

बद बख़्त व महरूम कौन ?

(11)....हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "दुआ यूं मांगा करो : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम में से किसी को बद बख़्त और महरूम न रहने दे।"

www.dawateislami.net

फिर इरशाद फ़रमाया : "जानते हो बद बख़्त व महरूम कौन है?" सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : "नहीं, या रसूलल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाया : नमाज़ को तर्क करने वाला **बद बख़्त व महरूम** है इस लिये कि इस्लाम में उस का कोई हिस्सा नहीं।"

सिह्हत व तन्दुरुस्ती में नमाज़ छोड़ने का वबाल :

(12)....हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अक़्दस है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सिह्हत की हालत में नमाज़ छोड़ने वाले की तौहीद व अमानत, सदक़ा व रोज़ा और शहादत क़बूल नहीं फ़रमाता और तह़क़ीक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, उस के फ़िरिश्ते और अम्बिया व मुर्सलीन عَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام उस शख़्स से बेज़ार हैं।"

(13)....हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सिह्हत की हालत में नमाज़ छोड़ने वाले की त़रफ़ न नज़रे रह़मत फ़रमाएगा और न उस को पाक करेगा और उस के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है मगर येह कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर तौबा कर ले तो **अल्लाह** तबारक व तआ़ला उस की तौबा क़बूल फ़रमाएगा।"

बिग़ैर गोश्त के चेहरे :

(14)....नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी उम्मत में से **10** त़रह़ के अफ़राद पर क़ियामत के दिन

www.dawateislami.net

इज़्हारे नाराज़ी फ़रमाएगा और उन को जहन्नम में ले जाने का हुक्म देगा और उन के चेहरे बिग़ैर गोश्त के हड्डियां होंगे।" अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वोह कौन लोग होंगे ?" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "(1) बुड्ढा ज़ानी (2) गुमराह पेशवा (3) शराब का आ़दी (4) वालिदैन का नाफ़रमान (5) चुग़ुल ख़ोर (6) झूटा गवाह (7) ज़कात अदा न करने वाला (8) सूद ख़ोर (9) ज़ालिम और (10) नमाज़ छोड़ने वाला। हां ! नमाज़ छोड़ने वाले को दुगना अ़ज़ाब दिया जाएगा। वोह क़ियामत के दिन इस त़रह़ उठाया जाएगा कि उस के दोनों हाथ गर्दन से बन्धे होंगे और मलाइका उस के चेहरे, पुश्त और पहलू पर मारते होंगे। **जन्नत** उस से कहेगी : "न तू मुझ से है और न मैं तेरे लिये हूं।" **दोज़ख़** उस से कहेगा : "तू मुझ से और मेरे अन्दर रहने वालों में से है और मैं तुझ से हूं। आ ! मेरे क़रीब आ ! ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझ में तुझे सख़्त अ़ज़ाब होगा।" फिर उस के लिये दोज़ख़ का दरवाज़ा खोला जाएगा तो वोह तेज़ रफ़्तार तीर की मानिन्द उस के दरवाज़े में दाख़िल हो जाएगा, पस उस के सर पर हथोड़े बरसाए जाएंगे और वोह दोज़ख़ के सब से निचले दरजे में फ़िरऔ़न, हामान और क़ारून के साथ होगा।"

आस्मान से ला'नत बरस्ती है :

(15)....सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "**तारिके नमाज़** को ज़कात न दो, न उस को अपने पास ठहराओ और न ही उस को अपने पास बिठाओ क्यूंकि उस पर आस्मान से ला'नत बरसती है।"

www.dawateislami.net

अ़ज़ाब से छुटकारे के अस्बाब :

(**16**)....शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : "मैं ने **वालिदैन से हुस्ने सुलूक** करने वाले अपने एक उम्मती को देखा जिस की मौत का वक़्त क़रीब था तो वालिदैन से हुस्ने सुलूक ने उस से मौत की सख़्तियों को दूर कर दिया।

एक और उम्मती को देखा जिस पर अ़ज़ाबे क़ब्र मुसल्लत किया गया था। उस के पास वुज़ू की नेकी आई और उसे बचा लिया। एक दूसरे शख़्स को देखा कि दोज़ख़ के फ़िरिश्ते उस को दहशत ज़दा कर रहे हैं तो दुन्या में उस के ज़िक्रे इलाही और तस्बीह़ पर मामूर फ़िरिश्ते आ गए और उसे अ़ज़ाब के फ़िरिश्तों से बचा लिया। एक उम्मती को देखा कि अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते उसे घेरे हुवे थे उस की नमाज़ ने उसे बचा लिया। एक उम्मती को देखा जिस की ज़बान प्यास की शिद्दत से बाहर लटक रही थी जब भी वोह (पानी के) हौ़ज़ के क़रीब आता तो हुजूम के सबब हौ़ज़ तक न पहुंच पाता, उस के रोज़ों की नेकी आई और उसे सैराब कर दिया।

अपनी उम्मत में से एक शख़्स खड़ा देखा जब कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ह़ल्क़ा दर ह़ल्क़ा तशरीफ़ फ़रमा थे, जब भी वोह शख़्स किसी ह़ल्क़े के क़रीब आता तो फ़िरिश्ते उस को दूर कर देते तो नमाज़ के लिये ग़ुस्ले जनाबत की नेकी ने आ कर उसे मेरी एक जानिब बिठा दिया। एक उम्मती को देखा जिस के सामने, दाएं बाएं, ऊपर नीचे हर त़रफ़ अन्धेरा और तारीकी थी उस की **ह़ज व उ़मरह** की नेकी आई और उसे अन्धेरे से निकाल कर रोशनी में दाख़िल कर दिया।

www.dawateislami.net

एक उम्मती को देखा कि वोह ईमान वालों से कलाम करना चाहता है लेकिन ईमान वाले उस से कलाम नहीं करते, उस की **सिलए रेह्मी** की नेकी आई और कहा : "ऐ गुरौहे मोअमिनीन ! इस से कलाम करो इस लिये कि येह शख़्स सिलए रेह्मी किया करता था।" तो वोह उस से कलाम करने लगे और सलाम व मुसाफ़ह़ा भी करने लगे।

एक और उम्मती को देखा कि वोह अपने हाथ के ज़रीए अपने चेहरे से दोज़ख़ की आग, उस की गर्मी और शो'ले हटा रहा था तो उस का **सदक़ा** करने का सवाब आया और उस के चेहरे पर पर्दा, सर पर साया और आग से ह़िजाब (या'नी रुकावट) बन गया।

अज़दहों और बिच्छूओं की वादी :

(17)....सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जहन्नम में एक वादी है उस का नाम "**लमलम**" है। उस में अज़दहे हैं, हर अज़दहे की मोटाई ऊंट की गर्दन की मानिन्द है, उस की लम्बाई एक महीने की मसाफ़त जितनी है, जब वोह सांप बे नमाज़ी को डसेगा तो उस का ज़ह्र उस के जिस्म में 70 साल तक जोश मारता रहेगा फिर उस (बे नमाज़ी) का गोश्त गल जाएगा और हड्डियां टूट जाएंगी और वोह तमाम के तमाम अज़दहे उस वादी में उस को अ़ज़ाब देते रहेंगे और जहन्नम में एक वादी का नाम "**जुब्बुल ह़ुज़्न**" है, जिस में बिच्छू हैं, हर बिच्छू सियाह ख़च्चर की मानिन्द है। उस के 70 डंक हैं और हर डंक में ज़ह्र की थैली है। जब वोह बे नमाज़ी को डंक मारेगा तो उस का ज़ह्र सारे जिस्म में सरायत

www.dawateislami.net

कर जाएगा और वोह उस के ज़हर की हरारत हज़ार साल तक महसूस करेगा फिर उस का गोश्त हड्डियों से झड़ जाएगा। उस की शर्मगाह से पीप बहेगी और तमाम जहन्नमी उस पर ला'नत भेजते होंगे।"

﴿हम जहन्नम से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगते हैं ! ! ! ﴾

ऐ ज़ईफ़ व नातुवां बन्दे ! जब तक तौबा का दरवाज़ा खुला है तुझ पर तौबा लाज़िम है। बेशक रिज़ाए इलाही वाज़ेह और रोशन है।

❁❁❁❁❁❁

दूसरा बाब : शराबी की सज़ा

शराब बेचने वाले पर ला'नत :

(**18**)....ताजदारे रिसालत, पैकरे अ़ज़मतो शराफ़्त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "**शराब**, इस के बेचने वाले, इस के पीने वाले और ख़रीदने वाले पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत है।"

क़ियामत में शराबी का हुल्या :

(**19**)....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "**शराबी** क़ियामत के दिन इस हाल में आएगा कि उस का चेहरा सियाह, आंखे नीली और ज़बान सीने पर लटकती होगी और उस का लुआ़ब (या'नी थूक) ख़ून की तरह बहता होगा। क़ियामत के दिन लोग उस को पहचानते होंगे। पस तुम उस को सलाम न करो, अगर बीमार हो जाए तो उस की इ़यादत न करो और जब मर जाए तो उस की नमाज़े जनाज़ा न पढ़ो (जब कि वोह शराब को हलाल जान कर पीता हो) क्यूंकि वोह **अल्लाह** तआ़ला के हां बुत परस्त की तरह है।"

www.dawateislami.net

हर शराब ह़राम है :

(20)....हुस्ने अख़्लाक़ कै पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "हर नशा लाने वाली चीज़ शराब है और और हर **शराब ह़राम** है तो जो दुन्या में शराब पियेगा, **अल्लाह** तबारक व तआ़ला उस पर आख़िरत में जन्नत की शराबे त़हूर ह़राम फ़रमा देगा।"

जन्नत की ख़ुश्बू से महरूम लोग :

(21)....शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तीन अश्ख़ास जन्नत की ख़ुश्बू न सूंघ सकेंगे ह़ालांकि जन्नत की ख़ुश्बू **500** साल की मसाफ़त से सूंघी जाती है, सिवाए येह कि तौबा कर लें। (1) शराब का आ़दी (2) वालिदैन का नाफ़रमान और (3) ज़ानी।"

मुर्दार से ज़ियादा बदबू दार :

(22)....सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "शराबी क़ब्र से मुर्दार से भी ज़ियादा बदबूदार ह़ालत में निकलेगा कि उस की गर्दन में शराब की बोतल लटकी होगी और हाथ में जाम होगा। सांप और बिच्छू उस के सारे जिस्म पर चिमटे होंगे। उस को आग की जूतियां पहनाई जाएंगी जिस से उस का दिमाग़ खोलता होगा। उस की क़ब्र जहन्नम के गढ़ों में से एक गढ़ा होगी जो फ़िरऔ़न व हामान के क़रीब होगी।"

शराबी के साथ तआ़वुन का वबाल :

(23)....उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है कि नबिय्ये करीम,

www.dawateislami.net

रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने **शराबी** को खाने का एक लुक़्मा खिलाया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के जिस्म पर सांप और बिच्छू मुसल्लत़ कर देगा और जिस ने उस की कोई ह़ाजत पूरी की उस ने इस्लाम को ढा देने पर इआ़नत की और जिस ने उस को क़र्ज़ दिया उस ने मुसलमान को क़त्ल करने पर मदद की और जिस ने उस को अपनी मजलिस में बिठाया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को क़ियामत में अन्धा उठाएगा कि उस के पास कोई दलील न होगी। और शराबी से निकाह़ न करो, अगर बीमार हो जाए तो इ़यादत न करो। उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है ! **शराब** वोही पीता है जो तौरात, इन्जील, ज़बूर, कुरआने मजीद और जो कुछ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर नाज़िल किया उस का मुन्किर हो और जिस ने शराब को ह़लाल जाना, मैं उस से बरी और वोह मुझ से बरी है।"

(फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :) बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम बयान कर के इरशाद फ़रमाता है : "जिस ने दुन्या में **शराब** पी वोह क़ियामत के दिन सख़्त प्यास में मुब्तला होगा। उस का दिल जल रहा होगा और ज़बान सीने पर लटकती होगी और जिस ने मेरी रिज़ा की ख़ातिर शराब छोड़ दी, मैं उसे क़ियामत के दिन अपने अ़र्श के नीचे जन्नत की शराबे त़हूर से सैराब करूंगा।"

शराबी का दर्दनाक अन्जाम :

(24)....हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बन्दा जब पहली मरतबा शराब पीता है तो उस का दिल सियाह हो जाता है, जब दूसरी

www.dawateislami.net

मरतबा पीता है तो मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام उस से बेज़ार हो जाते हैं,जब तीसरी मरतबा पीता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस से बेज़ार हो जाते हैं, चौथी मरतबा पीने पर किरामन कातिबीन और पांचवीं मरतबा पीने पर जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام छटी मरतबा पीने पर इस्राफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام और सातवीं मरतबा पीने पर मीकाईल عَلَيْهِ السَّلَام बेज़ार हो जाते हैं और जब आठवीं और नवीं मरतबा पीता है तो सातों आस्मान और अहले आस्मान उस से बेज़ार हो जाते हैं और जब दसवीं मरतबा शराब पीता है तो जन्नत के दरवाज़े उस पर बन्द कर दिये जाते हैं और जब ग्यारहवीं मरतबा शराब पीता है तो जहन्नम के दरवाज़े उस के लिये खोल दिये जाते हैं, बारहवीं मरतबा पीने पर हामिलीने अ़र्श (अ़र्श उठाने वाले फ़िरिश्ते) तेरहवीं मरतबा पीने पर कुरसी, चौदहवीं मरतबा पीने पर अ़र्श उस से बेज़ार हो जाता है । और जब पन्दरहवीं मरतबा शराब पीता है तो **अल्लाह जब्बार व क़हहार** عَزَّوَجَلَّ उस से बेज़ार हो जाता है । पस जिस शख़्स से तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, तमाम मलाइका और ख़ुद रब्बे जब्बार व क़हहार جَلَّ جَلَالُهٗ बेज़ार हो जाए तो वोह जहन्नम में गुनाहगारों के साथ हलाक होगा ।"

(मज़ीद इरशाद फ़रमाया :) बिला शुबा **अल्लाह** तबारक व तआ़ला उसे जहन्नम में आग के पियाले से पिलाएगा जिस से उस की आंखें बह पड़ेंगी और उस पियाले की तपिश से उस का गोश्त हड्डियों से झड़ जाएगा और जब वोह उस पियाले से पियेगा तो उस की आंतें कट कट कर उस की शर्मगाह से निकल जाएंगी । **हलाकत है!** शराबी के लिये कि वोह अ़ज़ाबे जब्बार व क़हहार में गिरिफ़्तार होगा ।"

www.dawateislami.net

जहन्नमियों का ख़ून और पीप पिलाया जाएगा :

(25)....हज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते जैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस शख़्स के पेट में शराब गई तो **अल्लाह** तबारक व तआला उस की कोई नेकी क़बूल नहीं फ़रमाएगा और अगर वोह **शराब चालीस दिन तक** (उस के पेट में) रुकी रही और वोह बिग़ैर तौबा किये चालीस दिन से पहले मर गया तो काफ़िर हो कर मरा (जब कि शराब को हलाल जानता हो) और अगर तौबा कर लेगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की तौबा क़बूल फ़रमाएगा। फिर अगर दोबारा शराब पियेगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ज़रूर उस को "**तीनतुल ख़बाल**" से पिलाएगा।" सहाबए किराम رِضۡوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم "**तीनतुल ख़बाल**" क्या है? इरशाद फ़रमाया : "येह जहन्नमियों के ज़ख़्मों का निचोड़, ख़ून और पीप है।"

क़ब्र में शराबी का चेहरा क़िब्ले से फिर जाता है :

(26)....हज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने इरशाद फ़रमाया : "जब कोई शराबी मर जाए तो उसे दफ़्न करो फिर उस की क़ब्र खोद कर देखो अगर उस का चेहरा क़िब्ले से हटा हुवा न पाओ तो मुझे क़त्ल कर देना, इस लिये कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आलमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "जब कोई चार मरतबा शराब पी ले तो **अल्लाह** तबारक व तआला उस से नाराज़ हो जाता है और उस का नाम जहन्नम के सब से निचले दरजे में लिख देता है और फिर न उस की नमाज़ क़बूल फ़रमाता है न रोज़ा और न ही सदक़ा, मगर येह कि वोह तौबा कर ले वरना उस का ठिकाना जहन्नम है और जहन्नम क्या ही बुरा ठिकाना है।"

www.dawateislami.net

लोहे के गुर्ज़ों से इस्तिक़बाल :

(27)....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क़ियामत के दिन **ज़ानियों और शराबियों** को दोज़ख़ की त़रफ़ घसीटा जाएगा। जब वोह जहन्नम के क़रीब पहुंचेंगे तो उस के दरवाज़े उन के लिये खोल दिये जाएंगे और अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते लोहे के गुर्ज़ों से उन का इस्तिक़्बाल करेंगे, और उन को दुन्या के दिनों की गिनती के बराबर दोज़ख़ में मारते रहेंगे फिर उन्हें उन के ठिकाने पर पहुंचा देंगे और **40** साल तक जहन्नमी के जिस्म के हर उ़ज़्व पर बिच्छू डंक मारते रहेंगे और सांप उस के सर पर डसते रहेंगे फिर भी वोह अपने मुक़र्ररा मक़ाम तक नहीं पहुंचेगा तो आग की लपट उसे आख़िरी किनारे तक पहुंचा देगी और फ़िरिश्ते उसे मारेंगे तो वोह जहन्नम में गिर जाएगा।

﴿4﴾ (इरशादे बारी तआ़ला है :)

كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُوْدُهُمْ بَدَّلْنٰهُمْ جُلُوْدًا غَيْرَهَا لِيَذُوْقُوا الْعَذَابَ ؕ

(پ۵،النساء:۵۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जब कभी उन की खालें पक जाएंगी हम उन के सिवा और खालें उन्हें बदल देंगे कि अ़ज़ाब का मज़ा लें।*

फिर वोह प्यास की शिद्दत से चिल्लाते हुवे कहेंगे : "**हाए प्यास ! हाए प्यास !** हमें पानी का एक ही घूंट पिला दो।" उन पर मुक़र्रर अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते जहन्नम के जोश मारते और खोलते हुवे पानी के पियाले उन के सामने करेंगे। जब शराबी पियाले को मुंह लगाएगा तो उस के चेहरे का गोश्त झड़ जाएगा। फिर जब वोह

www.dawateislami.net

खोलता हुवा पानी उस के पेट में पहुंचेगा तो उस की आंतों को काट देगा और वोह उस के पिछले मक़ाम से बाहर निकल जाएंगी। फिर आंतें अपनी ह़ालत पर लौट आएंगी, फिर दोबारा अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार होगा। तो येह है शराबी की सज़ा !''

शराबी की सज़ाओं का ख़ौफ़नाक मन्ज़र :

(**28**)....सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''क़ियामत के दिन **शराबी** इस ह़ाल में आएगा कि उस की गर्दन में शराब का बरतन लटक रहा होगा और उस के हाथ में लह्वो लअ़ब का आला होगा ह़त्ता कि वोह आग की सूली पर लटका दिया जाएगा तो एक मुनादी निदा करेगा : ''येह फुलां बिन फुलां है।'' उस के मुंह से बदबू ख़ारिज हो रही होगी और लोग उस पर ला'नत करते होंगे। फिर अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते उसे आग की सूली से उतार कर जहन्नम में डाल देंगे जहां एक हज़ार साल तक जलता रहेगा। फिर पुकारेगा : ''हाए प्यास ! हाए प्यास !'' तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बदबू दार पसीना भेजेगा तो वोह पुकारेगा : ''ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ मुझ से इस पसीने को दूर फ़रमा।'' लेकिन अभी वोह पसीना दूर न होगा कि आग आ जाएगी और वोह उसे जला कर राख कर देगी।

फिर **अल्लाह** तबारक व तआ़ला उस को दोबारा आग में से पैदा फ़रमाएगा तो वोह खड़ा हो जाएगा। उस के दोनों हाथ और दोनों पाउं बन्धे हुवे होंगे। उसे ज़न्जीरों के ज़रीए मुंह के बल घसीटा जाएगा, प्यास की वजह से चिल्लाएगा तो उसे खोलता हुवा पानी पिलाया जाएगा, भूक के लिये फ़रयाद करेगा तो कांटेदार दरख़्त से खिलाया जाएगा जो उस के पेट में जोश मारता होगा।

www.dawateislami.net

(दोज़ख़ के निगरान फ़िरिश्ते) ह़ज़रते मालिक عَلَيْهِ السَّلَام के पास आग की जूतियां होंगी वोह शराबी को पहनाएंगे जिस से उस का दिमाग़ खोलने लगेगा यहां तक कि नाक और कान के रास्ते बह जाएगा। उस की दाढ़ें अंगारों की होंगी, उस के मुंह से आग के शो'ले निकलेंगे, उस की आंतें कट कट कर उस की शर्मगाह से गिर पड़ेंगी। फिर उसे चिंगारियों और शो'लों के ऐसे ताबूत में रखा जाएगा जिस का अ़ज़ाब हज़ार साल के त़वील अ़र्से तक होगा और उस ताबूत का दहाना तंग होगा। उस के जिस्म से पीप बहता होगा उस का रंग मुतग़य्यिर हो चुका होगा। वोह फ़रयाद करेगा : "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ आग ने मेरे जिस्म को खा लिया है।"

हलाकत है ! उस शख़्स के लिये कि जब वोह फ़रयाद करेगा तो उस पर रह़्म नहीं किया जाएगा, जब वोह निदा करेगा तो उसे जवाब नहीं दिया जाएगा। इस के बा'द प्यास की फ़रयाद करेगा तो ह़ज़रते मालिक عَلَيْهِ السَّلَام उसे खोलता हुवा पानी पीने को देंगे। शराब ख़ोर जब उसे पकड़ेगा तो उस की उंगलियां कट कर गिर पड़ेंगी और जब उस को देखेगा तो उस की आंखें बह पड़ेंगी और रुख़सार का गोश्त गिर पड़ेगा।

फिर हज़ार साल के बा'द ताबूत से निकाला जाएगा और ऐसे क़ैद ख़ाने में डाला जाएगा जिस में मटके की मानिन्द सांप और बिच्छू होंगे। वोह उसे अपने पाउं तले रौंदेंगे, फिर उस के सर पर आग का पथ्थर रखा जाएगा, उस के बदन के जोड़ों में लोहा चढ़ा दिया जाएगा, उस के हाथों में ज़न्जीरें और गर्दन में त़ौक़ होगा फिर उसे हज़ार साल के बा'द क़ैद ख़ाने से निकाला जाएगा तो अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते उसे पकड़ कर "**वैल**" नामी वादी की त़रफ़ ले चलेंगे। येह जहन्नम की वादियों में से एक वादी है जो दीगर

www.dawateislami.net

वादियों से ज़ियादा गर्म, ज़ियादा गहरी है। इस के सांप, बिच्छू भी ज़ियादा हैं, शराबी हज़ार साल तक उस वादी में जलता रहेगा।

फिर फ़रयाद करते हुवे : "या रसूलल्लाह ! या रसूलल्लाह ! (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم)" पुकारेगा तो मोअमिनीन पर रह़्मो करम फ़रमाने वाले रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस की फ़रयाद सुन कर **अल्लाह** रह़्मान व रह़ीम عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ करेंगे : "ऐ मेरे रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ जहन्नम से मेरे किसी उम्मती की आवाज़ आ रही है।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : "येह तुम्हारी उम्मत में से वोह शख़्स है जो दुन्या में शराब पिया करता था और बिग़ैर तौबा किये मर गया था।" हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अ़र्ज़ करेंगे : "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ येह मेरी शफ़ाअ़त के क़ाबिल तो नहीं मगर तू इसे मुआ़फ़ फ़रमा दे।"

ऐ बन्दे ! गुनाहों से तौबा कर ले और बारगाहे इलाही से ख़ताओं को बख़्शवा ले।

(**29**)....हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "शराबी अपनी क़ब्र से इस ह़ाल में उठेगा कि उस की पिन्डलियां सूजी हुई होंगी और उस की ज़बान उस के सीने पर लटकी हुई होगी और उस के पेट में आग उस की आंतों को खा रही होगी तो वोह बुलन्द आवाज़ से चीख़े चिल्लाएगा जिस से सारी मख़्लूक़ घबरा जाएगी जब कि बिच्छू उस के गोश्त पोस्त में डसते होंगे। उसे आग के जूते पहना दिये जाएंगे जिस से उस का दिमाग़ खोलता होगा।

शराबी जहन्नम में फ़िरऔ़न व हामान के क़रीब होगा तो जिस ने शराबी को एक लुक़्मा खिलाया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के जिस्म पर सांप और बिच्छू मुसल्लत़ कर देगा और जिस ने उस की

www.dawateislami.net

कोई ह़ाजत पूरी की तो उस ने इस्लाम के ढाने पर मदद की और जिस ने उस को बत़ौरे क़र्ज़ कोई चीज़ दी उस ने क़त्ले मुस्लिम पर इआ़नत की और जिस ने उस की मजलिस इख़्तियार की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को अन्धा उठाएगा कि उस के पास कोई हुज्जत न होगी और शराबी से निकाह़ न करो। बीमार हो जाए तो उस की इ़यादत न करो। उस ज़ात की क़सम जिस ने मुझे ह़क़ के साथ मबऊ़स फ़रमाया ! शराबी पर तौरात, ज़बूर, इन्जील और क़ुरआने मजीद में ला'नत की गई है। जिस ने (ह़लाल समझ कर) शराब पी, उस ने अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर नाज़िल कर्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के तमाम (अह़काम) को झुटला दिया और शराब को काफ़िर ही ह़लाल ठहराता है और मैं (या'नी इमामुल अम्बिया صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) उस से बेज़ार हूं। फिर येह कि शराबी प्यासा मरेगा तो वोह हज़ार साल तक फ़रयाद करता रहेगा : **हाए प्यास ! हाए प्यास !** उस ज़ात की क़सम जिस ने मुझे ह़क़ के साथ मबऊ़स फ़रमाया ! शराबी क़ियामत में जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर होगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़िरिश्तों से फ़रमाएगा : "ऐ फ़िरिश्तो ! इसे पकड़ लो।" तो उस के सामने **70** हज़ार फ़िरिश्ते ज़ाहिर होंगे और उसे मुंह के बल घसीटेंगे।"

(फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :) "मैं तुम्हें मज़ीद बताता हूं कि जिस शख़्स के दिल में क़ुरआने मजीद की **100** आयात हों और वोह शराब पी ले तो क़ियामत के दिन क़ुरआने मजीद का हर ह़र्फ़ आ कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में उस शराबी से झगड़ा करेगा और जिस से क़ुरआने मजीद ने झगड़ा किया यक़ीनन वोह हलाक हो गया।"

www.dawateislami.net

शराबी को कलिमे की तल्क़ीन, मगर...!

(30)....हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ बयान फ़रमाते हैं : "मैं एक रात मस्जिद की त़रफ़ जा रहा था कि रास्ते में चन्द औ़रतों को रोते हुवे देखा। मैं ने उन से रोने का सबब दरयाफ़्त किया तो उन्हों ने जवाब दिया : "हमारा एक मरीज़ है जिसे हम बार बार कलिमा पढ़ने की तल्क़ीन करती हैं लेकिन वोह कलिमा नहीं पढ़ता। आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ तशरीफ़ ले चलें और उस को कलिमे की तल्क़ीन कर के अज्रो सवाब कमाएं।" मैं ने चल कर उस मरीज़ को कलिमए त़य्यिबा لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ की तल्क़ीन की लेकिन उस ने कलिमा न पढ़ा। मैं ने कलिमे को दोबारा दोहराया तो उस ने आंखें खोलीं और कहा : "मैं لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ का इन्कार करता हूं और **दीने इस्लाम से बेज़ार हूं।**" और इसी हालत में उस की रूह़ निकल गई। (وَالْعِیَاذُ بِاللّٰہِ تَعَالٰی)

चुनान्चे, मैं वहां से निकला और औ़रतों को उस के बारे में बताने के बा'द लोगों से कहा : **ऐ लोगो!** न इस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ना और न ही इसे मुसलमानों के क़ब्रिस्तान में दफ़्न करना क्यूंकि येह काफ़िर हो कर मरा है और इस के घर वालों से पूछो कि येह कौन सा गुनाह किया करता था?" पूछने पर उस के घर वालों ने बताया कि : "हमें किसी और गुनाह के बारे में तो इ़ल्म नहीं मगर येह कि येह **शराब** पीता था। इस लिये मरते वक़्त शराब के सबब इस का **ईमान सल्ब** हो गया।"(1)

(1)....**दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 809 पर सदरुश्शरीआ़ बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं : "मरते वक़्त مَعَاذَاللّٰہ उस की ज़बान से कलिमए कुफ़्र निकला तो कुफ़्र का हुक्म न देंगे कि मुमकिन है मौत की सख़्ती में अ़क़्ल जाती रही हो और बे होशी में येह कलिमा निकल गया। (الدرالمختار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، ج۳، ص۹۶) (**बाक़ी ह़ाशिया अगले सफ़ह़ा पर**)

www.dawateislami.net

ऐ ज़ईफ़ व नातुवां बन्दे ! अपने मेहरबान रब عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी से बचने के लिये तौबा कर ले। अफ़्सोस है उस शख़्स पर जिस ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी की और उस का ठिकाना दोज़ख़ हुवा। तो जब तक जिस्म में रूह मौजूद है तौबा में जल्दी कर और बेशक मौत का इल्म तो वाज़ेह व रोशन है और तौबा करने वालों के लिये तौबा का दरवाज़ा खुला हुवा है।

जब बन्दा तौबा कर लेता है :

(31)....सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "जब बन्दा तौबा करता है तो फ़िरिश्ते आस्मान की तरफ़ बुलन्द हो कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ करते हैं : "ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ तेरा फ़ुलां बन्दा ग़फ़लत व लह्वो लअ़ब की नींद से बेदार हो चुका है और तेरी बारगाह में आ़जिज़ी के साथ खड़ा है।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "ऐ मेरे फ़िरिश्तो ! आस्मानों और ज़मीनों को पाक नुफ़ूस की ह़ाज़िरी के लिये सजा दो और तौबा का दरवाज़ा खोल दो ताकि उस की तौबा क़बूल हो जाए (और येह सब) इस लिये की तौबा करने वाले की रूह मेरे नज़दीक आस्मानों और ज़मीनों से ज़ियादा मुअ़ज़्ज़ज़ है।"

पस जो शख़्स तौबा को लाज़िम कर ले और बारगाहे इलाही में ह़ाज़िर हो जाए उस के गुनाहों को नेकियों में तब्दील कर दिया जाता है। وَاللّٰہ تَعَالٰی اَعلم

(**पिछले सफ़ह़ा का बक़ाया ह़ाशिया**).....बहुत मुमकिन है कि उस की बात पूरी समझ में न आई कि ऐसी शिद्दत की ह़ालत में आदमी पूरी बात साफ़ तौ़र पर अदा कर ले दुश्वार होता है।

बुरे ख़ातिमे के मज़ीद अस्बाब जानने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का रिसाला "**बुरे ख़ातिमे के अस्बाब**" का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

तीसरा बाब : जानी की सज़ा

ज़िना के छे नुक़्सानात :

(32)....नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**ज़िना** से बचो क्यूंकि इस में छे नुक़्सानात हैं, **तीन** दुन्या में और **तीन** आख़िरत में।

दुन्या के तीन नुक़्सानात : (1) ज़िना, ज़ानी के चेहरे की ख़ूब सूरती ख़त्म कर देता है (2) उसे मोहताज व फ़क़ीर बना देता और (3) उस की उ़म्र घटा देता है।

आख़िरत में तीन नुक़्सानात : (1) ज़िना अल्लाह तआ़ला की नाराज़ी (2) सख़्त हिसाब और (3) जहन्नम में मुद्दतों रहने का सबब है।"

﴾5﴿ **अल्लाह** तबारक व तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ اَنْفُسُهُمْ اَنْ سَخِطَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿۸۰﴾ (پ۶، المائدہ:۸۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *क्या ही बुरी चीज़ अपने लिये ख़ुद आगे भेजी येह कि **अल्लाह** का उन पर ग़ज़ब हुवा और वोह अ़ज़ाब में हमेशा रहेंगे।*

आग की ज़न्जीरें और सलाखें :

(33)....हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "ज़ानी क़ियामत के दिन इस हाल में आएंगे कि उन के चेहरे आग की त़रह भड़क रहे होंगे, वोह अपनी बदबू दार शर्मगाहों की वजह से मख़्लूक़ में पहचाने जाएंगे, उन की शर्मगाहें बदबू दार होंगी, उन को मुंह के बल जहन्नम की त़रफ़ घसीटा जाएगा, जब वोह जहन्नम में

www.dawateislami.net

दाख़िल होंगे तो ह़ज़रते मालिक عَلَيْهِ السَّلَام उन को आग की ऐसी क़मीस पहनाएंगे कि अगर उस को ऊंचे और मज़बूत पहाड़ की चोटी पर लम्हा भर के लिये रख दिया जाए तो वोह जल कर राख हो जाए। फिर ह़ज़रते मालिक عَلَيْهِ السَّلَام फ़रमाएंगे : "ऐ अ़ज़ाब के फ़िरिश्तो ! इन **ज़ानियों** की आंखों को आग की सलाइयों से दाग़ दो क्यूंकि येह ह़राम देखते थे। इन के हाथों को आग की ज़न्जीरों से जकड़ दो क्यूंकि येह ह़राम की त़रफ़ हाथ बढ़ाते थे, इन के पाउं को आग की बेड़ियों से बांध दो क्यूंकि येह ह़राम की त़रफ़ चलते थे।"

अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते कहेंगे : हां ! हां ! ज़रूर।" तो वोह उन के हाथों और पाउं को ज़न्जीरों में जकड़ देंगे और उन की आंखें आग की सलाइयों से दाग़ देंगे तो वोह चीख़ो पुकार करते हुवे फ़रयाद करेंगे : "ऐ अ़ज़ाब के फ़िरिश्तो ! हम पर रह़म करो, एक लम्हे के लिये तो हम से अ़ज़ाब कम कर दो।" फ़िरिश्ते कहेंगे : "हम तुम पर कैसे रह़म करें जब कि रब्बुल आ़लमीन क़ह्हार व जब्बार جَلَّ جَلَالُهُ तुम पर ग़ज़ब फ़रमाता है।"

तांबे का लिबास :

(34)....हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जिस ने अपनी आंखों को ह़राम से पुर किया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की आंखों को जहन्नम के अंगारों से भर देगा और जिस ने ह़राम कर्दा औ़रत से ज़िना किया **अल्लाह** तबारक व तआ़ला उस को क़ब्र से प्यासा, रोता, ग़मगीन, सियाह चेहरा और तारीकी की ह़ालत में उठाएगा। उस की गर्दन में आग का तौ़क़ और जिस्म पर पिघले हुवे तांबे का लिबास होगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ न तो उस से कलाम फ़रमाएगा और न ही उसे पाक करेगा और उस के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है।"

www.dawateislami.net

शादी शुदा से ज़िना करने का अज़ाब :

(35)....नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहूरो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने किसी शादी शुदा औ़रत से ज़िना किया तो क़ब्र में इस उम्मत का निस्फ़ अ़ज़ाब उस मर्द और (रिज़ामन्द होने की सूरत में) औ़रत को होगा और जब क़ियामत का दिन होगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस ज़ानी की नेकियां उस औ़रत के शोहर को दे देगा और उस के शोहर के गुनाह उस ज़ानी के ज़िम्मे डाल देगा और फिर उसे जहन्नम में फेंक दिया जाएगा और येह उस वक़्त होगा जब शोहर को ज़िना का इल्म न हुवा, और अगर उस के शोहर को ख़बर हुई कि किसी ने उस की बीवी से ज़िना किया और वोह ख़ामोश रहा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर जन्नत को ह़राम फ़रमा देगा इस लिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जन्नत के दरवाज़े पर लिख दिया है कि तू "**दय्यूस**"(1) पर ह़राम है (दय्यूस वोह) जिसे अपने अहले ख़ाना की नापसन्दीदा बात (या'नी गुनाह) का इल्म हो और वोह ख़ामोश रहे, ऐसा

---

(1) ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़लाऊद्दीन ह़स्कफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने "**दुर्रे मुख़्तार**" में दय्यूस की ता'रीफ़ येह फ़रमाई है : هُوَمَنْ لَّايَغَارُ عَلٰى اِمْرَأَتِهٖ اَوْمَحْرَمِهٖ या'नी दय्यूस वोह शख़्स होता है जो अपनी बीवी या किसी मह़रम पर ग़ैरत न खाए।" (رد المحتارعلى الدرالمختار، ج٦،ص١١٣، دار المعرفة بيروت) नीज़ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ **397** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**पर्दे के बारे में सुवाल जवाब**" सफ़ह़ा **65** पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : जो लोग बा वुजूदे क़ुदरत अपनी औ़रतों और महारिम को बे पर्दगी से मन्अ़ न करें वोह "**दय्यूस**" हैं।"

मदनी मश्वरा : दय्यूस के मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद जानने के लिये इसी किताब के सफ़ह़ा **64** ता सफ़ह़ा **67** का मुत़ालआ़ फ़रमा लीजिये।

www.dawateislami.net

शख़्स कभी भी जन्नत में दाख़िल न होगा और बेशक सातों आस्मान ज़ानी और दय्यूस पर ला'नत भेजते हैं।"

शर्मगाहों पर आग :

(36)....बा'ज़ आस्मानी सहीफ़ों में है : "ज़ानी क़ियामत के दिन इस ह़ाल में उठाए जाएंगे कि उन की शर्मगाहों पर आग दहकती होगी, उन के हाथ उन की गर्दनों के साथ बन्धे होंगे, अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते उन को घसीटते हुवे सदा लगाएंगे :

ऐ लोगो ! येह ज़ानी हैं जिन के हाथ गर्दनों के साथ बन्धे हुवे हैं और जो अपनी शर्मगाहों में आग लिये हुवे आए हैं। फिर उन की शर्मगाहों को वसीअ़ कर दिया जाएगा जिस से उन की शर्मगाहों से निहायत ही सख़्त बदबूदार आग की भाप निकलेगी, अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते कहेंगे : "येह उन ज़ानियों की शर्मगाहों की बदबू है जिन्हों ने ज़िना करने के बा'द तौबा नहीं की थी। तुम सब उन पर ला'नत करो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन पर ला'नत हो।" उस वक़्त हर नेक व बद उन पर ला'नत करते हुवे कहेगा : "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! **तू उन ज़ानियों पर ला'नत फ़रमा।**"

(37)....सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "शबे मे'राज मैं ने कुछ मर्दों और औ़रतों को देखा कि सांपों और बिच्छूओं के साथ क़ैद हैं और वोह उन को डंस रहे हैं, हर किसी की शर्मगाह को सांपों और बिच्छूं के दरमियान घसीटा जा रहा है। बिच्छू अपने डंकों से उन्हें अज़िय्यत दे रहे हैं और हर डंक में ज़ह़र की एक थैली है वोह जिसे भी कांटते उस के जिस्म में ज़ह़रीली थैली उंडेल देते और उन की शर्मगाहों से पीप बहता है जिस की बदबू से जहन्नमी

www.dawateislami.net

चीख़ते चिल्लाते हैं और वोह अपने बालों से लटकाए गए हैं। मैं ने जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام से दरयाफ़्त फ़रमाया : "ऐ जिब्राईल ! येह कौन हैं ?" जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : **"येह ज़ानी मर्द और ज़ानी औ़रतें हैं।"**

हम दोज़ख़ियों के अ़मल और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब से उस की पनाह मांगते हैं।

ग़ैर औ़रत से हाथ मिलाने की सज़ा :

(**38**)....शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जिस ने किसी अजनबिय्या औ़रत से मुसाफ़ह़ा किया (या'नी हाथ मिलाया) वोह बरोज़े क़ियामत इस ह़ाल में आएगा कि उस का हाथ आग की ज़न्जीर से गर्दन के साथ बन्धा होगा और अगर उस मर्द ने अजनबिय्या से ज़िना किया होगा तो उस की रान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ करेगी : "मैं ने फ़ुलां महीने में फ़ुलां जगह पर फ़ुलां के साथ ऐसा ऐसा (या'नी ज़िना) किया था।" उस वक़्त उस के चेहरे का गोश्त झड़ जाएगा तो उस का चेहरा बिग़ैर गोश्त के हड्डी का रह जाएगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस गोश्त से फ़रमाएगा : "मेरे हुक्म से पहली ह़ालत पर लौट आ।" तो वोह गोश्त दोबारा उस के चेहरे पर जम जाएगा और ज़ानी का चेहरा तारकोल से भी ज़ियादा सियाह हो जाएगा, ज़ानी जुरअत करते हुवे कहेगा : "या रब عَزَّوَجَلَّ मैं ने तो कभी गुनाह नहीं किया।" **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ज़बान को हुक्म देगा : "गूंगी हो जा।" पस वोह गूंगी हो जाएगी तो उस वक़्त आ'ज़ाए बदन बोलना शुरूअ़ करेंगे। **हाथ कहेगा :** "इलाही عَزَّوَجَلَّ मैं ने ह़राम को छुवा था।" **आंख**

www.dawateislami.net

कहेगी : "मैं ने ह़राम की त़रफ़ देखा था।" **पाउं कहेंगे :** "हम ह़राम की त़रफ़ चले थे।" **शर्मगाह कहेगी :** "मैं ने ह़राम फ़े'ल किया था।" **मुह़ाफ़िज़ फ़िरिश्ता कहेगा :** "मैं ने सुना था।" **दूसरा फ़िरिश्ता कहेगा :** "मैं ने लिखा था।" और **ज़मीन कहेगी :** "मैं ने देखा था।" तो **अल्लाह** तबारक व तआ़ला फ़रमाएगा : "मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मुझे तेरी ह़राम कारी का इ़ल्म था इस के बा वुजूद मैं ने तेरी पर्दा पोशी फ़रमाई।" ऐ मेरे फ़िरिश्तो ! इस को पकड़ कर मेरे अ़ज़ाब में डाल दो और इसे मेरी नाराज़ी का मज़ा चखाओ, जिस ने बे ह़याई की उस पर मेरा ग़ज़ब इन्तिहाई सख़्त होगा।

ऐ लगज़िशों और ऊ़यूब में मुब्तला शख़्स ! ग़फ़्लत से बेदार हो जा, मौत के बा'द कौन तेरी त़रफ़ से मुआ़फ़ी मांगेगा और तौबा करेगा....?

(**39**)....सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दे को इस ह़ाल में देखना पसन्द फ़रमाता है कि उस का बन्दा उस की बारगाह में आ़जिज़ी व इन्कसारी करते हुवे दुआ़ में मश्ग़ूल हो। अगर वोह उस से मांगे तो वोह उसे अ़त़ा फ़रमाता है और दुआ़ करे तो क़बूल फ़रमाता है।

आगाह हो जाओ ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "मैं तौबा करने वालों का दोस्त, मख़्लूक़ के धुतकारे हुवों का "**सहारा**" और फ़रयाद करने वालों का "**फ़रयाद रस**" हूं। है कोई जिस ने मुझ से सुवाल किया हो और मैं ने उसे महरूम रखा हो,

www.dawateislami.net

है कोई जिस ने तौबा की हो और मैं ने क़बूल न की हो और है कोई ऐसा जिस ने मुझ से मांगा हो और मैं ने उसे अ़ता न किया हो। मैं करीम हूं और करम मेरी त़रफ़ से है, मैं जव्वाद हूं और जूदो अ़ता मेरी ही त़रफ़ से है, मैं उस को भी अ़ता करता हूं जो मुझ से मांगता है और उसे भी जो नहीं मांगता। मेरी रह़मत के दरवाज़े से गुनहगारों को धुतकारा नहीं जाता।"

फिर ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयत तिलावत फ़रमाई :

﴿6﴾

رَبَّنَا ظَلَمْنَاۤ اَنْفُسَنَا ۫ وَ اِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَ تَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿۲۳﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ रब हमारे ! हम ने अपना आप बुरा किया तो अगर तू हमें न बख़्शे और हम पर रह़म न करे तो हम ज़रूर नुक़्सान वालों में हुवे।*

बद निगाही की सज़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि "एक शख़्स नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा उस का ख़ून बह रहा था तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से इस्तिफ़सार फ़रमाया : "तुझे क्या हुवा ?" उस ने अ़र्ज़ की : "मेरे पास से एक औ़रत गुज़री तो मैं ने उस की त़रफ़ देखा और मेरी निगाहें मुसलसल उस का पीछा करती रहीं कि अचानक मेरे सामने एक दीवार आ गई जिस ने मुझे ज़ख़्मी कर दिया और मेरा येह ह़ाल कर दिया जिसे आप मुलाह़ज़ा फ़रमा रहे हैं।" तो नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जब किसी बन्दे से भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उसे दुन्या ही में उस की सज़ा दे देता है।"

(مجمع الزوائد، کتاب التوبة، باب فیمن عوقب بذنبه فی الدنیا، رقم ۱۷٤۷۱، ج ۱۰، ص۳۱۳)

www.dawateislami.net

चौथा बाब : लूती की सज़ा

﴿7﴾ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اَتَاْتُوْنَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۶۵﴾
وَتَذَرُوْنَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ
اَزْوَاجِكُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ عٰدُوْنَ ﴿۱۶۶﴾

(پ۱۹، الشعراء:۱۶۵،۱۶۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *क्या मख़्लूक़ में मर्दों से बद फ़े'ली करते हो और छोड़ते हो वोह जो तुम्हारे लिये तुम्हारे रब ने जोरूएं बनाईं बल्कि तुम लोग ह़द से बढ़ने वाले हो।*

लिवात़त की दुन्यावी सज़ा :

(**40**)....हुस्ने अफ़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो क़ौमे लूत़ का सा अ़मल (या'नी मर्द से बद फ़े'ली) करे तो करने वाले और करवाने वाले दोनों को क़त्ल कर दो।"

अ़र्शे इलाही कांप उठता है :

(**41**)....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : "**लिवात़त** की सज़ा येह है कि लूती को बुलन्दो बाला चोटी से फेंका जाए फिर ऊपर से उस पर उस वक़्त तक पथ्थर बरसाए जाएं जब तक मर न जाए इस लिये कि **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने क़ौमे लूत़ को येही सज़ा दी थी कि उन पर आस्मान से पथ्थर बरसाए थे।

और **लिवात़त** करने वाला अगर दुन्या भर के पानी से नहा ले फिर भी (उस का बात़िन) नापाक ही रहेगा जब तक कि तौबा न कर ले। इसी लिये शैत़ान भी जब मर्द को मर्द पर देखता है तो अ़ज़ाब के ख़ौफ़ से वहां से भाग जाता है और जब कोई मर्द किसी मर्द पर सुवार होता (या'नी उस से बद फ़े'ली करता) है तो अ़र्शे इलाही कांप उठता है और क़रीब होता है कि आस्मान ज़मीन

www.dawateislami.net

पर गिर पड़े। मलाइका आस्मान के कनारों को पकड़ कर उस वक़्त तक "قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ" (پ۳۰، اخلاص:۱) की तिलावत करते रहते हैं जब तक **अल्लाह** जब्बार व क़ह्हार عَزَّوَجَلَّ का ग़ज़ब ठन्डा नहीं होता।"

आग ने लड़के की शक्ल इख़्तियार कर ली :

(42)....मन्क़ूल है कि एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जंगल में किसी आग के क़रीब से गुज़रे जिस में एक शख़्स जल रहा था। आप عَلَيْهِ السَّلَام उस आग को बुझाने के लिये पानी लाए तो उस आग ने एक लड़के की शक्ल इख़्तियार कर ली और वोह मर्द आग की सूरत में तब्दील हो गया तो इस पर ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام रोने लगे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की : "या रब عَزَّوَجَلَّ इन दोनों को इन की अस्ली ह़ालत पर लौटा दे ताकि मैं इन के गुनाह के बारे में पूछूं।" तो वोह आग उन दोनों से दूर हो गई। आप عَلَيْهِ السَّلَام ने देखा कि उन में से एक मर्द और दूसरा लड़का था। मर्द ने अ़र्ज़ की : "या नबिय्यल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام मैं दुन्या में इस लड़के की मह़ब्बत में गिरिफ़्तार था। **शहवत** ने मुझे इस ह़द तक पहुंचा दिया कि मैं ने जुमुआ़ की रात इस के साथ **बद फ़े'ली** की और फिर दूसरे दिन भी इस के साथ बद फ़े'ली की। एक शख़्स हमारे क़रीब आया और कहा : "तुम हलाक हो जाओ, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो।" मैं ने उसे जवाब में कहा : "मुझे न **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ है और न ही मैं उस से डरता हूं।" फिर जब मैं और येह लड़का मर गए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हम दोनों को आग की सूरत कर दिया। अब कभी येह आग बन कर मुझे जलाता है और कभी मैं आग बन कर इसे जलाता हूं और हमें येह अ़ज़ाब क़ियामत तक होता रहेगा।"

हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उस के ग़ज़ब और नारे दोज़ख़ से पनाह मांगते हैं।

www.dawateislami.net

सात क़िस्म के लोगों पर ला'नत :

(43)....शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "सात क़िस्म के लोगों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ला'नत फ़रमाता है और क़ियामत के दिन उन की त़रफ़ नज़रे रह़मत नहीं फ़रमाएगा और उन से कहा जाएगा : "जहन्नम में दाख़िल होने वालों के साथ तुम भी इस में दाख़िल हो जाओ।"

वोह सात अफ़राद येह हैं : (1) क़ौमे लूत़ का सा अ़मल करने और (2) करवाने वाला (3) मां और उस की बेटी को एक साथ निकाह़ में जम्अ़ करने वाला (4) अपने पड़ोसी की बीवी से ज़िना करने वाला (5) औ़रत के पिछले मक़ाम में वत़ी करने वाला (6) मुश्तज़नी करने वाला मगर येह कि वोह तौबा कर ले और (7) अपने पड़ोसी को ईज़ा देने वाला।"

शैत़ान का पसन्दीदा अ़मल :

(44)....ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन दावूद علی نبینا وعلیهما الصلوٰۃ والسلام ने शैत़ान मलऊ़न से पूछा : "तुझे कौन सा अ़मल (या'नी गुनाह) ज़ियादा पसन्द है ? इब्लीसे लईन ने कहा : "मुझे लिवात़त से ज़ियादा कोई अ़मल मह़बूब नहीं और चूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक सब से ज़ियादा **नापसन्दीदा अ़मल** येह है कि मर्द के ऊपर मर्द और औ़रत के ऊपर औ़रत आए (या'नी बद फ़े'ली करे) इस लिये मुझे इस से ज़ियादा मह़बूब कोई अ़मल नहीं।" ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : "तू हलाक हो जाए ! ऐसा क्यूं है ?" उस ने कहा : "इस लिये कि जिस को इस की **आ़दत** पड़ जाती है उसे एक घड़ी सब्र नहीं आता। इसी लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का उस पर शदीद ग़ज़ब होता है और जिस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ग़ज़बे शदीद हो जाए, वोह उसे तौबा से रोक देता है।"

www.dawateislami.net

क़ौमे लूत़ के अफ़्आ़ल :

(45)....सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "शत़रंज खेलना, गधों की दौड़ का मुक़ाबला कराना, कुत्तों में लड़ाई करवाना, मेंढ़ों की आपस में टक्कर मरवाना, मुर्ग़ बाज़ी करना, तहबन्द के बिग़ैर ह़म्माम में जाना और नाप तोल में कमी करना येह सब क़ौमे लूत़ के अफ़्आ़ल हैं। **हलाकत है** उस शख़्स के लिये जो ऐसे काम करे और उन का सब से बड़ा गुनाह औ़रत का औ़रत से और मर्द का मर्द से **लिवात़त** (या'नी बद फ़े'ली) करना था।"

जब उन्हों ने ह़या की चादर सरों से उतार फेंकी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानियों पर दिलैर हो गए। तो **अल्लाह** तआ़ला ने उन लोगों को सरों के बल औंधा गिरा दिया, उन के शहरों को उलट दिया और आस्मान से पथ्थरों की बारिश बरसा कर उन्हें अ़ज़ाब दिया।

आग की चादरें :

(46)....ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन मुह़म्मद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "क़ुरआने मजीद पढ़ने वाली दो औ़रतों ने मेरे पास आ कर पूछा : "क्या औ़रत के औ़रत पर सुवार होने (या'नी बद फ़े'ली करने) के अ़मल का ज़िक्र किताबुल्लाह में है ?" मैं ने कहा : "हां, है और वोह तब्बअ़ (नामी बादशाह) की क़ौम के तज़किरे में है। इसी सबब से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस की क़ौम को हलाक कर दिया था।" और **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने अपने मह़बूब नबी, ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़बर दी : "ऐसी औ़रतों के लिये आग की क़मीसें, आग की चादरें, आग के कमर बन्द, आग के सरपोश और आग ही के मोज़े तय्यार किये गए हैं।"

www.dawateislami.net

एक और ह़दीसे पाक में यूं आया है कि "जब औ़रत, औ़रत से बद फ़े'ली करती है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ एक फ़िरिश्ते को हुक्म फ़रमाता है कि वोह उन के लिये आग की चादरें, क़मीसें और आग के मोज़े तय्यार करे।" और इस से बढ़ कर येह अ़ज़ाब होगा कि उस औ़रत को बिच्छूओं से भरी आग में फेंक दिया जाएगा और औ़रत के साथ उस के पिछले मक़ाम में वती करना (मर्द से) **लिवात़त** करने से भी बड़ा गुनाह है और ऐसा तो काफ़िर ही करता है।"

जिस घर में ज़नाना मर्द हो उस पर ला'नत :

(47)....हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस घर पर ला'नत फ़रमाता है जिस में ज़नाना मर्द (या'नी औ़रतों जैसी वज़्अ़ क़त़्अ़ अपनाने वाला मर्द) दाख़िल होता है।"

(48)....हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, मर्दानी औ़रतों (या'नी मर्दों जैसी वज़्अ़ क़त़्अ़ अपनाने वालियों) और ज़नाने मर्दों (या'नी औ़रतों जैसी वज़्अ़ क़त़्अ़ अपनाने वालों) पर ला'नत फ़रमाता है।"

क़ौमे लूत़ की बस्ती में फेंक दिया जाता है :

(49)....हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स क़ौमे लूत़ का सा अ़मल करते हुवे मर जाए तो वोह अपनी क़ब्र में एक घड़ी से ज़ियादा नहीं ठहर पाता कि **अल्लाह** तबारक व तआ़ला उस की त़रफ़ एक फ़िरिश्ता भेजता है जिस की शक्लो सूरत उचक लेने वाले परन्दे की मानिन्द होती है। वोह उसे अपने पन्जों से उचक कर क़ौमे लूत़ की बस्ती में फेंक आता है तो वोह जहन्नम में उन

www.dawateislami.net

के साथ संगसार होगा और उस की पेशानी पर लिख दिया जाता है : ''آيِسٌ مِّنْ رَّحْمَةِاللهِ'' या'नी **येह शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मायूस है।**

बे सर के बच्चे :

(**50**)....हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''क़ियामत के दिन ऐसे बच्चे लाए जाएंगे जिन के सर नहीं होंगे। अल्लाह तबारक व तआ़ला जानने के बा वुजूद उन से पूछेगा : ''तुम कौन हो ?'' वोह अ़र्ज़ करेंगे : ''हम मज़्लूम हैं।'' अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पूछेगा : ''तुम पर किस ने ज़ुल्म किया ?'' वोह अ़र्ज़ करेंगे : ''हमारे बापों ने, क्यूंकि वोह दुन्या में मर्दों से बद फ़े'ली कर के हमें उन के पिछले मक़ाम में डाल दिया करते थे।'' तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : ''इन के बापों को जहन्नम में डाल दो और उन की पेशानियों पर लिख दो : ''آيِسِيْنَ مِنْ رَّحْمَتِيْ'' **या'नी येह सब मेरी रह़मत से मायूस हैं।''**

ऐ बन्दे ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रह़्म फ़रमाए, इस से पहले कि तेरे आ'ज़ा तेरे ख़िलाफ़ गवाही दें और तेरी ज़बान को ह़ल्क़ से निकाल लिया जाए तू उस की रह़मत से मह़रूम होने से बच और नाफ़रमानियों, ख़त़ाओं और गुनाहों से तौबा कर ले। वोह मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ तुझे, तेरे नामों से बुलाएगा जो किसी वक़्त भी किसी काम से बे ख़बर नहीं।

ऐ नाफ़रमान बन्दे ! उस की बारगाह में गिड़ गिड़ा कर गुनाहों से तौबा कर ले बेशक वोह करम फ़रमाने वाला, ह़िल्म वाला और ग़फ़ूरो रह़ीम है।

www.dawateislami.net

पांचवां बाब : सूदख़ोर की सज़ा

﴾8﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوا الرِّبٰوٓا اَضْعَافًا مُّضٰعَفَةً ۪ (پ۴،ال عمران:۱۳۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! सूद दूना दून न खाओ ।

﴾9﴿

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَذَرُوْا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبٰۤوا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا فَاْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ (پ۳،البقرۃ:۲۷۸،۲۷۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! **अल्लाह** से डरो और छोड़ दो जो बाक़ी रह गया है सूद अगर मुसलमान हो फिर अगर ऐसा न करो तो यक़ीन कर लो **अल्लाह** और **अल्लाह** के रसूल से लड़ाई का ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से नाराज़ी मोल लेने वाला :

सूद ख़ोर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से जंग करता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से जंग का ए'लान फ़रमाता है । **हलाकत है** उस शख़्स के लिये जिस के और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दरमियान जंग हो और उस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी हो ।

घरों जैसे पेट :

(51).....सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "शबे मे'राज मुझे आस्मानों की सैर कराई गई । मैं ने अपने सर के ऊपर से गरज और कड़क दार बिजली की मिस्ल एक आवाज़ सुनी और कुछ मर्दों को देखा जिन के पेट घरों की मानिन्द (बड़े बड़े) थे जिन में सांप और बिच्छू जोश मारते हुवे नज़र आ रहे थे । मैं ने जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام से दरयाफ़्त किया : "येह कौन हैं?" तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : **"येह सूद ख़ोर हैं ।"**

www.dawateislami.net

गोया अपनी मां से ज़िना किया :

(52)....शनहशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "जिस ने सूद खाया अगर्चे एक ही दिरहम हो तो गोया उस ने इस्लाम में अपनी मां से ज़िना किया।"

सूदी लैन दैन करने वालों पर ला'नत :

(53)....सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : "अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते सूद खाने वालों को इस त़रह़ पछाड़ देंगे जिस त़रह़ सख़्त बुख़ार वाला पछाड़े खाता है।"

(54)....ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सूद लेने वाले, सूद देने वाले, सूद के गवाह और सूद के लिखने वाले और गूदने और गुदवाने वाली (इस से मुराद सूई से जिस्म में छेद लगा कर उस में रंग या सुर्मा भरना है) और ह़लाला करने वाले और ह़लाला करवाने वाले(1) और ज़कात अदा न करने वाले सब पर ला'नत फ़रमाई है।"

(1).....**दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ **1182** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द दुवुम सफ़ह़ा **180** पर सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : "निकाह़ बशर्ते अल तह़लील (ह़लाला की शर्त़ के साथ निकाह़ करना) जिस के बारे में ह़दीसे पाक में ला'नत आई वोह येह है कि अ़क़्दे निकाह़ या'नी ईजाबो क़बूल में ह़लाला की शर्त़ लगाई जाए और येह निकाह़ मकरूहे तेह़रीमी है। ज़ौजे अव्वल व सानी (या'नी पहला शोहर जिस ने त़लाक़ दी और दूसरा जिस से निकाह़ किया) और औ़रत तीनों गुनाहगार होंगे मगर औ़रत इस निकाह़ से भी बशराइते ह़लाला शोहरे अव्वल के लिये ह़लाल हो जाएगी और शर्त़ बात़िल है और शोहरे सानी त़लाक़ देने पर मजबूर नहीं और अगर अ़क़्द में शर्त़ न हो अगर्चे निय्यत में हो तो कराहत अस्लन नहीं बल्कि अगर निय्यते ख़ैर हो तो मुस्तह़िब्बे अज्र है।" (الدرالمختار، کتاب الطلاق، باب الرجعة، ج۵، ص ۱۵، وغیرها)

www.dawateislami.net

बीमारियां और ख़ूं रैज़ियां आम हो जाएंगी :

(55)....हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : आख़िरी ज़माने में **चार बुरी ख़स्लतें** आम होंगी : (1) सूद खाना (2) ख़रीदो फ़रोख़्त में झूटी क़सम खाना (3) नाप और (4) तोल में कमी करना। जब येह बुराइयां आम होंगी तो लोगों में कई तरह के अमराज़ फैल जाएंगे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन को ख़ूं रैज़ी में मुब्तला कर देगा।"

﴾10﴿ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

يَوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ؕ

(پ۳۰، المطففین:۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन सब लोग रब्बुल आलमीन के हुज़ूर खड़े होंगे।

(या'नी सब खड़े होंगे) सिवाए सूदख़ोर के कि वोह खड़ा होना चाहेगा लेकिन मजनून और मख़्बूतुल हवास (या'नी बेहोश) हो कर गिर पड़ेगा यहां तक कि लोग हिसाब से फ़ारिग़ हो जाएंगे।

पेट को आग से भर दिया जाएगा :

(56)....हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "जिस शख़्स ने जितना सूद खाया होगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के पेट को उतना ही आग से भरेगा और अगर उस ने (सूद से) कोई माल कमाया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का कोई अमल क़बूल नहीं फ़रमाएगा और सूदख़ोर उस वक़्त तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी और ला'नत में रहता है जब तक उस के पास एक भी सूदी क़ीरात (या'नी दीनार का बीसवां हिस्सा) मौजूद होता है।"

www.dawateislami.net

सूद नेकियां मिटाता और गुनाह बढ़ाता है :

(57)....शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "सोने के बदले सोना और चांदी के बदले चांदी बराबर बराबर होना चाहिये और जो ज़ाइद (या'नी सूद) है उस से सूद लेने वाले को जहन्नम में दाग़ा जाएगा और **सूद** नेकियों को ख़त्म करता, इबादात को बातिल करता और गुनाहों को बढ़ाता है, और जिस रोज़ादार ने सूद के माल से इफ़्तार किया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का रोज़ा क़बूल नहीं फ़रमाएगा और जिस ने इस हाल में नमाज़ पढ़ी कि उस के पेट में हराम (या'नी सूद) था **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की नमाज़ क़बूल नहीं फ़रमाएगा और अगर इस सूदी माल से सदक़ा किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का सदक़ा क़बूल नहीं फ़रमाएगा और सूद ख़ोर पर बरोज़े क़ियामत कोई लम्हा ऐसा न गुज़रेगा कि जिस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर ला'नत न फ़रमाए।"

याद रखिये ! हक़ तआला का सूद ख़ोर से **ए'लाने जंग** है और वोह उस की तरफ़ नज़रे रहमत फ़रमाएगा न उस से कलाम फ़रमाएगा। पस **ऐ बन्दे** ! तू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से जंग में अपनी कमज़ोरी पर नज़र डाल कि कौन मग़लूब होगा और जहन्नम में डाला जाएगा।

कम तोलने वाले की सज़ा :

(58)....नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "**जहन्नम** में एक वादी है जिस की गर्मी से ख़ुद जहन्नम रोज़ाना पांच मरतबा पनाह मांगता है। अगर उस में पहाड़ डाले जाएं तो वोह भी उस की तपिश से पिघल जाएं, नमाज़ में सुस्ती और नाप तोल में कमी

www.dawateislami.net

करने वाले इस वादी में क़ैद किये जाएंगे। हलाकत है उस शख़्स के लिये जिस ने ज़मीनो आस्मान के बराबर चौड़ाई वाली जन्नत को एक या दो दाने (या'नी मा'मूली चीज़) के बदले बेच दिया।"

सियाह चेहरा :

(**59**)....हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "**कम तोलने वाला** बरोज़े क़ियामत इस हाल में आएगा कि उस का चेहरा सियाह, ज़बान बाहर निकली हुई और आंखें नीली होंगी। उस की गर्दन में आग का तराज़ू होगा (फिर उस को दो पहाड़ों के दरमियान बिठा कर) उस से कहा जाएगा : यहां से यहां तक तोलो, यूं उस को दोनों पहाड़ों के दरमियान **पचास हज़ार साल** तक अ़ज़ाब दिया जाता रहेगा।"

(**60**)....हज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा **क़ाज़ी इयाज़** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَزَّاق फ़रमाते हैं : "कुछ चेहरे क़ियामत के दिन कम तोलने की वजह से सियाह होंगे।"

पांच से बचने के लिये पांच से बचो :

(**61**)....हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "**ऐ लोगो !** पांच बातों से बचने के लिये पांच बातों से बचो (**1**) जो क़ौम **कम तोलती** है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें महंगाई और फलों की कमी में मुब्तला कर देता है। (**2**) जो क़ौम **बद अ़हदी** करती है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन के दुश्मनों को उन पर मुसल्लत़ कर देता है। (**3**) जो क़ौम **ज़कात** अदा नहीं करती **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन से बारिश का पानी रोक लेता है और अगर चोपाए न होते तो उन को पानी का एक क़त़रा भी न दिया जाता। (**4**) जिस कौम में **फ़ह़्हाशी** और **बेह़याई** फैल जाती है

www.dawateislami.net

अल्लाह तबारक व तआ़ला उन को ता़ऊ़न के मरज़ में मुब्तला कर देता है। (5) जो क़ौम **कुरआने पाक** के बिग़ैर फ़ैसला करती है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन को ज़ियादती (या'नी ग़लत़ फ़ैसले) का मज़ा चखाता है और उन्हें एक दूसरे के डर में मुब्तला कर देता है।"

ह़राम के एक दिरहम का वबाल :

(62)....हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "**पुल सिरात़** की पुश्त पर आग के आंकड़े होंगे। जिस ने ह़राम का एक भी दिरहम लिया होगा वोह आंकड़े उस के पाउं को पकड़ लेंगे तो वोह उस वक़्त तक **पुल सिरात़** से नहीं गुज़र सकेगा जब तक उस दिरहम का मालिक बदले में उस की नेकियों में से न ले लेगा और अगर उस के पास नेकियां न होंगी तो उस (माकिले दिरहम) के गुनाह उस के सर डाल दिये जाएंगे और वोह जहन्नम में गिर पड़ेगा, इस से पहले कि तुम्हारी नेकियां छीन ली जाएं जो माल ज़ुल्मन (या'नी नाह़क़) लिया है उसे उस के मालिक को लौटा दो।"

भयानक आवाज़ :

(63)....नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जिस ने कोई शै चोरी की वोह क़ियामत के दिन इस ह़ाल में आएगा कि उस की गर्दन में आग का त़ौक़ होगा और जिस ने ह़राम की कोई शै खाई उस के पेट में आग भड़काई जाएगी और वोह जिस वक़्त अपनी क़ब्र से उठेगा सारी मख़्लूक़ उस की भयानक आवाज़ से कांप उठेगी यहां तक कि ख़ुदाए अह़कमुल ह़ाकिमीन عَزَّوَجَلَّ ने मख़्लूक़ के दरमियान जो फ़ैसला फ़रमाना है फ़रमा दे।"

www.dawateislami.net

ऐ कमज़ोर व नातुवां बन्दे ! तौबा के ज़रीए अपने गुनाहों की बीमारी का इलाज कर ले और अपने मौला عَزَّوَجَلَّ से दुआ मांग, ताकि वोह तुझे (गुनाहों की बीमारी से) शिफ़ा दे दे तो मुमकिन है कि वोह तुझ पर रह़्म फ़रमाए और तुझे अपना क़ुर्ब अ़ता फ़रमाए। इस से पहले कि तुझे अ़ज़ाब में मुब्तला कर के ग़मगीन व रुस्वा किया जाए और तेरी ज़बान गूंगी हो जाए और तेरे दिल पर मोहर लग जाए, तू अपनी आख़िरत का ज़ादे राह ख़ूब इकट्ठा कर ले क्यूंकि थोड़ा ज़ादे राह तुझे काफ़ी न होगा।

छटा बाब : नौह़ा[1] करने वाली की सज़ा

﴿11﴾ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَ اِنَّا لَنَحْنُ نُحْیٖ وَ نُمِیْتُ وَ نَحْنُ الْوٰرِثُوْنَ ﴿۲۳﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और बेशक हम ही जिलाएं और हम ही मारें और हम ही वारिस हैं।*

अपने मेंढे को ज़ब्ह़ करते वक़्त जिस त़रह़ क़स्साब की नाराज़ी अच्छी नहीं होती (बिला मिसाल व बिला तश्बीह़) इसी त़रह़ अपने बन्दे को मौत देते वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी उस बन्दे के लिये अच्छी नहीं होती।

---

(1)....दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ **1250** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा **253** पर सदरुश्शरीआ़ बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : नौह़ा या'नी मय्यित के अवसाफ़ मुबालग़े के साथ बयान कर के आवाज़ से रोना जिस को **बैन** कहते हैं, बिल इजमाअ़ ह़राम है यूंही **वावेला** व **अमसीबता** (या'नी हाए मुसीबत) कह के चिल्लाना।" (الجوهرة النيرة، كتاب الصلاة، باب الجنائز، الجزء الاول، ص ۱۳۹، وغيرها)

www.dawateislami.net

कपड़े फाड़ने पर वईद :

(64)....सह़ीह़ मुस्लिम शरीफ़ में है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मैं उस शख़्स से बेज़ार हूं जिस ने झूटी क़सम खाई, (किसी के मरने पर) कपड़े फाड़े और चोरी की ।"

﴾12﴿

وَالَّذِيْنَ لَا يَشْهَدُوْنَ الزُّوْرَ ۙ

(پ ۱۹، الفرقان:۷۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो झूटी गवाही नहीं देते ।

एक क़ौल येह है कि झूटी गवाही से मुराद "नौह़ा करना या'नी मय्यित पर रोना पीटना है ।"

क़ियामत में रोने पीटने की उजरत :

(65)....शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "**नौह़ा** करने वाली औ़रत अपनी क़ब्र से इस ह़ाल में उठेगी कि उस के बाल बिखरे हुवे और गर्द आलूद होंगे और उस पर ख़ारिश का कुर्ता, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ला'नत की चादर और तारकोल का लिबास होगा । वोह अपने हाथों को सीने पर रखे चीख़ती और चिल्लाती कहेगी : "**हाए बरबादी**" फ़िरिश्ते कहेंगे : "आमीन (या'नी ऐसा ही हो) । फिर उस को रोने पीटने की उजरत (या'नी बदले) में जहन्नम की आग दी जाएगी ।"

नौह़ा करने वाली पर ला'नत :

(66)...सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "**नौह़ा** करने वाली और नौह़ा सुनने वाली पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ला'नत है ।"

www.dawateislami.net

कभी नहीं रोऊंगी :

(67)....एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि "मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से पूछा : "क्या ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक ज़माने में मुहाजिरीन की औ़रतें **नौह़ा** करती थीं ?" तो उन्हों ने इरशाद फ़रमाया : "नहीं।" फिर इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! एक औ़रत रोती हुई बारगाहे रिसालत علٰی صاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام में ह़ाज़िर हुई जिस का बाप, बेटा और भाई जंग में शहीद हो गए थे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से इस्तिफ़सार फ़रमाया : "तुझे किस मुसीबत ने रुलाया है ?" उस ने अ़र्ज़ की : "मेरे घर के तमाम मर्द फ़ौत हो गए।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तू सब्र करे तो तेरे लिये **जन्नत** है।" उस ने अ़र्ज़ की : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जब मेरे लिये जन्नत है तो मैं आज के बा'द कभी नहीं रोऊंगी।"

(फिर ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने इरशाद फ़रमाया :) जब कि इस ज़माने की औ़रतें चेहरों को नोचती, गिरेबान चाक करती और बालों को उखेड़ती हैं।

दो बुरी आवाज़ें :

(68)....हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक आवाज़ों में **बुरी आवाज़ें दो** हैं (1) मुसीबत के वक़्त रोने पीटने वाली की आवाज़ और (2) ख़ुशी के वक़्त बाजों की आवाज़।" फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बाजा बजाने वाले और सुनने वाले पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत हो।"

www.dawateislami.net

नौहा का दल्लाल :

﴾13﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَفِیْۤ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ﴿۱۹﴾ (پ۲۶،الذّٰریٰت:۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और उन के मालों में ह़क़ था मंगता और बे नसीब का ।*

इस से मुराद वोह लोग हैं जो अपने अम्वाल, ने'मत व ख़ुशी के वक़्त गाने वालियों और मुसीबत के वक़्त रोने पीटने वालियों को देते हैं । जब कोई इस ह़ाल में मरता है कि उस पर क़र्ज़ भी होता है और उस के पास लोगों की अमानतें भी होती हैं और उस के ज़िम्मे लोगों पर ज़ुल्मो सितम के मुआख़ज़े (या'नी मुत़ालबे) भी होते हैं तो वोह अपनी रूह़ निकलने के वक़्त दहशत ज़दा और बारगाहे रब्बुल आ़लमीन में ह़ाज़िर होते वक़्त मसाइब से दो चार होता है । अपने गुनाहों के बोझ के हलका होने की तमन्ना करता है और शैत़ान क़ब्र तक उस के साथ जाता है । फिर जब फ़िरिश्ते उस के गुनाहों के सबब उस को झिड़कते और अ़ज़ाब की वई़द सुनाते हैं तो उस को सुन कर शैत़ान कहता है : "**ऐ फ़ुलां** ! क्या तू मुझे जानता है ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं तेरी सज़ा व अ़ज़ाब में मज़ीद इज़ाफ़ा कराऊंगा । वोह गुनाह जो तू ने नहीं किया उस पर भी तेरी पकड़ होगी ।" फिर शैत़ान उस के घर वालों के पास आता है और गोया कि **नौह़ा का दल्लाल** बन कर कहता है : "तुम्हारे मुर्दों पर तुम्हारा मातम ज़ियादा आसान है, फ़ुलां की मिस्ल ग़म भी ज़ियादा हो और रोना भी बहुत ज़ियादा हो और फ़ुलां की त़रह़ चीख़ो पुकार और रोना पीटना भी हो, तुम नौह़ा करने वाली फ़ुलां औ़रत को बुला लाओ और उसे पैसे दे कर **नौह़ा** कराओ ।"

www.dawateislami.net

तो मय्यित के घर वाले नौहा करने वाली को उजरत पर लाते हैं और वोह बिग़ैर किसी मुसीबत के रोती है और अपने आंसूओं को दराहिम (या'नी रूपियों) के इ़वज़ बेचती है और ज़िन्दा लोगों को घरों के अन्दर फ़ित्ने में और मुर्दों को क़ब्रों के अन्दर अ़ज़ाब में मुब्तला करती, उन का अज्रो सवाब रोकती और उन के (गुनाहों के) बोझ में इज़ाफ़ा करती है और मय्यित की ख़ूबियां मुबालग़े के साथ बयान करती है जिस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मय्यित और अहले मय्यित पर नाराज़ होता है।

और उस मुर्दे की क़ब्र में जहन्नम की **70** खिड़कियां खोल दी जाती हैं जिन में से सियाह कुत्ते मय्यित के पास आते हैं और उसे नोच डालते हैं और अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते उस के सर को कूटते और ज़र्बें लगाते हैं। मुर्दा कहता है : "**हाए हलाकत !** येह अ़ज़ाब कहां से आ गया ?" मलाइका कहते हैं : "येह तेरे घर वालों की त़रफ़ से तेरे लिये तोह़्फ़ा है।" मुर्दा कहता है : "**अल्लाह** तआ़ला उन को मेरी त़रफ़ से जज़ाए ख़ैर न दे। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन को भी ऐसे ही अ़ज़ाब दे जैसे उन्हों ने मुझे अ़ज़ाब में मुब्तला किया है।"

मलाइका कहते हैं : "ज़रूर हर एक को इसी त़रह़ अ़ज़ाब दिया जाएगा।" मुर्दा कहता है : "नौहा तो उन्हों ने किया, (मेरी) ख़ूबियां मुबालग़े के साथ बयान तो उन्हों ने कीं, मुंह पर त़मांचे तो उन्हों ने मारे, मुझे किस गुनाह के सबब अ़ज़ाब दिया जा रहा है ?" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से फ़रमाता है : "तेरा गुनाह येह है कि तू ने अपने घर वालों से वा'दा न लिया था कि वोह तेरे मरने के बा'द मुझ से जंग नहीं करेंगे, और जो अपने अ़ज़ीज़ो अक़ारिब को इस

www.dawateislami.net

बात की वसिय्यत करना भूल जाएगा कि वोह अपने रब عَزَّوَجَلَّ से जंग न करें तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को अ़ज़ाब देगा।"(1)

तारकोल का लिबास :

(**69**)....शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "नौहा करने वाली अगर अपनी मौत से क़ब्ल तौबा न करे तो बरोज़े क़ियामत इस हाल में उठेगी कि उस पर तारकोल का लिबास और ख़ारिश की क़मीस होगी। (जिस पर नौहा किया गया उस) मुर्दे के इ़लावा किसी को भी दूसरे के गुनाहों की वजह से अ़ज़ाब नहीं दिया जाता और मुर्दे को उस के घर वालों के रोने के बराबर अ़ज़ाब दिया जाता है।"

जब घर वाले कहते हैं : "ऐ हमारी इ़ज़्ज़त ! और ऐ हमारी वजाहत ! तेरे बा'द हमारा कौन होगा ? पस मय्यित अपनी क़ब्र में उठ कर बैठ जाती है और अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते अहले मय्यित के हर कलिमे पर मय्यित को एक ज़र्ब लगाते हैं यहां तक कि उस के जोड़ टूट जाते हैं और फ़िरिश्ते उसे कहते हैं : "क्या तू वैसा ही था जैसा कि तेरे घर वालों ने कहा ? क्या तू उन को रिज़्क़ देता था ? या तू उन का अमीर या कफ़ील था ?" तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम खा कर बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ करता है : "या रब عَزَّوَجَلَّ मैं तो बहुत कमज़ोर व नातुवां था और तू ही वोह पाक ज़ात है जो मुझे भी और उन को भी रिज़्क़ देता है।" **अल्लाह** तआ़ला इरशाद फ़रमाता है : "मैं ने तुझे इस लिये सज़ा दी क्यूंकि तू ने (मरने से पहले) इन को इस (नौहा) से **मन्अ़ नहीं** किया था।"

(1) फ़क़ीहे मिल्लत हज़रते अ़ल्लामा मौलाना **मुफ़्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि "(मय्यित को अ़ज़ाब इस सूरत में होगा) जब कि उस ने रोने की वसिय्यत की हो या वहां रोने का रवाज हो और उस ने मन्अ़ न किया हो या येह मत़लब है कि उन के रोने से मय्यित को तक्लीफ़ होती है।"
(انوارالحدیث،میت پررونے کابیان،ص۲۱۸،ضیاء القرآن پبلی کیشنز)

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से शर्म क्यूं न आई ? :

(70)....हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा बाहिली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "बरोज़े क़ियामत **नौहा** करने वाली को जन्नत और दोज़ख़ के दरमियान एक रास्ते पर खड़ा किया जाएगा जब कि उस के कपड़े तारकोल के होंगे और उस के चेहरे पर आग का निक़ाब होगा, फ़िरिश्ते मय्यित को घसीट कर लाएंगे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की रूह़ को उस के जिस्म में वापस लौटा देगा। पस उसे नौहा करने वाली के सामने लैटा दिया जाएगा और अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते उस से कहेंगे : "इस पर नौहा कर जैसे दुन्या में तू ने इस पर नौहा किया था।" वोह कहेगी : "मुझे आज के दिन शर्म आती है।" फ़िरिश्ते उसे मारते हुवे कहेंगे : "ऐ मलऊ़ना (या'नी ला'नत की गई औ़रत) ! दुन्या में तुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से शर्म क्यूं न आई, क्या तुझे मा'लूम न था कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरी आवाज़ सुन रहा है ?" फिर नौहा करने वाली (इस के इ़लावा) दूसरी बात कहेगी तो उस की टांग काट दी जाएगी, फिर कोई और बात कहेगी तो उस का हाथ काट दिया जाएगा जिस पर वोह चिल्लाएगी : "**हाए ! मेरी हलाकत।**"

और **मय्यित** कहेगी : "मेरा क्या गुनाह है ?" फ़िरिश्ते कहेंगे : "तेरा गुनाह येह है कि तू ने मरने से पहले इन को (नौहा करने से) मन्अ़ नहीं किया था। फिर फ़िरिश्ते उसे ऐसी मार मारेंगे कि उस के एक दूसरे से जुड़े हुवे तमाम आ'ज़ा बदन से कट कर गिर पड़ेंगे और जब भी फ़िरिश्ते उसे एक ज़र्ब लगाएंगे तो वोह इस ज़ोर से चीख़ेगा कि सारी मख़्लूक़ रो पड़ेगी और वोह हमेशा चीख़ता चिल्लाता रहेगा और सात मरतबा टुकड़े टुकड़े किया

www.dawateislami.net

जाएगा। फिर अगर वोह अहले ख़ैर से हुवा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमा देगा और अगर अहले शर से हुवा तो जहन्नम में डाल देगा।

फिर **नौहा** करने वाली को आग का नेज़ा, आग की ज़िरह और आग की ढाल दी जाएगी और आग के जूते पहनाए जाएंगे और अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते उसे कहेंगे : " ऐ मलऊ़ना ! चल ! आज अपने रब عَزَّوَجَلَّ से जंग कर जिस त़रह़ दुन्या में जंग किया करती थी ताकि तुझे मा'लूम हो जाए कि आज के दिन कौन मग़लूब, ज़लील, ख़ाइबो ख़ासिर और आग में डाला जाएगा ?" **नौहा** करने वाली कहेगी : "हाए ! मेरी हलाकत व बरबादी !" फिर उस को और जो उस के साथ (नौहा करने में) शरीक थे, उन को और जो उस के इस फ़े'ल पर राज़ी थे, उन सब को जहन्नम की त़रफ़ हांका जाएगा और औंधे मुंह घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाएगा।"

हाए बरबादी ! हाए हलाकत :

(**71**)....नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जिस ने **नौहा** के कलिमात कहे और वोह सात हुवे तो वोह क़ियामत के रोज़ इस ह़ाल में उठाई जाएगी कि उस पर तारकोल की चादर, ख़ारिश का लिबास और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत का कुर्ता होगा और वोह अपने हाथों को सर पर रखे हुवे कहेगी : "**हाए बरबादी ! हाए हलाकत।**" तो जो फ़िरिश्ता उसे घसीट रहा होगा, कहेगा : "**आमीन** (या'नी ऐसा ही हो)।" यहां तक कि उसे (जहन्नम के निगरान फ़िरिश्ते) ह़ज़रते मालिक عَلَيْهِ السَّلَام के सिपुर्द कर देगा।"

www.dawateislami.net

(72)....हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ग़ैब निशान है : "**अल्लाह** तबारक व तआ़ला नौहा करने वालियों की जहन्नम में दो सफ़े बनाएगा एक सफ़ जहन्नमियों की दाईं जानिब और एक बाईं जानिब और वोह इस त़रह़ जहन्नमियों पर भोंकेंगी जैसे कुत्ते भोंकते हैं।"

आंसूओं पर उजरत :

(73)....अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने एक औ़रत को (नौहा की मिस्ल) अश्आ़र गाते हुवे सुना तो उस को दुर्रे से इतना मारा कि उस की ओढ़नी उतर गई। लोगों ने अ़र्ज़ की : "या अमीरल मोअमिनीन ! क्या इस के लिये इ़ज़्ज़त व अ़ज़मत नहीं है ?" तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! "नहीं" इस लिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें सब्र का हुक्म फ़रमाता है और येह रोकती है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बे सब्री से **मन्अ़** फ़रमाता है और येह इस का हुक्म देती है और अपने आंसूओं पर उजरत लेती है।"

कुफ़्र के मुतरादिफ़ तीन बातें :

(74)....हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तीन बातें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से **कुफ़्र** करने के मुतरादिफ़ हैं :

(1) गिरेबान फाड़ना

(2) बाल नोचना या (फ़रमाया) रुख़्सार पीटना और

(3) नौहा करना।"

मज़ीद फ़रमाया : "फ़िरिश्ते **नौहा** करने वाली और गाना गाने वाली के लिये दुआ़ए रह़मत नहीं करते, इस लिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नौहा करने वाली, गाने वाली, गूदने वाली और

www.dawateislami.net

गुदवाने वाली पर ला'नत फ़रमाता है और रुख़्सारों पर त़मांचे मारने वाली, अपनी मुसीबत पर चीख़ने चिल्लाने वाली, नौह़ा करने वाली और नौह़ा सुनने वाली पर ला'नत फ़रमाता है।''

(75)....नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''औरतों को जनाज़े के पीछे चलने की उजरत लेना जाइज़ नहीं।''

हम में से नहीं :

(76)....सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''वोह हम में से नहीं (या'नी हमारे त़रीक़े पर नहीं) जो अपने मुंह पर त़मांचे मारे, **गिरेबान चाक** करे और ज़मानए जाहिलिय्यत की त़रह़ वावेला मचाए।

﴾14﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ؕ وَاِنَّهَا لَكَبِيْرَةٌ اِلَّا عَلَى الْخٰشِعِيْنَ ۙ﴿۴۵﴾

(پ ۱، البقرۃ:۴۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और सब्र और नमाज़ से मदद चाहो और बेशक नमाज़ ज़रूर भारी है मगर उन पर (नहीं) जो दिल से मेरी त़रफ़ झुकते हैं।*

शो'ले, पहलूओं को खा डालेंगे :

(77).... शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : ''**पुल सिरात़** जहन्नम पर इस त़रह़ रखा जाएगा जिस त़रह़ नह्र के दाएं और बाएं किनारे पर पुल रखा जाता है। अगर (गुज़रने वाला) मुसलमान नमाज़ी हुवा तो उस की दाईं जानिब एक पर्दा ह़ाइल हो जाएगा और अगर मुसीबतों और आफ़ात पर सब्र करने वाला भी

www.dawateislami.net

हुवा तो उस की बाईं जानिब भी एक पर्दा हाइल हो जाएगा और अगर न नमाज़ी हुवा न साबिर तो **पुल सिरात़** उ़बूर करते वक़्त जहन्नम के शो'ले उस के पहलूओं को खा डालेंगे। तुम सब्र व नमाज़ से मदद त़लब करो ताकि तुम से आग के शो'ले दूर कर दिये जाएं।"

साबिरीन के लिये उख़रवी इन्आ़मात :

(78)....सरकारे वाला तबार, हम बेकसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ियामत के दिन जब मुनादी निदा करेगा कि "कौन है जिस का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर क़र्ज़ है ?" तो मख़्लूक़ कहेगी : "ऐसा कौन है जिस का क़र्ज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर हो ?" फ़िरिश्ते कहेंगे : "वोह जिसे (दुन्या में) ऐसी मुसीबत में मुब्तला किया गया जिस से उस का दिल ग़मगीन हुवा, आंखों से आंसू बहे लेकिन उस ने सवाब की उम्मीद पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये सब्र किया, आज वोह खड़ा हो जाए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अपना अज्र ले ले।"

चुनान्चे, (दुन्या में) मुसीबत व आफ़ात में मुब्तला होने वाले बहुत से लोग खड़े हो जाएंगे। फ़िरिश्ते कहेंगे : "**दा'वा बिग़ैर दलील के मो'तबर नहीं होता,** तुम अपने आ'माल नामे हमें दिखाओ।" फिरिश्ते आ'माल नामे देखेंगे तो जिस के नामए आ'माल में (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को नाराज़ करने वाला) गुस्सा और फ़ोह्श कलाम पाएंगे उस से कहेंगे : "चल बैठ जा ! तू सब्र करने वालों में से नहीं।" इसी त़रह़ जब औ़रत के नामए आ'माल में गुस्सा करना पाएंगे तो उसे भी उन लोगों में से वापस भेज देंगे, साबिर मर्दों और साबिर औ़रतों को लेंगे और उन्हें अ़र्श के नीचे ले जा कर बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में अ़र्ज़ करेंगे : "ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! येह तेरे साबिर बन्दे हैं।"

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : "इन को **शजरतुल बल्वा** (जन्नत में एक दरख़्त का नाम है) के पास ले जाओ।" वोह उन्हें उस दरख़्त की त़रफ़ ले जाएंगे जिस की जड़ सोने की और पत्ते चांदी के होंगे और उस का साया इतना वसीअ़ होगा कि एक घुड़ सुवार उस के नीचे **100** साल तक चलता रहे। सब्र करने वाले उस के साए में बैठ जाएंगे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ यके बा'द दीगरे हर मर्द व औ़रत पर तजल्ली फ़रमाएगा और उन से इस त़रह़ इरशाद फ़रमाएगा जैसे कोई दोस्त अपने दोस्त से गुफ़्तगू करता है : चुनान्चे, इरशाद फ़रमाएगा :

ऐ मेरे साबिर बन्दो ! मैं ने तुम्हें आज़माइश में इस लिये नहीं डाला था कि तुम मेरे नज़दीक अदना थे बल्कि इस लिये कि तुम्हें अपनी बारगाह में बुज़ुर्गी दूं, मैं ने चाहा कि दुन्या में तुम्हें आज़माइश में डाल कर तुम्हारे गुनाहों को मिटा दूं और जिन दरजात तक तुम अपने आ'माल के ज़रीए़ नहीं पहुंच सकते थे (मुसीबत में मुब्तला कर के) तुम्हें वोह बुलन्द दरजात अ़त़ा कर दूं। तुम ने मेरी रिज़ा की ख़ात़िर सब्र किया और मुझ से ह़या की और मेरे फ़ैसले पर ग़ुस्से का इज़हार नहीं किया तो आज मैं न तुम्हारे लिये मीज़ान रखूंगा और न तुम्हारे आ'माल नामों को खोलूंगा।

﴿15﴾

اِنَّمَا یُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَیْرِ حِسَابٍ ﴿۱۰﴾ (پ۲۳، الزمر: ۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *साबिरों ही को उन का सवाब भर पूर दिया जाएगा बे गिनती।*

लिहाज़ा मैं तुम से ह़िसाब नहीं लूंगा। फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़ुक़रा से इस त़रह़ इरशाद फ़रमाएगा : **"ऐ मेरे फ़ुक़रा बन्दो !**

www.dawateislami.net

मैं ने तुम्हें फ़क़्र में तुम्हारी इज़्ज़त कम करने के लिये मुब्तला न किया था और न ही मेरे नज़दीक दुन्या (के मालो दौलत) की कुछ अहम्मिय्यत व इज़्ज़त है और मैं ने येह लिख दिया है कि जो कोई दुन्या की किसी चीज़ का मालिक हुवा, मैं उस से उस का हिसाब लूंगा और उस से पूछूंगा कि उसे कहां से कमाया और कहां ख़र्च किया ? (ऐ गुरौहे फुक़रा !) मैं ने तुम्हारे लिये फ़क़्र को पसन्द किया ताकि तुम से हिसाब आसानी से लिया जाए और तुम्हें पूरा पूरा अज्रो सवाब दिया जाए और जिस ने दुन्या में तुम्हें एक घूंट पानी पिलाया, एक लुक़्मा ही खिलाया या फटा पुराना कपड़ा ही पहनाया वोह आज (क़ियामत के दिन) तुम्हारी **शफ़ाअ़त** में है।" *(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें भी अपने पसन्दीदा बन्दों में शामिल फ़रमाए। आमीन)*

बच्चे की मौत पर सब्र का इन्आ़म :

फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस औ़रत से जिस का बच्चा फ़ौत हो गया था इस त़रह़ इरशाद फ़रमाएगा : "**ऐ मेरी बन्दी** ! मैं तेरे बच्चे की मौत का फ़ैसला लौह़े मह़फ़ूज़ में कर चुका था और जब मैं ने उस की रूह़ क़ब्ज़ की तो तेरे दिल ने जज़्अ़ व फ़ज़्अ़ न की और न ही तेरा दिल तंग हुवा तो सुन ! आज मेरी रिज़ा व ख़ुशनूदी की तुझे ख़ुश ख़बरी हो और तुझे अपने बेटे के साथ ऐसे ज़िन्दगी वाले घर या'नी जन्नत में इकठ्ठा कर दिया गया जहां न मौत है और न ही ग़म व मलाल और ऐसे मक़ाम में कि जहां से कभी निकलना नहीं।"

क़ियामत में झन्डे लहराए जाएंगे :

फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ नाबीनाओं और कोढ़, जुज़ाम और हर त़रह़ की बीमारी वालों पर भी लुत़्फ़ो करम फ़रमाएगा और वोह अपना अज्र पा कर इन्तिहाई ख़ुश होंगे उन के लिये ऐसे झन्डे होंगे जैसे हुकमा व उमरा के होते हैं। तो जिस ने एक बला (या'नी

www.dawateislami.net

मुसीबत) पर सब्र किया होगा उस के लिये एक झन्डा लहराया जाएगा और जिस ने दो क़िस्म की बलाओं पर सब्र किया होगा उस के लिये दो झन्डे और जिस ने तीन क़िस्म की मुसीबतों पर सब्र किया होगा उस के लिये तीन झन्डे गाड़े जाएंगे और जो इस से ज़ियादा बलाओं में मुब्तला होगा उस के लिये इसी क़दर झन्डे बुलन्द किये जाएंगे। फ़िरिश्ते उन को उ़म्दा क़िस्म की सुवारियों पर सुवार कर के उन के सामने झन्डे लहराते हुवे जन्नत की त़रफ़ ले चलेंगे। लोग उन को देख कर कहेंगे : "क्या येह शुहदा और अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हैं ?" फ़िरिश्ते कहेंगे : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह शुहदा हैं न अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام बल्कि येह तो आ़म लोग हैं जिन्हों ने **दुन्या के मसाइब पर सब्र किया** और आज के दिन नजात पा गए।"

लोग तमन्ना करेंगे : "काश ! हम भी मसाइबो आलाम में मुब्तला हुवे होते और हमारे गोश्त **कैंचियों** से काटे जाते ताकि हमारे लिये भी इन के साथ ह़िस्सा होता।" फिर जब वोह साबिर बन्दे जन्नत के पास पहुंच कर उस का दरवाज़ा खट खटाएंगे तो (ख़ाज़िने जन्नत) ह़ज़रते रिज़वान عَلَيْهِ السَّلَام आ कर पूछेंगे : "येह कौन हैं ? फ़िरिश्ते उन से कहेंगे : "दरवाज़ा खोलिये।" ह़ज़रते सय्यिदुना रिज़वान عَلَيْهِ السَّلَام इस्तिफ़्सार करेंगे : "इन का ह़िसाब किस वक़्त हुवा, इन्हों ने कब नजात पाई ह़ालांकि अभी तो चन्द लोग ही क़ब्रों से उठे हैं और अभी तक तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आ'माल नामे भी नहीं खुलवाए और न ही मीज़ान रखा है ?" मलाइका कहेंगे : "येह सब्र करने वाले हैं इन पर ह़िसाब नहीं। **ऐ रिज़वान** ! इन के लिये जन्नत का दरवाज़ा खोल दो ताकि येह चैनो सुकून के साथ अपने मह़ल्लात में बैठें।" तब ह़ज़रते रिज़वान عَلَيْهِ السَّلَام उन के

www.dawateislami.net

लिये जन्नत के दरवाज़े खोलेंगे, तो वोह अपने जन्नती घरों में दाख़िल हो जाएंगे। ख़ुद्दाम कलिमा पढ़ते और तक्बीर कहते हुवे ख़ुशी व मसर्रत से उन का इस्तिक़बाल करेंगे और वोह **500** साल तक जन्नत के बुलन्द दरजात पर फ़ाइज़ रहेंगे और मख़्लूक़ के हिसाब से फ़ारिग़ होने तक उन का मुशाहदा करते रहेंगे, तो सब्र करने वालों के लिये ख़ुश ख़बरी है।''

सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कौन सी चीज़ मीज़ान को भारी कर देगी ?'' आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''**सब्र** और जिस का सब्र जितना ज़ियादा होगा उस के लिये पुल सिरात़ उतना ही चौड़ा होगा।''

पुल सिरात़ आ'माल के मुत़ाबिक़ होगा :

(**79**)....ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : ''हर इन्सान **पुल सिरात़** को बाल से ज़ियादा बारीक और तल्वार से ज़ियादा तेज़ न पाएगा सिर्फ़ हलाक होने वाले ही पुल सिरात़ को इस ह़ालत में पाएंगे। यक़ीनन लोग पुल सिरात़ को अपने आ'माल के मुत़ाबिक़ पाएंगे मसाइब पर सब्र और इबादात पर इस्तिक़ामत के मुत़ाबिक़ किसी के लिये तो वोह जज़ीरे की चौड़ाई के बराबर होगा, किसी के लिये एक हाथ के बराबर और किसी के लिये चार उंगल के बराबर होगा जब कि किसी के लिये बाल से ज़ियादा बारीक और तल्वार से ज़ियादा तेज़ होगा और येह उसी के लिये होगा जिस ने सब्र को इख़्तियार न किया होगा, जिस में सब्र नहीं उस का कोई दीन नहीं।''

www.dawateislami.net

अ़र्श के नीचे सोने का घर :

(80)....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : जब कोई बच्चा फ़ौत हो जाता है और मलाइका उस की रूह को ले कर (आस्मान की त़रफ़) बुलन्द होते हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब कुछ जानने के बा वुजूद इस्तिफ़्सार फ़रमाता है : "ऐ मेरे फ़िरिश्तो ! जब तुम ने मेरी बन्दी से उस का बच्चा, उस के दिल का टुकड़ा लिया तो मेरी बन्दी को कैसा पाया ?" फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : "ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ वोह तेरी आज़माइश पर **राज़ी** और तेरी ने'मतों का शुक्र अदा कर रही थी ।" तो **अल्लाह** तबारक व तआ़ला फ़रमाता है : "मेरी बन्दी के लिये मेरे अ़र्श के नीचे सोने का घर बनाओ और उस का नाम **बैतुस्सब्र** रखो ।" और एक दूसरी ह़दीस में है : "उस घर का नाम **बैतुल ह़म्द** रखो ।"

नाबीनाओं के लिये ख़िलअ़ते ख़ास :

(81)....हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने अपने एक बच्चे के मर जाने पर सब्र किया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये उस के नामए आ'माल में उ़हुद पहाड़ के वज़्न के बराबर अज्र लिख देता है और जिस ने दो बच्चों के मर जाने पर सब्र किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (क़ियामत में) उसे ऐसा नूर अ़त़ा फ़रमाएगा जो उस के आगे आगे होगा और महशर की ज़ुल्मत व तारीकी में उस के लिये रोशनी करेगा और जिस ने अपने तीन बच्चों के मर जाने पर सब्र किया तो जहन्नम को उ़बूर करते वक़्त उस के लिये इस के दरवाज़े बन्द कर दिये जाएंगे और जिस ने अपनी एक आंख के ज़ाएअ़ होने पर सब्र किया तो वोह शख़्स सब से पहले

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का दीदार करेगा और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ नाबीनाओं को खिल्अ़ते ख़ास से नवाज़ेगा और तमाम मुसीबत ज़दों से पहले उन के लिये झन्डे लहराए जाएंगे और जिस ने अपनी दोनों आंखों के ज़ाएअ़ होने पर सब्र किया होगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये अ़र्श के नीचे घर बनाएगा जिस में वोह ने'मतें होंगी जिन की कोई ता'रीफ़ नहीं कर सकता।

और जो नमाज़ के एहतिमाम के लिये वुज़ू व ग़ुस्ल की मशक़्क़त पर सब्र करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये उस के जिस्म के हर बाल के इ़वज़ एक नेकी लिख देगा और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस वुज़ू और ग़ुस्ल में टपकने वाले पानी के हर क़त्रे से एक फ़िरिश्ता पैदा फ़रमाता है जो क़ियामत तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ करता रहेगा और उस का अज्र उस (वुज़ू और ग़ुस्ल करने वाले) के लिये होगा और जिस ने लोगों के तक्लीफ़ देने पर सब्र किया अल्लाह तबारक व तआ़ला उस से जहन्नम और उस के धुंवें की तक्लीफ़ को रोक देगा और जहन्नम का एक दरवाज़ा "**बाबुत्तशफ़्फ़ी**" है इस में वोही दाख़िल होगा जिस ने अपने ग़ुस्से पर क़ाबू न पाया और जिस ने अपना ग़ुस्सा दबाया और अपना ह़क़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये छोड़ दिया वोह जब पुल सिरात़ से गुज़रेगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर वोह दरवाज़ा बन्द कर देगा और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इसे अज़िय्यत देने वाले की नेकियां इस के नामए आ'माल में मुन्तक़िल फ़रमा देगा और इस के गुनाह उस के नामए आ'माल में मुन्तक़िल कर देगा और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क्या ही अच्छा फ़ैसला फ़रमाने वाला है।

और जो अपने छोटे बच्चों की मौत पर सब्र करे और रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये اِنَّالِلّٰهِ وَاِنَّاۤاِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ،لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّابِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْم

www.dawateislami.net

(या'नी हम **अल्लाह** के माल हैं और हम को उसी की त़रफ़ फिरना, कोई त़ाक़त है न कुव्वत मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मदद से जो सब से बुलन्द अ़ज़मत वाला है।) कहे, मलाइका उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से राज़ी हो जाता है और उस छोटे बच्चे को बाप के लिये वक़्त पर काम आने वाला बना देता है जो उसे क़ियामत के बड़ी प्यास वाले दिन ह़ौज़ पर सैराब करेगा।"

रेशमी जुब्बे और नूरी रूमाल :

(82)....शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लिशान है : "क़ियामत के दिन लोग क़ब्रों से भूके प्यासे उठेंगे तो जिस शख़्स ने गर्मी के दिनों में नफ़्ली रोज़े रखे होंगे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत के ख़ाने और जन्नती मशरूबात भेजेगा, उस का रोज़ा आएगा और ह़ौज़ से लोगों को हटाते हुवे जाम भर भर कर उसे ख़ूब सैराब करेगा और जिस शख़्स का बच्चा नाबालिग़ी की ह़ालत में फ़ौत हो गया और उस ने इस पर सब्र किया होगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को नाराज़ करने वाले अल्फ़ाज़ बोल कर उस से जंग न की होगी तो वोह बच्चा (अपने वालिद की मग़फ़िरत) के लिये झगड़ेगा और उस को सैराब करेगा। बेशक मुसलमानों के तमाम बच्चे ह़ौज़ के इर्द गिर्द हूरो ग़िलमां के साथ होंगे। उन पर रेशमी जुब्बे और नूरी रूमाल होंगे, उन के हाथों में चांदी की सुराह़ियां और सोने के पियाले होंगे और वोह अपने वालिदैन को सैराब करेंगे, मगर वोह शख़्स जिस ने अपने बच्चों की मौत पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से शिकवा किया होगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के बच्चों को उसे सैराब करने की इजाज़त नहीं देगा।"

जन्नत के दरवाज़े पर चीख़ :

एक रिवायत में है : "मुसलमानों के बच्चे क़ियामत के दिन मौक़िफ़ (या'नी मैदाने महशर) में इकठ्ठे होंगे। उस वक़्त

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़िरिश्तों से फ़रमाएगा : "इन्हें जन्नत में ले जाओ।" जब वोह जन्नत के दरवाज़े पर खड़े होंगे तो ख़ाज़िने जन्नत हज़रते रिज़वान عَلَيْهِ السَّلَام कहेंगे : "मरहबा ! ख़ुश आमदीद ! ऐ मुसलमानों के बच्चो ! तुम सब जन्नत में दाख़िल हो जाओ तुम पर कोई हिसाब नहीं।" वोह पूछेंगे : "हमारे मां-बाप कहां हैं ?" ख़ाज़िने जन्नत عَلَيْهِ السَّلَام कहेंगे : "तुम्हारे वालिदैन तुम्हारी तरह नहीं हैं इस लिये कि उन पर गुनाह, मुआख़ज़े (या'नी लोगों के मुतालबे) और बुराइयां हैं, उन से इन अफ़्आल का हिसाब व मुआख़ज़ा होगा।" बच्चे कहेंगे : "उन्हों ने तो हमारे मर जाने पर सब्र किया था ताकि आज के दिन उन्हें अज्रो सवाब अ़ता किया जाए।" ख़ाज़िने जन्नत عَلَيْهِ السَّلَام इस पर कोई जवाब न देंगे, तो वोह जन्नत के दरवाज़े पर खड़े हो कर एक चीख़ मारेंगे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब कुछ जानने के बा वुजूद फ़रमाएगा : "येह चीख़ कैसी है ?" तो मलाइका अ़र्ज़ करेंगे : "ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ मुसलमानों के बच्चे कहते हैं कि हम अपने वालिदैन के बिग़ैर जन्नत में नहीं जाएंगे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "इन्हें इन के वालिदैन के साथ जन्नत में दाख़िल होने दो।" चुनान्चे, बच्चे अपने अपने वालिदैन का हाथ पकड़ कर जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे।"

ख़ुश ख़बरी है सब्र करने वालों के लिये और **ख़राबी** है बे सब्री करने वालों के लिये कि वोह कैसे अपनी बे सब्री और कम हिम्मती से अज्रो सवाब को खो देते हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें अपनी रिज़ा वाले कामों की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और हमें अपने फ़ैसलों पर शिक्वा व शिकायत से बचाए और हमें अपने फ़ज़्लो एह़सान से अपना मुह़िब्ब और दोस्त बनाए। उस की बारगाह में दुआ़ है :

www.dawateislami.net

﴿16﴾

رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا ۫ وَ اِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَ تَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿۲۳﴾ (پ۸،الاعراف:۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब हमारे हम ने अपना आप बुरा किया तो अगर तू हमें न बख़्शे और हम पर रहूम न करे तो हम ज़रूर नुक़्सान वालों में हुवे।

सातवां बाब : ज़कात[1] अदा न करने वाले की सज़ा

﴿17﴾ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتُوا الزَّكٰوةَ (پ ۱، البقرة:۴۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो।

﴿18﴾

اَلَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَ مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿۳﴾ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَ مَغْفِرَةٌ وَّ رِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿۴﴾ (پ ۹،الانفال:۳،۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो नमाज़ क़ाइम रखें और हमारे दिये से कुछ हमारी राह में ख़र्च करें येही सच्चे मुसलमान हैं इन के लिये दरजे हैं इन के रब के पास और बख़्शिश है और इ़ज़्ज़त की रोज़ी।

माल आग की सलाख़ें बन जाएगा :

(83)....सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "मुसलमान जब

(1)....ज़कात के फ़ज़ाइल व फ़वाइद और अह़काम व मसाइल जानने के लिये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे "**मक्तबतुल मदीना**" की मत़बूआ़ **149** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**फ़ैज़ाने ज़कात**" का मुत़ालआ़ फ़रमा लीजिये।

www.dawateislami.net

मालिके निसाब हो जाए और सोने का निसाब बीस या'नी **20** मिस्क़ाल (या'नी साढ़े सात तोले या'नी तक़रीबन **87** ग्राम **48** मिली ग्राम सोना) है तो उस पर लाज़िम है कि वोह निस्फ़ मिस्क़ाल (या'नी अढ़ाई फ़ीसद या'नी तक़रीबन **2** ग्राम **187** मिली ग्राम सोना) ज़कात अदा करे और जो चांदी के दो सो दिरहम का मालिक हो जाए तो उस पर उस की ज़कात वाजिब है जब कि वोह उस के क़ब्ज़े में एक साल से हों और इस पर साल गुज़र जाए तो इस में **ज़कात वाजिब** है और अगर वोह इस माल की ज़कात अदा नहीं करता तो (क़ियामत के दिन) सारा माल आग की सलाख़ें बन जाएगा।''

﴿19﴾ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۙ﴿۳۴﴾ يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ ؕ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ﴿۳۵﴾

(پ۱۰، التوبہ: ۳۴، ۳۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और वोह कि जोड़ कर रखते हैं सोना और चांदी और इसे* **अल्लाह** *की राह में ख़र्च नहीं करते उन्हें ख़ुश ख़बरी सुनाओ दर्दनाक अ़ज़ाब की जिस दिन वोह तपाया जाएगा जहन्नम की आग में फिर उस से दाग़ेंगे उन की पेशानियां और करवटें और पीठें येह है वोह जो तुम ने अपने लिये जोड़ कर रखा था अब चखो मज़ा इस जोड़ने का।*

अहले महशर कांप उठेंगे :

(**84**)....हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''जो मालिके निसाब हुवा और ज़कात

www.dawateislami.net

अदा न की क़ियामत के दिन उस का माल एक अज़दहे की शक्ल में आएगा। उस की आंखों में आग के अंगारे होंगे और उस के दांत लोहे के होंगे। वोह ज़कात अदा न करने वाले के पीछे दौड़ेगा और उस से कहेगा : "अपना बुख़्ल करने वाला दायां हाथ मुझे दे ताकि मैं उसे काट कर जुदा कर दूं।" तो वोह भागेगा, अज़दहा कहेगा : "गुनाहों (की सज़ा) से भाग कर जाने का ठिकाना कहां ?" चुनान्चे, वोह उसे पकड़ कर उस का दायां हाथ अपने दांतों से काट कर निगल जाएगा, फिर हाथ दोबारा आ जाएगा (जैसा कि पहले था) फिर अज़दहा उस के बाएं हाथ को काट खाएगा और जब भी वोह अपने दांतों से उसे काटेगा तो वोह दर्द से ऐसी चीख़ मारेगा जिस से **अहले महशर कांप उठेंगे**। वोह अज़दहा उस के हाथ को काट कर खाता रहेगा और वोह हाथ भी दोबारा आता रहेगा यहां तक कि वोह कटे हुवे हाथों के साथ अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में खड़ा होगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का हिसाब सख़्ती से लेगा। फिर उस को जहन्नम का हुक्म सुना दिया जाएगा। वोह अज़दहे से पूछेगा : "तू कौन है ?" वोह जवाब देगा : "**मैं तेरा माल हूं** जिस की ज़कात अदा करने में तू बुख़्ल किया करता था तो आज मैं तेरा दुश्मन हूं, मैं तुझे हमेशा अ़ज़ाब देता रहूंगा यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे मुआ़फ़ कर दे और फ़ुक़रा (अपने ह़क़ के मुआ़मले में) तुझ से चश्मपोशी कर लें।" फिर उसे सर के बल औंधे मुंह जहन्नम में डाल दिया जाएगा।

आग के सींग :

(**85**)....हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "उस ज़ात की

www.dawateislami.net

क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! जो भी बकरियों, गायों और ऊंटों का मालिक बना और उस ने उन की ज़कात अदा न की तो क़ियामत के दिन वोह जानवर जैसे दुन्या में थे उस से ज़ियादा ताक़तवर और क़वी हो कर आएंगे। उन के सींग आग के होंगे वोह अपने (ज़कात अदा न करने वाले) मालिक को अपने सींगों से टक्करें मारेंगे और अपने नाख़ुनों से नौचेंगे यहां तक कि उस का पेट चाक कर डालेंगे और उस की पीठ छील देंगे वोह फ़रयाद करेगा मगर कोई उस की फ़रयाद को न पहुंचेगा। फिर वोह जानवर दरिन्दों और भेड़ियों की शक्ल में उसे जहन्नम में अ़ज़ाब देंगे।"

सदक़ा किया हुवा मेंढा :

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मैं आ़लमे शबाब (या'नी जवानी) में जहालत की वजह से ज़कात अदा नहीं करता था। मेरे पास काफ़ी भैड़ बकरियां थीं, जिन की मैं ज़कात अदा नहीं करता था। एक दिन किसी फ़क़ीर ने मुझ से ज़रूरत व ह़ाजत बयान की तो मैं ने उसे एक मेंढा दे दिया। उस रात जब मैं सोया तो ख़्वाब में देखा कि मेरी तमाम भैड, बकरियां मेरी त़रफ़ आ कर मुझे सींगों से मार रही हैं और मैं रो रहा हूं और भाग भी नहीं सकता और न वहां किसी मदद करने वाले को पाता हूं। इतने में वोही मेंढा आ गया जिसे मैं ने फ़क़ीर पर सदक़ा किया था। वोह उन को मुझ से हटाने लगा। जब भी उस रेवड़ में से कोई जानवर मुझे सींग मारने के लिये आगे बढ़ता तो वोह मेंढा सामने खड़ा हो जाता और उसे सींग मार मार कर मुझ से दूर कर देता लेकिन चूंकि वोह ज़ियादा थे और येह अकेला, इस लिये वोह इस पर ग़ालिब आ जाते क़रीब था कि वोह मुझे हलाक कर देते इसी ह़ालत में मेरी

www.dawateislami.net

आंख खुल गई और ख़ौफ़ से मेरा दिल टुकड़े टुकड़े हुवा जा रहा था। मैं ने उसी वक़्त अ़ज़्म कर लिया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ज़रूर इस सदक़ा किये हुवे मेंढे में इज़ाफ़ा करूंगा। चुनान्चे, मैं ने अपने जानवरों में से दो तिहाई सदक़ा कर दिया और **ज़कात** अदा न करने से तौबा कर ली और बेशक मैं ने सदक़ा न की हुई बकरियों की अपने साथ अ़दावत और सदक़ा की हुई बकरियों का अपने साथ अ़जीब मुआ़मला देखा।"

दय्यूस पर जन्नत ह़राम है :

(**86**)....नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जन्नत के दरवाज़े पर लिखा हुवा है कि तू **बख़ील, ज़कात** अदा न करने वाले और **दय्यूस** पर ह़राम है।" सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दय्यूस कौन होता है ?" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो अपने अहल की त़रफ़ से बदकारी को जानने के बा वुजूद ख़ामोश रहे।"

आस्मानों में नाम :

(**87**)....नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "जो अपने माल की पूरी पूरी **ज़कात ख़ुश दिली से अदा करता है** तो आस्माने दुन्या में उस का नाम **करीम**, दूसरे आस्मान में **जव्वाद**, तीसरे में **मुत़ीअ़**, चौथे में **सख़ी**, पांचवें में **मक़्बूल**, छटे में **मह़फ़ूज़**, सातवें में **मग़फ़ूर** (या'नी जिस के गुनाह बख़्श दिये गए) और अ़र्श पर उस का नाम **ह़बीबुल्लाह** (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का दोस्त) रखा जाता है।

www.dawateislami.net

और जिस ने अपने **माल की ज़कात अदा न की** तो आस्माने दुन्या में उस का नाम **बख़ील** (या'नी कन्जूस), दूसरे आस्मान में **शहीह़** (या'नी इन्तिहाई ह़रीस), तीसरे में **मुमसिक** (या'नी सदक़ा रोकने वाला) चौथे में **मफ़्तून** (या'नी फ़ितने में मुब्तला), पांचवें में **आ़सी** (या'नी नाफ़रमान), छटे में **मनूअ़** या'नी जिस के लिये न माल में बरकत हो न ही नेकी से कुछ ह़िस्सा हो और सातवें आस्मान में उस का नाम **मत़रूद** (या'नी ठुकराया हुवा) रखा जाता है और उस की नमाज़ भी मर्दूद है कि मक़्बूल न होगी बल्कि उस के मुंह पर मार दी जाएगी।"

6 दिन की ज़िन्दगी 70 साल कर दी गई :

मन्क़ूल है कि एक ख़ूब सूरत नौजवान ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के पास सलाम करने ह़ाज़िर हुवा, उसी रात उस की शादी हुई थी। उस वक़्त मलकुल मौत ह़ज़रते सय्यिदुना इ़ज़राईल عَلَیْہِ السَّلَام भी आप عَلَیْہِ السَّلَام के पास मौजूद थे। उन्हों ने आप عَلَیْہِ السَّلَام से अ़र्ज़ की : "ऐ सय्यिदुना दावूद عَلَیْہِ السَّلَام क्या आप इस नौजवान को जानते हैं?" आप عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया : "हां ! येह मोमिन नौजवान मुझ से मह़ब्बत करता है और येह उस वक़्त तक अपने घर में दाख़िल होना पसन्द नहीं करता जब तक मुझे देख न ले और सलाम न कर ले।" ह़ज़रते मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : "ऐ दावूद عَلَیْہِ السَّلَام इस की उ़म्र के सिर्फ़ छे दिन बाक़ी रह गए हैं।" इस बात पर ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ग़मगीन हुवे। मगर सात महीने गुज़र गए और उस नौजवान को मौत न आई। फिर जब मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام, ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे तो आप عَلَیْہِ السَّلَام ने उन से फ़रमाया : "तुम

www.dawateislami.net

ने कहा था कि इस की उम्र के सिर्फ़ **छे दिन** बाक़ी हैं ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : जी हां, लेकिन जब छे दिन गुज़रे और मैं ने इस की रूह क़ब्ज़ करना चाही तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ मलकूल मौत ! मेरे फुलां बन्दे को छोड़ दे इस लिये कि जब येह दावूद عَلَيْهِ السَّلَام के यहां से निकला था तो इस ने एक लाचार व मोहताज फ़क़ीर को देखा और उसे अपनी ज़कात में से कुछ माल दे दिया। फ़क़ीर ने खुश हो कर उस के लिये लम्बी उम्र की दुआ की और येह कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत में हज़रते दावूद عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का रफ़ीक़ बनाए। लिहाज़ा मैं ने राज़ी हो कर इन छे दिनों को **60** साल में बदल दिया और इस पर मज़ीद **10** साल बढ़ा दिये हैं तुम इस की रूह इस मुद्दत के पूरा होने तक क़ब्ज़ न करना और मैं ने लिख दिया है कि येह नौजवान जन्नत में दावूद(عَلَيْهِ السَّلَام) का रफ़ीक़ होगा।"

﴿पाकी है उसे जो करीम, बहुत ज़ियादा देने वाला है।﴾

ज़कात अदा न करने वाले पर 70 ला'नतें :

(**88**)....सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "हर दिन आस्मान से **72** ला'नतें नाज़िल होती हैं। इन में से एक यहूदियों पर दूसरी नसारा पर और बाक़ी **70** ला'नतें **ज़कात** अदा न करने वालों पर नाज़िल होती हैं। हर वोह माल जिस की ज़कात अदा की जाती है। उस का अदा करने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ह़बीब बन जाता है और जब वोह मर जाता है और माल वुरसा के क़ब्ज़े में चला जाता है। अब ख़्वाह वुरसा उस माल की ज़कात अदा करें या न करें, मलाइका उस मरने वाले के लिये क़ियामत तक नेकियां लिखते

www.dawateislami.net

रहते हैं और वोह अ़ज़ाबे क़ब्र और अ़ज़ाबे जहन्नम से नजात पा कर जन्नत में दाख़िल होगा और हर वोह माल जिस की ज़कात अदा न की जाए वोह माल और उस का मालिक ख़बीस हैं और इस का गुनाह क़ियामत तक साहिबे माल को होता रहेगा अगर्चे वोह माल ऐसे वुरसा के पास चला जाए जो उस की ज़कात अदा करें।

और जो बन्दा अपने **माल की ज़कात** ख़ुश दिली से अदा करता है तो वोह माल क़ियामत के दिन नूर का हार बन कर उस की गर्दन में आ जाएगा और वोह नूर मोअमिनीन पर इस क़दर रोशनी करेगा कि वोह उस की रोशनी में पुल सिरात़ से गुज़र कर जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे और जो कोई अपने माल की **ज़कात अदा नहीं करता** तो वोह माल आग का ऐसा त़ौक़ बन कर उस (या'नी साहिबे माल) की गर्दन में आ पड़ेगा कि अगर उसे दुन्या में रख दिया जाए तो सारी दुन्या जल कर राख हो जाए, पहाड़ रैज़ा रैज़ा हो जाएं और समन्दर ख़ुश्क हो जाएं।"

हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब से उस की पनाह मांगते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से क़बूलिय्यत, मग़फ़िरत और जहन्नम से नजात का सुवाल करते हैं। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

❁❁❁❁❁❁

इल्म सीखने से आता है

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم :

"इल्म सीखने से ही आता है और फ़िक़्ह ग़ौरो फ़िक्र से ह़ासिल होती है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे दीन में समझ बूझ अ़त़ा फ़रमाता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इल्म वाले हैं।" (المعجم الکبیر، ج۱۹، ص۵۱۱، الحدیث: ۷۳۱۲)

www.dawateislami.net

आठवां बाब : क़ातिल और क़त्ए रेह्मी करने वाले की सज़ा

﴾20﴿ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

وَمَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآؤُهٗ جَهَنَّمُ خٰلِدًا فِيْهَا وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهٗ وَاَعَدَّ لَهٗ عَذَابًا عَظِيْمًا ﴿۹۳﴾

(پ ۵،النساء: ۹۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो कोई मुसलमान को जान बूझ कर क़त्ल करे तो उस का बदला जहन्नम है कि मुद्दतों उस में रहे और अल्लाह ने उस पर ग़ज़ब किया और उस पर ला'नत की और उस के लिये तय्यार रखा बड़ा अ़ज़ाब।*

ख़ुद कुशी का अ़ज़ाब :

(89)....शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "सब गुनाहों से बड़ा गुनाह किसी को नाह़क़ क़त्ल करना है। जिस ने छुरी से ख़ुदकुशी की मलाइका जहन्नम की वादियों में उस को हमेशा हमेशा वोह छुरी घोंपते रहेंगे। वोह हमेशा जहन्नम में रहेगा और मेरी शफ़ाअ़त से मायूस रहेगा और अगर उस ने बुलन्द जगह से अपने आप को गिरा कर ख़ुदकुशी की होगी तो फ़िरिश्ते भी हमेशा हमेशा उस को जहन्नम की वादियों में बुलन्द चोटी से गिराते रहेंगे और क़त्ल करने वालों को आग के कुंवों में क़ैद किया जाएगा और अगर रस्सी से लटक कर ख़ुदकुशी की होगी तो हमेशा के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मायूस आग की शाख़ों में लटका रहेगा। अगर कोई किसी जान को नाह़क़ क़त्ल करे तो येह खुली गुमराही है। फ़िरिश्ते उस को आग की छुरियों से ज़ब्ह़ करते रहेंगे जब भी वोह उस को ज़ब्ह़ करेंगे तो उस के ह़ल्क़ से तारकोल से भी ज़ियादा सियाह ख़ून बहेगा फिर वोह जैसा था वैसा ही हो

www.dawateislami.net

जाएगा और फिर ज़ब्ह किया जाएगा, येह सज़ा उस को हमेशा हमेशा दी जाएगी और क़ातिलों को आग के कुंवों में क़ैद किया जाएगा। वोह उन में हमेशा रहेंगे।"

(نَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ ذٰلِك या'नी हम इस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगते हैं)

इसी त़रह़ उस औ़रत को सज़ा दी जाएगी जो अपने पेट के बच्चे को (बिला इजाज़ते शरई) साक़ित़ कर दे (या'नी गिरा दे)।

﴿21﴾ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَ اِذَا الْمَوْءٗدَةُ سُىِٕلَتْۙ(۸) بِاَیِّ ذَنْۢبٍ قُتِلَتْۚ(۹) (پ۳۰،تکویر:۸،۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जब ज़िन्दा दबाई हुई से पूछा जाए किस ख़ता पर मारी गई ?*

50 हज़ार साल तक अ़ज़ाब :

(**90**)....सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मत़रूह़ (या'नी गिराया हुवा बच्चा) क़ियामत के दिन आएगा, उस की आवाज़ बिजली की कड़क की मिस्ल होगी। वोह फ़रयाद करेगा : "मैं मज़लूम हूं।" फिर वोह अपनी मां को ले कर आएगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ करेगा : "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ तू इस से पूछ इस ने मुझे क्यूं क़त्ल किया था ?" **अल्लाह** तबारक व तआ़ला उस की मां से फ़रमाएगा : "तू ने इस को क्यूं क़त्ल किया था। क्या तू येह समझती थी कि मैं इसे रिज़्क़ नहीं दूंगा ? बेशक मैं ने किसी भी जान का क़त्ले नाह़क़ ह़राम किया था।" (फिर फ़िरिश्तों से फ़रमाएगा) ऐ मेरे फ़िरिश्तो ! इस को (दोज़ख़ के निगरान फ़िरिश्ते) मालिक (عَلَيْهِ السَّلَام) के सिपुर्द कर दो ताकि वोह इसे "**जुब्बुल अह़ज़ान**" में क़ैद कर दें।" सख़्त मज़बूत

www.dawateislami.net

फ़िरिश्ते उस को पकड़ लेंगे क्यूंकि फ़िरिश्ते **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म की नाफ़रमानी नहीं करते येह तो वोही करते हैं जिस का इन्हें हुक्म दिया जाता है। फ़िरिश्ते उस औरत की गर्दन में तौक़ और ज़न्जीरें डाल कर मुंह के बल घसीटते हुवे जहन्नम की तरफ़ ले जाएंगे और हज़रते मालिक عَلَيْهِ السَّلَام उस को "**जुब्बुल अहज़ान**" में फेंक देंगे। येह आग से भरा एक गहरा कुंवां है। इस आग का नाम "**नारुल आबार**" है। जब जहन्नम सर्द होने पर आता है तो इस कुंवें का मुंह खोल दिया जाता है, जहन्नम इस की हरारत से फिर भड़कने लगता है। इस में दरिन्दे भेड़िये, सांप और बिच्छू हैं जो जहन्नमियों को काटते और डसते हैं और इस में अज़ाब के फ़िरिश्ते हैं, जिन के हाथों में आग के नेज़े हैं। वोह इन से क़ातिलों को घायल करते रहेंगे, उस औरत को इस गढ़े में **पचास हज़ार साल** तक अज़ाब दिया जाता रहेंगा यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के बारे में जो चाहेगा फ़ैसला फ़रमा देगा।"

हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ *के ग़ज़ब और अज़ाब से उस की पनाह मांगते हैं।*

चिड़या को अज़िय्यत देने पर अज़ाब :

(**91**)....ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक सब से बड़ा गुनाह उस जान को क़त्ल करना है जिस का क़त्ल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हराम फ़रमा दिया है और किसी जान को नाहक़ अज़िय्यत देना हलाल नहीं अगर्चे चिड़या ही हो कि अगर कोई शख़्स उस से खेला यहां तक कि वोह मर गई और उसे हाजत के लिये ज़ब्ह न किया तो वोह क़ियामत के दिन कानों को फाड़ देने वाली कड़क की मिस्ल आवाज़ से बारगाहे इलाही में अर्ज़ गुज़ार होगी :

www.dawateislami.net

ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! इस से पूछ कि इस ने बिला वजह मुझे अज़िय्यत क्यूं दी और मुझे क़त्ल क्यूं किया था ? **अल्लाह** तबारक व तआ़ला फ़रमाएगा : "मुझे मेरी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं तेरा ह़क़ ज़रूर दिलाऊंगा। और सुन लो ! कोई ज़ालिम मुझ से न बच सकेगा। मैं हर उस शख़्स को अ़ज़ाब दूंगा जिस ने नाह़क़ किसी जान को अज़िय्यत दी और मैं हर मज़लूम को ज़ालिम से पूरा पूरा बदला दिलाऊंगा।"

फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "मैं ही बदला देने वाला बादशाह हूं। मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! आज के दिन किसी पर ज़ुल्म न होगा और आज के दिन कोई ज़ालिम मुझ से न बच सकेगा अगर्चे एक त़मांचा हो या हाथ की मार हो या हाथ को मरोड़ा हो और मैं सींग वाली बकरी से बिग़ैर सींग वाली बकरी को भी बदला दिलाऊंगा और लकड़ी से ज़रूर पूछूंगा कि तू ने लकड़ी को ख़राश क्यूं लगाई ? और पथ्थर से ज़रूर पूछूंगा कि तू ने पथ्थर को तक्लीफ़ क्यूं दी ? और वोह शख़्स कि जिस पर मज़लूम का ह़क़ है उस वक़्त तक जन्नत में दाख़िल न होगा जब तक कि अपनी नेकियों से उस का ह़क़ अदा न कर दे और अगर उस के पास नेकियां न होंगी तो **मज़लूम के गुनाहों का बोझ** उस के सर डाल कर जहन्नम में डाल दिया जाएगा।"

(92)....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "सब से बड़ा गुनाह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ किसी को शरीक ठहराना और किसी जान को नाह़क़ क़त्ल करना है और जैसे मैं, मुशरिक की शफ़ाअ़त नहीं करूंगा इसी त़रह़ क़त्ले नाह़क़ करने वाले की भी शफ़ाअ़त नहीं करूंगा और जिस त़रह़ मुशरिक जहन्नम में हमेशा रहेगा इसी त़रह़ क़ातिल भी जहन्नम में हमेशा

www.dawateislami.net

रहेगा (अलबत्ता अगर क़ातिल का ख़ातिमा ईमान पर हुवा तो मुराद त़वील मुद्दत है) और जिस त़रह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुशरिकीन पर सख़्त ग़ज़ब फ़रमाएगा इसी त़रह़ क़ातिल पर भी ग़ज़बे शदीद फ़रमाएगा। और जिस त़रह़ क़ियामत के दिन मुशरिक पर ला'नत फ़रमाएगा इसी त़रह़ क़ातिल पर भी ला'नत फ़रमाएगा और जब क़ातिल पर **अल्लाह** तबारक व तआ़ला की ला'नत पड़ेगी तो वोह जहन्नम के मुख़्तलिफ़ त़बक़ात पर क़त्ल किया जाता रहेगा। यहां तक कि वोह जहन्नम के सब से निचले त़बक़े में धंस जाएगा और **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने जिस त़रह़ मुशरिकीन के लिये बड़ा अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है इसी त़रह़ क़ातिल के लिये भी बड़ा अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है।"

﴿22﴾ (इरशादे बारी तआ़ला है :)

وَمَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآؤُهٗ جَهَنَّمُ خٰلِدًا فِيْهَا وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهٗ وَاَعَدَّ لَهٗ عَذَابًا عَظِيْمًا ﴿۹۳﴾

(پ ۵، النساء: ۹۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो कोई मुसलमान को जान बूझ कर क़त्ल करे तो उस का बदला जहन्नम है कि मुद्दतों उस में रहे और* **अल्लाह** *ने उस पर ग़ज़ब किया और उस पर ला'नत की और उस के लिये तय्यार रखा बड़ा अ़ज़ाब।*

सिवाए उस क़ातिल के जो तौबा कर ले। चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :

﴿23﴾

وَالَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ يَلْقَ اَثَامًا ﴿۶۸﴾ يُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और वोह जो* **अल्लाह** *के साथ किसी दूसरे मा'बूद को नहीं पूजते और उस जान को जिस की* **अल्लाह** *ने हुरमत रखी नाह़क़ नहीं मारते और बदकारी नहीं करते और जो येह*

www.dawateislami.net

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَيَخْلُدْ فِيْهٖ مُهَانًا ﴿۶۹﴾ اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۷۰﴾

(پ۱۹، الفرقان: ۶۸ تا ۷۰)

काम करे वोह सज़ा पाएगा। बढ़ाया जाएगा उस पर अ़ज़ाब क़ियामत के दिन और हमेशा उस में ज़िल्लत से रहेगा मगर जो तौबा करे और ईमान लाए और अच्छा काम करे तो ऐसों की बुराइयों को **अल्लाह** *भलाइयों से बदल देगा और* **अल्लाह** *बख़्शने वाला मेहरबान।*

और अगर किसी औ़रत ने जान बूझ कर अपने बच्चे को **साक़ित** किया और फिर अपने गुनाह का ए'तिराफ़ करते हुवे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में आ़जिज़ी व इन्किसारी से गिड़गिड़ा कर तौबा कर ले तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की तौबा क़बूल फ़रमा लेता हैं क्यूंकि रब्बे ग़फ़ूरो रह़ीम عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है : ﴿24﴾

وَهُوَ الَّذِیْ یَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ

(پ۲۵، الشوریٰ: ۲۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और वोही है जो अपने बन्दों की तौबा क़बूल फ़रमाता (है)।*

और जनीन(1) (या'नी पेट का बच्चा) ज़ाएअ़ करने की दियत (या'नी ख़ून बहा) अगर सूरत बन चुकी हो तो **600** दिरहम

(1)....**''बहारे शरीअ़त''** जिल्द सिवुम, ह़िस्सा **18** के सफ़ह़ा **59** पर है : ''किसी ने किसी ह़ामिला औ़रत को ऐसा मारा या डराया या धमकाया या कोई ऐसा फ़े'ल किया जिस की वजह से ऐसा मरा हुवा बच्चा साक़ित हुवा जो आ़ज़ाद था। अगर्चे उस के आ'ज़ा की ख़िल्क़त मुकम्मल नहीं हुई थी बल्कि सिर्फ़ बा'ज़ आ'ज़ा ज़ाहिर हुवे थे तो मारने वाले के आ़क़िला पर मर्द की दियत का बीसवां ह़िस्सा या'नी पांच सो दिरहम एक साल में वाजिबुल अदा होंगे साक़ित शुदा बच्चा मुज़क्कर हो या मुअन्नस और मां मुस्लिमा हो या किताबिया या मजूसिया, सब का एक ही ह़ुक्म है।'' (मत़बूआ़ : मक्तबा रज़विय्या)

www.dawateislami.net

उस के वुरसा या'नी बाप और भाइयों के लिये होगी। पस क़त्ल करने वालों से दियत का मुत़ालबा किया जाएगा या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये एक मोमिन ग़ुलाम आज़ाद किया जाएगा।"

﴿25﴾ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ ۙ تَوْبَةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۹۲﴾

(پ ۵، النساء: ۹۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो जिस का हाथ न पहुंचे तो वोह लगातार दो महीने के रोज़े रखे येह* **अल्लाह** *के यहां उस की तौबा है और* **अल्लाह** *जानने वाला ह़िक्मत वाला है।*

﴿26﴾ और इरशाद फ़रमाता है :

اَنَّهٗ مَنْ قَتَلَ نَفْسًۢا بِغَيْرِ نَفْسٍ اَوْ فَسَادٍ فِي الْاَرْضِ فَكَاَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَمَنْ اَحْيَاهَا فَكَاَنَّمَاۤ اَحْيَا النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ

(پ ۶، المائدۃ: ۳۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *कि जिस ने कोई जान क़त्ल की बिग़ैर जान के बदले या ज़मीन में फ़साद किये तो गोया उस ने सब लोगों को क़त्ल किया और जिस ने एक जान को जिला लिया उस ने गोया सब लोगों को जिला लिया।*

या'नी अगर एक हज़ार अफ़राद **एक क़त्ल** में शरीक हो जाएं तो इन में से हर एक क़त्ल के जुर्म में बराबर का शरीक है और सब पर तमाम लोगों के क़त्ल का गुनाह होगा और जिस ने किसी जान को मजबूरी की ह़ालत में रोटी का एक टुकड़ा या लुक़्मा खिला कर या प्यास के वक़्त एक घूंट पानी पिला कर या अपने मुसलमान भाई की मुसीबत दूर कर के उस पर एह़सान किया तो गोया उस ने तमाम लोगों को ज़िन्दा किया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तमाम मख़्लूक़ पर एह़सान किया।"

www.dawateislami.net

हुस्ने मुआशरत

घरवालों से अच्छा सुलूक :

(93)....शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "तुम में सब से बेहतर वोह है जो अपनी औ़रतों, बच्चों, ग़ुलामों और लौंडियों से **अच्छा सुलूक** करता है।"

(94)....सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "अपनी औ़रतों, अवलाद और जो भी उस की परवरिश में है, उन से हुस्ने सुलूक करने वाले को राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में जिहाद करने वाले का दरजा अ़ता किया जाएगा।"

ज़कात के बा'द अफ़्ज़ल सदक़ा :

(95)....हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "ज़कात के बा'द **अफ़्ज़ल सदक़ा** वोह दिरहम है जो तू अपनी जान पर ख़र्च करे ताकि लोगों के सामने सुवाल करने से बचे और वोह दिरहम है जो तू अपने बच्चों, ग़ुलामों और बान्दियों पर ख़र्च करे ताकि वोह लोगों के मोहताज न हों **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस का अज्र 70 गुना बढ़ा कर लिखेगा।"

(96)....हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने **हलाल रोज़ी** की तलब में थकावट की हालत में शाम की ताकि वोह ख़ुद को लोगों से सुवाल करने से बचाए तो वोह शाम ही को बख़्श दिया जाएगा।"

www.dawateislami.net

मुरग़ी से भी हुस्ने सुलूक करो :

(97)....हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "अगर कोई किसी का कफ़ील (या'नी परवरिश करने वाला) है तो उस को चाहिये कि वोह उस के साथ **हुस्ने सुलूक** करे।" एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरी न अवलाद है न बीवी और न ही ख़ानदान, सिर्फ़ एक मुरग़ी है।" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अगर तू ने उस के दाना पानी में एक दिन भी कोताही की तो **अल्लाह** तबारक व तआ़ला तुझे हुस्ने सुलूक करने वालों में न लिखेगा।"

अपनी औ़रतों पर ज़ुल्म न करो :

(98)....नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "तुम पर येह लाज़िम है कि अपनी औ़रतों पर नर्मी व मेहरबानी करो, और इन पर ज़ुल्म और तंगी न करो इस लिये कि जब औ़रत पर ज़ुल्म किया जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ऐसा ही नाराज़ होता है जैसा कि यतीम पर ज़ुल्म की वजह से नाराज़ होता है।"

(99)....सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : "तुम में सब से बेहतर वोह है जो अपने अहल के साथ अच्छा सुलूक करता है और मैं तुम सब से ज़ियादा अपने घर वालों से अच्छा सुलूक करने वाला हूं और औ़रतों की इ़ज़्ज़त सिर्फ़ **शरीफ़** आदमी ही करता है और उन की इहानत व तौहीन सिर्फ़ **कमीना शख़्स** ही करता है।"

www.dawateislami.net

मर्द और औरत से क्या सुवाल होगा ?

(**100**)....शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मर्द से सब से पहले नमाज़ का सुवाल होगा फिर उस की औ़रतों, ग़ुलामों और लोंडियों के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल होगा । लिहाज़ा अगर ज़िन्दगी में उन के साथ **हुस्ने सुलूक** और एह़सान किया होगा तो **अल्लाह** तबारक व तआ़ला भी उस पर एह़सान फ़रमाएगा और औ़रत से सब से पहले उस की नमाज़ के मुतअ़ल्लिक़ पूछा जाएगा फिर उस से उस के शोहर और पड़ोसियों के हुक़ूक़ के मुतअ़ल्लिक बाज़पुर्स होगी ।"

घर वालों को ईज़ा पहुंचाने वाले की पकड़ :

(**101**)....मरवी है कि एक शख़्स ने सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझ में बद ख़ुल्क़ी की सिफ़त है। मैं अपनी ज़ौजा और घर वालों को ज़बान से ईज़ा देता हूं ।" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अपने घर वालों को ईज़ा देने वाले का कोई उ़ज़्र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़बूल नहीं फ़रमाएगा और न ही उस की कोई नेकी क़बूल की जाएगी अगर्चे उस ने हमेशा रोज़े रखे हों और बहुत ज़ियादा ग़ुलाम और बांदियां आज़ाद की हों और वोह शख़्स सब से पहले जहन्नम में दाख़िल होगा । इसी त़रह़ जब औ़रत अपने शोहर को ईज़ा या'नी तक्लीफ़ देती है तो उस वक़्त तक उस की न नमाज़ क़बूल होती है न कोई नेकी जब तक कि वोह अपने शोहर को राज़ी कर के उस के साथ अच्छी ज़िन्दगी न गुज़ारे । यक़ीनन क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम सब से एक दूसरे के मुतअ़ल्लिक़ पुर्सिश फ़रमाएगा ।"

www.dawateislami.net

बीवी को नमाज़ का हुक्म दो :

(102)....ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मर्द पर वाजिब है कि वोह अपनी बीवी को नमाज़ पढ़ने का हुक्म दे और इस के तर्क पर सरज़निश करे ।"

(103)....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "**औरतों** के मुआ़मले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो क्यूंकि वोह तुम्हारे पास क़ैदियों की सूरत में हैं । तुम ने उन को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़हदो पैमान पर लिया है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कलिमे (या'नी हुक्म) के ज़रीए उन से उन की शर्मगाहें तुम पर ह़लाल हुईं । तुम उन के लिबास और नफ़क़ा (या'नी ख़र्च और खाना वग़ैरा) में वुस्अ़त रखो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे रिज़्क़ में वुस्अ़त फ़रमाएगा और तुम्हारी उ़म्र में बरकत अ़ता फ़रमाएगा और (याद रखो) तुम जैसा करोगे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी वैसा ही बदला तुम्हें देगा ।"

टेढ़ी पस्ली :

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अपनी ज़ौजा ह़ज़रते सय्यिदुना सारा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا के ख़ुल्क़ की शिकायत की, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन की त़रफ़ वह़ी फ़रमाई : "मैं ने औ़रत को टेढ़ी पस्ली से पैदा किया है और वोह यूं कि औ़रत या'नी ह़व्वा (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا) को आदम (عَلَيْهِ السَّلَام) की टेढ़ी बाईं पस्ली से पैदा किया और टेढ़ी पस्ली को अगर तुम सीधा करना चाहोगे तो तोड़ डालोगे । लिहाज़ा उसे बरदाश्त करो और वोह जैसी भी हो उस के साथ गुज़ारा करो, हां ! अगर दीन में कमी देखो तो ज़रूर पूरी करो ।"

www.dawateislami.net

शोहर पर बीवी के बा'ज़ हुक़ूक़ :

(**104**)....हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**मर्द** पर लाज़िम है कि वोह अपनी बीवियों और लौंडियों को वुज़ू, उस की निय्यत, तयम्मुम, ह़ैज़ व निफ़ास और जनाबत से ग़ुस्ल, इस्तिह़ाज़ा के अह़काम और वुज़ू व नमाज़ के फ़राइज़ व सुनन की ता'लीम दे और (ख़ुसूसन) **अ़क़ाइदे अहले सुन्नत** सिखाए। ग़ीबत, चुग़ली और नजासत से बचने, फ़ुज़ूल गोई से ख़ामोशी, ज़िक्र व आदाब बजा लाने पर इस्तिक़ामत और गुनाह और बुराई से इजतिनाब की ता'लीम दे और अगर अपनी कम इ़ल्मी की वजह से उन को सिखाने से क़ासिर है तो (किसी और से) पूछ कर बताए, वरना उन को रुख़्सत दे कि वोह मसाइल व अह़काम के मुतअ़ल्लिक़ किसी और (मह़रम) से पूछें और मर्द को अपनी औ़रतों को ऐसी जगह जाने से मन्अ़ नहीं करना चाहिये जहां वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बातें सुन कर अपने **दीन के अह़काम** को जान सकें और जहन्नम में जाने से बच जाएं।[1]

इ़ल्म ह़ासिल करना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है :

(**105**)....शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**इ़ल्म** ह़ासिल करना हर मुसलमान मर्द व औ़रत पर फ़र्ज़ है।"

इस इ़ल्म से मुराद दीन के फ़राइज़ का इ़ल्म हैं।

(**1**)....اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके मदनी माह़ोल में इस्लामी बहनों के मुख़्तलिफ़ शहरों में हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त होते हैं जिन में दीन के बुन्यादी अह़काम और सुन्नतें सिखाई जाती हैं। तमाम इस्लामी बहनों से शिर्कत की मदनी इल्तिजा है।

www.dawateislami.net

घर वालों को आग से बचाओ :

मर्द पर लाज़िम है कि वोह अपनी ज़ौजा, अवलाद, गुलामों और बान्दियों के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आए, उन को खाना खिलाना, कपड़े मुहय्या करना और दीनी (फ़र्ज़) उमूर की ता'लीम देना भी उस पर लाज़िम है और येह सब ह़लाल त़रीक़े से करे और उस के लिये इन मुआ़मलात में किसी भी वजह से कोताही जाइज़ नहीं जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿27﴾

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓىٕكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَاۤ اَمَرَهُمْ وَ يَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ۝۶

(پ۲۸،التحریم: ۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालों अपनी जानों और अपने घर वालों को आग से बचाओ जिस के ईंधन आदमी और पथ्थर हैं उस पर सख़्त करें (त़ाक़तवर) फ़िरिश्ते मुक़र्रर हैं जो **अल्लाह** का हुक्म नहीं टालते और जो उन्हें हुक्म हो वोही करते हैं।*

(इस आयते करीमा में) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन्सान को हुक्म दिया है कि वोह अपने आप को (जहन्नम की) आग से बचाए और अपने घर वालों को भी इसी त़रह़ उस से बचाए जिस त़रह़ ख़ुद को बचाता है।"

हर ह़ाकिम से सुवाल होगा :

(106)....सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बरोज़े क़ियामत हर **ह़ाकिम** से उस की रिआ़या के बारे में सुवाल होगा, मर्द अपने घर वालों पर ह़ाकिम है। उस से उन के मुतअ़ल्लिक़ पूछा जाएगा और औ़रत अपने शोहर के माल में ह़ाकिम है। उस से उस के मुतअ़ल्लिक़ बाज़ पुर्स होगी।"

www.dawateislami.net

घर वालों को इल्मे दीन सिखाना लाज़िम है :

(**107**)....हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम, साहिबे कौसरो तस्नीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अपने रब عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात के वक़्त आदमी का सब से बड़ा गुनाह उस के घर वालों की जहालत (या'नी इल्मे दीन से महरूमी) होगा।"

(**108**)....मन्क़ूल है कि मर्द से तअ़ल्लुक़ रखने वालों में पहले उस की ज़ौजा और उस की अवलाद है, येह सब (या'नी बीवी, बच्चे क़ियामत में) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर खड़े हो कर अ़र्ज़ करेंगे : "ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ हमें इस शख़्स से हमारा ह़क़ ले कर दे, क्यूंकि इस ने कभी हमें दीनी उमूर की ता'लीम नहीं दी और येह हमें ह़राम खिलाता था जिस का हमें इल्म न था। फिर उस शख़्स को ह़राम कमाने पर इस क़दर मारा जाएगा कि उस का गोश्त झड़ जाएगा फिर उस को मीज़ान के पास लाया जाएगा, फ़िरिश्ते पहाड़ के बराबर उस की नेकियां लाएंगे तो उस के इ़याल में से एक शख़्स आगे बढ़ कर कहेगा : **"मेरी नेकियां कम हैं।"** तो वोह उस की नेकियों में से ले लेगा। फिर दूसरा आ कर कहेगा : **"तू ने मुझे सूद खिलाया था।"** और उस की नेकियों में से ले लेगा। इस त़रह़ उस के घर वाले उस की सारी नेकियां ले जाएंगे और वोह अपने अहलो इ़याल की त़रफ़ ह़सरत व यास से देख कर कहेगा : "अब मेरी गर्दन पर वोह गुनाह व मज़ालिम रह गए हैं जो मैं ने तुम्हारे लिये किये थे।" (उस वक़्त) फ़िरिश्ते कहेंगे : "येह वोह (बद नसीब) शख़्स है जिस की नेकियां इस के घर वाले ले गए और येह उन की वजह से जहन्नम में चला गया।"

पस मर्द पर वाजिब है कि वोह ह़राम से बच्चे और अपने घर वालों से हुस्ने सुलूक के साथ पेश आए।

www.dawateislami.net

सिलए रेह्मी और क़त्एु रेह्मी का बयान

सिलए रेह्मी रिज़्क़ को बढ़ाती है :

(109)....हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**सिलए रेह्मी** रिज़्क़ को बढ़ाती और उ़म्र में ज़ियादती करती है। सिलए रेह्मी अ़र्श से लटकी हुई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इल्तिजा करती है : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू उसे मिला जो मुझे मिलाए और तू उसे काट जो मुझे काटे।" तो **अल्लाह** तबारक व तआ़ला फ़रमाता है : "मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं ज़रूर उस को मिलाऊंगा जो तुझे मिलाएगा और ज़रूर उसे क़त्अ़ करूंगा जो तुझे क़त्अ़ करेगा।"

बहन से रिश्ता तोड़ने वाले को सज़ा :

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का बयान है कि एक नेक व सालेह़ अ़जमी शख़्स मेरा दोस्त था और वोह मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا में रिहाइश पज़ीर था। सारी सारी रात बैतुल्लाह (या'नी ख़ानए का'बा) का त़वाफ़ करता रहता और हमेशा क़ुरआने पाक की तिलावत किया करता था। अ़र्सए दराज़ तक उस का येही मा'मूल रहा, मैं ने उसे कुछ सोना बत़ौरे अमानत दिया और ख़ुद यमन चला गया। जब मैं वापस लौटा तो वोह मर चुका था। मैं ने उस की अवलाद से अपनी अमानत के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया तो उन्हों ने जवाब दिया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुम जो कहते हो हमें उस की कुछ ख़बर नहीं और न हमें उस अमानत का इ़ल्म है।" मुझे बे ह़द दुख हुवा, ख़ैर ! मेरी मुलाक़ात ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار से हुई तो

आप ने मुझ से फ़रमाया : "**ऐ मेरे भाई** ! तुम्हें क्या परेशानी है ?" मैं ने सारा माजरा कह सुनाया तो उन्हों ने फ़रमाया : "जुमुआ़ को आधी रात के वक़्त **मत़ाफ़** (या'नी त़वाफ़ की जगह) में कोई न हो तो तुम रुक्ने यमानी व मक़ामे इब्राहीम के दरमियान खड़े हो कर बा आवाज़े बुलन्द पुकारना : ऐ फ़ुलां ! तो अगर वोह वाक़ेई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मक़्बूल व सालेह़ बन्दा हो तो उस की रूह़ तुझ से कलाम करेगी इस लिये कि अरवाहे़ मोमिनीन रुक्न व मक़ाम के दरमियान जम्अ़ होती हैं।" **वोह बुज़ुर्ग** फ़रमाते हैं कि "जब जुमुआ़ की रात आई तो मैं ने आधी रात के वक़्त रुक्न और मक़ाम के दरमियान खड़े हो कर बुलन्द आवाज़ से पुकारा, ऐ फ़ुलां ! लेकिन किसी ने मुझ से कोई कलाम न किया, जब सुब्ह़ हुई तो मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار को बताया तो आप ने पढ़ा : اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَ ؕ (پ۲،البقرۃ،۱۵۶) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हम **अल्लाह** के माल हैं और हम को उसी की त़रफ़ फिरना।" और फ़रमाया : "वोह अ़जमी शख़्स जहन्नमी था लेकिन तुम ऐसा करो कि यमन चले जाओ। वहां एक कुंवां हैं जिस का नाम "**बिअरे बरहूत**" है उस कुंवें में अ़ज़ाब दिये जाने वालों की रूहें जम्अ़ होती हैं और वोह कुंवां जहन्नम के मुंह पर है। तुम आधी रात के वक़्त कुंवें के कनारे खड़े हो कर यूं निदा करना : "ऐ फ़ुलां की रूह़ ! तो उस की रूह़ तुम से कलाम करेगी।" (यमन पहुंचने के बा'द) मैं उस कुंवें के क़रीब जा कर बैठ गया। आधी रात के वक़्त मैं ने देखा कि दो शख़्सों को ला कर उस कुंवें में उतारा गया, दोनों रो रहे थे। एक ने दूसरे से पूछा : "तू कौन है ? दूसरे ने जवाब दिया : "मैं एक **ज़ालिम शख़्स** की रूह़ हूं जो दुन्या में बादशाह

www.dawateislami.net

का पहरे दार था और ह़राम खाता था, मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने मुझे इस कुंवें में फेंक दिया और अब मुझे इस में अ़ज़ाब दिया जाएगा।" दूसरे ने कहा : "**मैं अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान** की रूह़ हूं जो नाफ़रमान और ज़ालिम शख़्स था। अब मुझे इस कुंवें में अ़ज़ाब देने के लिये लाया गया है।" जब मैं ने उन दोनों की चीख़ो पुकार सुनी तो घबराहट की शिद्दत से मेरे बदन के रोंगटे खड़े हो गए। फिर मैं ने उस कुंवें में झांक कर बा आवाज़े बुलन्द पुकारा : "ऐ फुलां" तो उस शख़्स की आवाज़ आई : "लब्बैक" (या'नी मैं मौजूद हूं) और वोह इस ह़ालत में था कि उसे अ़ज़ाब देते हुवे मारा पीटा जा रहा था। मैं ने उस से पूछा : "**ऐ मेरे भाई**! वोह अमानत कहां है जो मैं ने तेरे पास रखवाई थी?" उस ने जवाब दिया : "वोह अमानत फुलां जगह फुलां ज़ीने के नीचे मदफ़ून है।" फिर मैं ने पूछा : "ऐ मेरे भाई! किस गुनाह के सबब तुझे बद बख़्तों के मक़ाम पर लाया गया?" उस ने जवाब दिया : "**मेरी बहन** के सबब, इस लिये कि मेरी एक ग़रीब बहन मुझ से कहीं दूर सर ज़मीने अ़जम में रहती थी। मैं उस की परवाह किये बिग़ैर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत में मश्ग़ूल हो गया और मक्कए मुकर्रमा में रहने लगा और इस मुद्दत में न मुझे उस की कोई फ़िक्र हुई और न मैं ने उस के बार में (किसी आने वाले से) कुछ पूछा, जब मैं मर गया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इसी बात पर मेरी पकड़ फ़रमाई और मुझ से फ़रमाया : "तू उस को कैसे भूल गया? उस के पास कपड़े नहीं थे और तू कपड़े पहने हुवे ज़िन्दगी गुज़ारता था, वोह भूकी रहती और तू सैर हो कर खाता था। वोह प्यासी रहती और तू सैर हो कर पीता था।" फिर इरशाद फ़रमाया : मुझे

www.dawateislami.net

अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं **क़त्ए रेह्मी** करने वाले पर रह्म नहीं करूंगा। इसे ले जाओ और "**बिअरे बरहूत**" में डाल दो।" तो मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने मुझे इस कुंवें में डाल दिया और आह ! अब मुझे अ़ज़ाब दिया जा रहा है।" ऐ मेरे भाई ! तुम मेरी बहन के पास जा कर उस से (मेरे लिये) मुआ़फ़ी की दरख़्वास्त करो और इस अ़ज़ाब से मेरे छुटकारे के लिये "**कुछ करो**" मुमकिन है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझ पर रह्म फ़रमाए क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां क़त्ए रेह्मी के इ़लावा मेरा कोई और गुनाह नहीं है।"

वोह **बुज़ुर्ग** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "(पहले मैं) उस जगह गया (जहां अमानत मदफ़ून थी) और उस को खोदा, उस से एक थैली निकली जिस में मेरी अमानत मौजूद थी। वोह उसी ह़ालत में थी जैसी मैं ने अपने हाथ से बांधी थी।" फिर मैं अपनी अमानत ले कर अ़जम के शहर चला गया, वहां जा कर उस की बहन के मुतअ़ल्लिक़ लोगों से मा'लूमात ह़ासिल कीं, बिल आख़िर ! जब मेरी उस से मुलाक़ात हुई तो मैं ने उसे अव्वल ता आख़िर सारा माजरा कह सुनाया तो वोह रोने लगी। फिर मैं ने उस के भाई के छुटकारे के लिये उस से कहा तो वोह **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में मोह़ताजी की शिकायत करने लगी, मैं ने कुछ दुन्यावी माल उसे दे दिया और वहां से लौट आया। पस हर मोमिन को चाहिये कि **सिलए रेह्मी** को इख़्तियार करे।"

सिलए रेह्मी करने वाले के लिये आ़लीशान महल्लात :

(**110**)....हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मैं ने जन्नत में सोने, मोती, याक़ूत और ज़बरजद के महल्लात देखे जिन का बाहर अन्दर से और अन्दर

www.dawateislami.net

बाहर से दिखाई देता है। मैं ने जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام से पूछा : "येह महल्लात व ठिकाने किस के लिये हैं ?" तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : "उस शख़्स के लिये जो **सिलए रेहमी** करे, सलाम को आ़म करे, नर्मी से गुफ़्तगू करे, यतीमों पर नर्मी करे और रात को जब लोग सो जाए तो वोह नमाज़ पढ़े।"

साबिर शोहर और साबिरा बीवी का अज्र :

(**111**)....नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरोबर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने खुश्बूदार है : "जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इताअ़त के साथ साथ अपनी बीवी के बुरे अख़्लाक़ पर सब्र किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स को हज़रते अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام की तरह अज्रो सवाब अ़ता फ़रमाएगा और जिस औ़रत ने अपने शोहर की बद अख़्लाक़ी पर सब्र किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को अपनी राह में जिहाद करने वाले की मिस्ल अज्र अ़ता फ़रमाएगा और जिस औ़रत ने अपने शोहर पर ज़ुल्म किया और उस से ऐसी बात का मुतालबा कर के उस को अज़िय्यत दी जिस की वोह ताक़त नहीं रखता तो रह़मत व अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते उस औ़रत पर ला'नत करते हैं और उस का ठिकाना जहन्नम में होगा और जिस औ़रत ने अपने शोहर की अज़िय्यत व तक्लीफ़ पर सब्र किया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को हज़रते आसिया (फ़िरऔ़न की मोमिना बीवी) और हज़रते मरयम बिन्ते इमरान (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) की तरह अज्रो सवाब अ़ता फ़रमाएगा।" बेशक **अल्लाह** अस दक़ुस्सादिक़ीन इरशाद फ़रमाता है : "जिस ने **सिलए रेहमी** की मैं उस की उ़म्र में इज़ाफ़ा करूंगा, उस के माल में बरकत दूंगा, उस के घर को

www.dawateislami.net

आबाद करूंगा, मौत की सख़्तियां उस पर आसान कर दूंगा और जन्नत के दरवाज़े उस को पुकारेंगे : "हमारी त़रफ़ आ जाओ।"

रह़मत से महरूम :

(112)....सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क़त़्ए रेह़्मी करने वाले पर रह़मत नाज़िल नहीं होती।"

हम महरूमी से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगते हैं और उस से क़बूलिय्यत व मग़्फ़िरत का और दोज़ख़ की आग से अमान का सुवाल करते हैं। اٰمِين بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

मदनी क़ाफ़िलों और फ़िक्रे मदीना की बरकतें

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी (इस्लामी) माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के (दा'वते इस्लामी के) ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से **पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत** करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

www.dawateislami.net

नवां बाब : वालिदैन के नाफ़रमान की सज़ा

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اِمَّا یَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَاۤ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَاۤ اُفٍّ وَّ لَا تَنْهَرْهُمَا وَ قُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِیْمًا ﴿۲۳﴾

(پ ۱۵، بنیٓ اسرآئیل: ۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अगर तेरे सामने इन में एक या दोनों बुढ़ापे को पहुंच जाएं तो इन से हूं न कहना और इन्हें न झिड़कना और इन से ता'ज़ीम की बात कहना ।*

वालिदैन से अच्छे सुलूक का ताकीदी हुक्म :

(113)....शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अगर कलामे अ़रब में लफ़्ज़ "**उफ़**" के इलावा कोई और ऐसा लफ़्ज़ होता जिस में लफ़्ज़ "**उफ़**" के मुक़ाबले में कम तक्लीफ़ का मा'ना होता तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ येह न फ़रमाता : "فَلَا تَقُلْ لَّهُمَاۤ اُفٍّ" (बल्कि वोही कम तक्लीफ़ वाला लफ़्ज़ फ़रमाता) बेशक अल्लाह तबारक व तआ़ला ने वालिदैन के साथ **हुस्ने सुलूक** करने का ताकीदी हुक्म इरशाद फ़रमाया है ।"

वालिदैन के नाफ़रमान पर ग़ज़बे इलाही :

(114)....सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "वालिदैन का नाफ़रमान अगर्चे रोज़ा रखे और नमाज़ पढ़े यहां तक कि वोह इस (नमाज़ व रोज़ा) में यक्ता व मुन्फ़रिद हो जाए मगर उस का इन्तिक़ाल इस ह़ाल में हो कि उस के वालिदैन उस पर नाराज़ हों तो वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिलेगा कि वोह उस पर ग़ज़बनाक होगा ।"

www.dawateislami.net

(115)....ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जहन्नम में **वालिदैन के नाफ़रमान** और शैत़ान के दरमियान सिर्फ़ एक दरजे का फ़र्क़ होगा।"

आग की शाख़ों से लटके हुवे लोग :

(116)....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मे'राज की रात जब मुझे आस्मान की त़रफ़ ले जाया गया तो मैं ने देखा कि कुछ लोग आग की शाख़ों से लटके हुवे हैं। मैं ने अमीने वह़ी जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام से पूछा : "येह कौन लोग हैं?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "**येह वालिदैन के नाफ़रमान हैं।**"

अंगारों की बरसात :

(117)....हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने अपने **वालिदैन को गाली** दी उस के सर पर जहन्नम में इस क़दर आग के अंगारे बरसेंगे जिस क़दर आस्मान से ज़मीन पर बारिश के क़त़रे बरसते हैं।"

हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी, जहन्नम की आग और उस में दाख़िल करने वाले हर अ़मल से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगते हैं।

नाफ़रमान अवलाद की दोज़ख़ में चीख़ो पुकार :

(118)....शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशाद है : "मुझे कोई शै इस क़दर ग़मगीन न करेगी जिस क़दर **वालिदैन के नाफ़रमानों** का अ़ज़ाब

www.dawateislami.net

रन्जो ग़म में डालेगा। (क़ियामत के बा'द) मैं जन्नत में होउंगा कि मार पीट की वजह से वालिदैन के नाफ़रमान की चीख़ो पुकार और उन के रोने की आवाज़े सुनूंगा। मेरे दिल में उन के लिये शफ़्क़त भर आएगी तो मैं अ़र्श के नीचे सजदे में गिर कर उन के ह़क़ में शफ़ाअ़त करूंगा। (उस वक़्त) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "ऐ मुह़म्मद ! अपना सर उठा लीजिये ! क्यूंकि मैं **वालिदैन के नाफ़रमानों** को उस वक़्त तक जहन्नम से नहीं निकालूंगा जब तक उन के वालिदैन उन से राज़ी न हो जाएं।" तो मैं अपनी जगह लौट आऊंगा और उन से तवज्जोह हट जाएगी। इस के बा'द दोबारा आ कर उन की चीख़ो पुकार सुनूंगा तो फिर अ़र्श के नीचे सजदा करूंगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझ से फ़रमाएगा : "ऐ मुह़म्मद ! अपना सर उठा लीजिये ! ऐ मेरे मह़बूब ! आप ने जब भी मांगा मैं ने अ़त़ा किया मगर **वालिदैन के नाफ़रमानों** को जहन्नम से नहीं निकाला जाएगा जब तक कि उन के वालिदैन उन से राज़ी न हो जाएं।"

मैं दोबारा अपनी जगह लौट जाऊंगा और वोह मुझे भुला दिये जाएंगे। मैं एक मरतबा फिर उस त़रफ़ आऊंगा तो उन का सख़्त गिर्या और रोना सुन कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ करूंगा : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (जहन्नम के निगरान फ़िरिश्ते) मालिक (عَلَيْهِ السَّلَام) को हुक्म फ़रमा कि वोह उन के त़बक़े का दरवाज़ा खोलें ताकि मैं उन का अ़ज़ाब देख सकूं क्यूंकि मैं उन की बहुत ज़ियादा चीख़ो पुकार सुनता हूं।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "मैं मालिक को इस का हुक्म दे चुका हूं।"

(आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं :) मैं उसी वक़्त मालिक (عَلَيْهِ السَّلَام) के पास जाऊंगा तो वोह मेरे लिये

www.dawateislami.net

दरवाज़ा खोल देंगे। मैं देखूंगा कि कुछ लोग आग की शाख़ों से लटके हुवे हैं और अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते उन की पीठों और रानों पर आग के कोड़े बरसा रहे हैं और उन के पाउं के नीचे सांप, बिच्छू घूम फिर रहे और उन्हें डस रहे हैं। मैं उन पर रह़्म की वजह से रो पड़ूंगा और तीसरी मरतबा अ़र्श के नीचे आ कर सजदा करूंगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "येह **नाफ़रमान**, वालिदैन की रिज़ामन्दी के बिग़ैर जहन्नम से नहीं निकल सकते।" तो मैं अ़र्ज़ करूंगा : "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ इन के वालिदैन कहां हैं ?" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "वोह जन्नत में अपने ठिकानों में हैं। उन में से बा'ज़ तो मक़ामे आ'राफ़ (जन्नत व जहन्नम के दरमियान एक मक़ाम) में, बा'ज़ जन्नतुल मावा में और दूसरे बा'ज़ इस के इ़लावा दूसरी जगहों में हैं। मैं अ़र्ज़ करूंगा : "ऐ मेरे मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ मुझे इन के जन्नती वालिदैन की पहचान अ़ता फ़रमा।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे उन की पहचान अ़ता फ़रमाएगा। मैं उन के पास जा कर उन से कहूंगा : "काश ! तुम अपनी अवलाद को देखते। उन पर अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते मुक़र्रर किये गए हैं जो उन को अ़ज़ाब दे रहे हैं। मुझे उन के रोने और चीख़ने ने ग़म में मुब्तला कर दिया है।" तो वालिदैन उन तकालीफ़ को याद करेंगे जो दुन्या में उन की अवलाद की त़रफ़ से उन्हें पहुंची होंगी। एक **मां** कहेगी : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप उस को अ़ज़ाब ही में रहने दें क्यूंकि उस ने मेरी **तौहीन** की, मुझे **गाली** दी, मेरा **दिल दुखाया,** और उस के पास मालो दौलत की कमी न थी मगर मैं रात भूकी गुज़ारती। मेरे पास तन ढांपने के भी कपड़े न थे और उस की बीवी उ़म्दा और महंगे कपड़े पहनती थी।" एक बाप अ़र्ज़ करेगा : "आप उसे अ़ज़ाब ही में रहने दें क्यूंकि मैं

www.dawateislami.net

जब कभी उस को अच्छी बात की तल्क़ीन करता था तो वोह मुझे मारता था और मुझे अपने घर से निकाल देता था और येह उस का मा'मूल था कि वोह ऐसा करता रहता था।"

अल ग़रज़ दुन्या में जो गुज़रा, उन के दिलों में इस की रन्जिश बाक़ी रहेगी। मैं उन से कहूंगा : "दुन्या तो गुज़र गई और जो होना था हो गया, अब उन्हें मुआ़फ़ कर दो और मैं ने तुम्हारे पास क़दम रन्जा फ़रमा कर तुम्हें इ़ज़्ज़त दी है लिहाज़ा तुम भी उन से दर गुज़र करो।

उस वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "ऐ मेरे महबूब ! ऐ मुह़म्मद ! आप इन के लिये मशक़्क़त न उठाएं। मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं वालिदैन की दिली रिज़ामन्दी के बिग़ैर इन की अवलाद को जहन्नम से नहीं निकालूंगा।" तो मैं अ़र्ज़ करूंगा : "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ उन के **वालिदैन** को हुक्म दे कि येह मेरे साथ चल कर अपनी अवलाद के अ़ज़ाब को देखें। उम्मीद है इन्हें उन पर रह़्म आ जाए।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन को मेरे साथ चलने का हुक्म फ़रमाएगा। वोह जहन्नम की त़रफ़ आएंगे तो मालिक (عَلَيْهِ السَّلَام) उन के लिये जहन्नम के दरवाज़े खोल देंगे।

जब वोह अपनी अवलाद और उन के अ़ज़ाब को देखेंगे तो रोना शुरूअ़ कर देंगे और कहेंगे : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हमें मा'लूम न था कि इन्हें इस क़दर सख़्त अ़ज़ाब हो रहा है !" वालिदैन में से हर एक अपनी अवलाद के लिये चीख़ो पुकार करेगा और जब उन की अवलाद अपने मां-बाप के रोने की आवाज़ को सुनेगी तो उन में से हर कोई अपनी मां से कहेगा : "**ऐ मेरी मां** ! आग ने मेरे जिगर को जला दिया है और अ़ज़ाब ने

www.dawateislami.net

मुझे हलाक कर दिया है। **ऐ मेरी मां !** तू तो कभी येह बरदाश्त नहीं करती थी कि मैं धूप या इस की तपिश में एक घड़ी भी बैठूं या मुझे कांटा चुभ जाए। **ऐ मेरी मां !** (आज) तू ने कैसे मेरे अ़ज़ाब को सुन कर इस पर सब्र कर लिया। क्या तू मेरी खाल और हड्डियों पर रह़्म नहीं खाएगी ?" उस वक़्त उन के **वालिदैन** रोते हुवे अ़र्ज़ करेंगे : "ऐ हम से मह़ब्बत करने वाले, ऐ सरापा हुस्नो ख़ूबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप इन की शफ़ाअ़त फ़रमाइये।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन के **वालिदैन** से फ़रमाएगा : "चूंकि मैं ने तुम्हारी ही वजह से इन पर ग़ज़ब किया लिहाज़ा अब तुम्हारी ही सिफ़ारिश से इन को जहन्नम से निकालूंगा।" वोह अ़र्ज़ करेंगे : "ऐ हमारे मा'बूद व मालिक عَزَّوَجَلَّ हमारी अवलाद को जहन्नम से निकाल कर हम पर अपना फ़ज़्लो एह़सान फ़रमा।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन के वालिदैन से फ़रमाएगा : "क्या तुम दोनों अपनी अवलाद से राज़ी हो गए ?" वोह अ़र्ज़ करेंगे : "जी हां।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हुक्म फ़रमाएगा : "जिस के वालिदैन उसे निकालने पर राज़ी हैं उस को जहन्नम से निकाल दो और जो राज़ी नहीं उन की अवलाद को अ़ज़ाब में ही रहने दो यहां तक कि मैं उन के बारे में जो चाहूं फ़ैसला फ़रमा दूं।" फिर मालिक (عَلَيْهِ السَّلَام) उन को जहन्नम से इस ह़ाल में निकालेंगे कि वोह जल कर कोइला हो चुके होंगे तो उन पर नह्रे ह़यात का पानी बहाया जाएगा। इस से उन पर नया गोश्त, खाल और बाल उग आएंगे फिर वोह जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे।"

लम्बी उ़म्र पाने का नुस्ख़ा :

(119)....सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : "मैं तुम्हें

www.dawateislami.net

नमाज़ और वालिदैन के साथ **हुस्ने सुलूक** की वसिय्यत करता हूं। बेशक इस से उ़म्र में इज़ाफ़ा होता है। उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! कभी ऐसा होता है कि इन्सान की ज़िन्दगी तीन साल बाक़ी रह जाती है और वोह अपने वालिदैन के साथ **हुस्ने सुलूक** करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तीन सालों को **30** साल कर देता है और अगर वोह अपने वालिदैन के साथ **बुरा सुलूक** करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की उ़म्र के **30** सालों को तीन साल या (फ़रमाया) तीन दिन कर देता है।"

फिर इरशाद फ़रमाया : "घर वालों और रिश्तेदारों के साथ **हुस्ने सुलूक** उ़म्र को ज़ियादा करता है और इन पर ज़ुल्म, उ़म्र और रिज़्क़ में कमी करता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब का सबब है। और अगर **अल्लाह** तबारक व तआ़ला **क़तए रेह्मी** करने वाले को दुन्या में अ़ज़ाब न दे तो उस के अ़ज़ाब को मौत के बा'द तक मुअख़्ख़र फ़रमा देता है और उस की रूह़ को क़ियामत तक जहन्नम के मुंह पर वाक़ेअ़ "**बिअरे बरहूत**" (नामी) कुंवें में क़ैद रखा जाएगा।"

पस्लियां टूट फूट जाएंगी :

(**120**)....हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जिस ने **वालिदैन की नाफ़रमानी** की उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नाफ़रमानी की और वालिदैन के नाफ़रमान को जब क़ब्र में दफ़्न कर दिया जाएगा तो क़ब्र उस को इस त़रह़ दबाएगी कि उस की पस्लियां टूट फूट कर एक दूसरे में पैवस्त हो जाएंगी और क़ियामत के दिन लोगों में सब से ज़ियादा सख़्त अ़ज़ाब इन तीन अश्ख़ास को होगा (**1**) वालिदैन का नाफ़रमान (**2**) ज़ानी और (**3**) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शरीक ठहराने वाला।"

www.dawateislami.net

नाफ़रमान को क़ब्र में गधा बना दिया गया :

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "एक रात मैं क़ब्रिस्तान में दाख़िल हुवा। मैं ने एक क़ब्र देखी जिस से धुवां निकल रहा था फिर क्या देखता हूं कि क़ब्र शक़ हुई और उस से एक सियाह फ़ाम फ़िरिश्ता नुमूदार हुवा। जिस के हाथ में लोहे का गुर्ज़ है और वोह उस से एक गधे के सर पर ज़र्बें लगा रहा है और वोह गधा रेंकता है। फिर वोह (गधा) आग की ज़न्जीरों में जकड़ा हुवा क़ब्र से बाहर आ गया तो अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते ने उस को वापस क़ब्र में धकेल दिया और ख़ुद भी उस के पीछे क़ब्र में दाख़िल हो गया और क़ब्र बन्द हो गई।

मुझे बड़ा तअ़ज्जुब हुवा और मैं सोच में पड़ गया। फिर एक औ़रत से मेरी मुलाक़ात हुई, मैं ने इस वाक़िए़ के मुतअ़ल्लिक़ उस से दरयाफ़्त किया तो उस ने बताया : "येह शख़्स **ज़िना** करता और शराब पीता था। इस की मां जब इसे समझाती तो येह उस से झगड़ता और कहता : "**गधे की त़रह़ चीख़ती रह।**" जब येह मर गया तो **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने क़ब्र में इस को गधा बना दिया और अब हर रात अ़ज़ाब का फ़िरिश्ता इस को क़ब्र से निकालता है और इस को मारते हुवे कहता है : "**ऐ गधे!** रेंक (या'नी गधे की त़रह़ चीख़)।" फिर इसे ज़न्जीरों से घसीटते हुवे क़ब्र में धकेल देता है और क़ब्र ब दस्तूर बन्द हो जाती है।"

लिहाज़ा मोमिन को चाहिये कि वोह रह़मते इलाही से दूरी और अ़ज़ाब से डरता रहे और ख़ुद को मशक़्क़तों और सख़्तियों का आ़दी बनाए।

हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब, जहन्नम और जहन्नमियों के अ़मल से उस की पनाह मांगते हैं।

www.dawateislami.net

दसवां बाब : गाने बाजे की मुमानअ़त[1]

बाजों से बचने वालों के लिये ख़ुश ख़बरी :

(121)....हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "क़ियामत के दिन अ़र्श के नीचे से निदा की जाएगी : "कहां हैं वोह लोग जो दुन्या में अपनी समाअ़त को लहव व लअ़ब, **बाजों** और बेकार बातों से बचाया करते थे कि आज मैं उन को अपनी ह़म्दो सना सुनाऊं और ख़बर दूं कि उन पर न कोई ख़ौफ़ है और न कोई ग़म।"

शबे क़द्र में भी नज़रे रह़मत से महरूम :

(122)....नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "मुझे **बाजों को तोड़ने** के लिये भेजा गया है और बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ लैलतुल क़द्र (या'नी शबे क़द्र) में भी बाजे बजाने वालों पर नज़रे रह़मत नहीं फ़रमाता।" नीज़ शबाबत (या'नी सीटी बजाना) भी ह़राम है।

मौसीक़ी की आवाज़ सुनें तो क्या करें ?

(123)....ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बयान करते हैं : "मैं अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه

---

(1)....गाने बाजे की हौलनाकियों, तबाहकारियों और **गानों के कुफ़्रिय्या अश्आ़र** के मुतअ़ल्लिक़ इ़ल्म सीखने के लिये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़्बूआ़ अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले "**गाने बाजे की हौलनाकियां** (बयानाते अ़त्तारिय्या, ह़िस्सा अव्वल, सफ़ह़ा **111** ता **157**) और "**गानों के 35 कुफ़्रिय्या अश्आ़र**" (बयानाते अ़त्तारिय्या, ह़िस्सा दुवुम, सफ़ह़ा **358** ता **390**। कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, सफ़ह़ा **512** ता **524**)" का मुत़ालआ़ फ़रमा लीजिये।

www.dawateislami.net

के साथ जा रहा था कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने किसी चरवाहे कि बांसरी की आवाज़ सुनी तो अपनी उंगलियों से कानों को बन्द फ़रमा लिया और रास्ते से एक त़रफ़ हट कर तेज़ तेज़ चलने लगे फिर (कुछ दूर जा कर) दरयाफ़्त फ़रमाया : "ऐ नाफ़ेअ़ ! क्या बांसरी की आवाज़ आना बन्द हो गई ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "जी हां ।" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी उंगलियां कानों से हटा लीं और दोबारा रास्ते पर आ गए और फ़रमाया : "मैं ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इसी त़रह़ करते देखा है और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बांसरी की आवाज़ कभी भी नहीं सुनी ।"

सीटी और ताली बजाने की मुमानअ़त :

﴿29﴾ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ اِلَّا مُكَآءً وَّتَصْدِيَةً ؕ (پ۹، الانفال:۳۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और का'बा के पास उन की नमाज़ नहीं मगर सीटी और ताली ।*

मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "**مُکَاء** मुंह से सीटी बजाना और **تَصْدِیَة** ताली बजाना और गाना है ।" और फ़रमाते हैं कि "ज़मानए जाहिलिय्यत में जब ईद का दिन होता तो (काफ़िर) लोग इबादत गाहों में गाने गाते और सीटियां बजाया करते थे तो ह़क़ तबारक व तआ़ला ने उन के इस फ़े'ल की मज़म्मत फ़रमाई और उन को दर्दनाक अ़ज़ाब की वईद सुनाई ।"

बाजा बजाने और सुनने वाला मलऊ़न है :

(124)....शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

www.dawateislami.net

"बाजा बजाने वाले और सुनने वाले दोनों **मलऊ़न** हैं। तो जिस ने दुन्या में गाने बाजे सुने वोह जन्नत में ख़ुश करने वाली आवाज़ों को सुनने से हमेशा महरूम रहेगा मगर येह कि वोह तौबा कर ले। (फिर इरशाद फ़रमाया : ख़ुश इल्हानी में) ह़ज़रते दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की आवाज़ **900** मज़ामीर की आवाज़ों के बराबर होगी। जिस दिन **अल्लाह** तबारक व तआ़ला का दीदार होगा उस दिन वोह अपनी आवाज़ सुनाएंगे तो उस ख़ुश कुन आवाज़ के लिये इस दुन्यावी आवाज़ को सुनना तर्क कर दो।"

﴿30﴾ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ فِيْهَا وَلَدَيْنَا مَزِيْدٌ ﴿۳۵﴾ (پ۲۶،ق:۳۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उन के लिये है उस में जो चाहें और हमारे पास इस से भी ज़ियादा है।*

छे अफ़राद पर ला'नत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : "छे त़रह़ के लोगों पर मैं ला'नत करता हूं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी उन पर ला'नत फ़रमाता है और हर नबी की दुआ क़बूल है, छे अश्ख़ास येह हैं :

(1) किताबुल्लाह में इज़ाफ़ा करने वाला (2) तक़्दीर को झुटलाने वाला (3) मेरी उम्मत पर ज़ुल्म के साथ तसल्लुत़ करने वाला कि उस शख़्स को इ़ज़्ज़त देता है जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ज़लील किया और उसे ज़लील करता है जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इ़ज़्ज़त अ़त़ा फ़रमाई (4) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़रम (या'नी ह़रमे मक्का) को ह़लाल ठहराने वाला (5) मेरे अहले बैत की हुरमत जिस का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हुक्म दिया है उस को पामाल करने वाला और (6) मेरी सुन्नत को छोड़ने वाला।"

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان،الحدیث:۵۷۱۹،ج۷،ص۵۰۱)

www.dawateislami.net

जन्नत का बयान
(...नेकियों की जज़ाएं...)

मौत, ख़ूब सूरत मेंढे की शक्ल में :

(125)....हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जब क़ियामत के दिन जन्नती जन्नत में और दोज़ख़ी दोज़ख़ में चले जाएंगे तो मौत को ख़ूब सूरत मेंढे की शक्ल में लाया जाएगा और एक मुनादी निदा करेगा : "ऐ जन्नतियो ! चढ़ आओ और ऐ जहन्नमियो ! चढ़ आओ ।" तो अहले जन्नत और अहले जहन्नम सब चढ़ आएंगे । उन से कहा जाएगा : "क्या तुम जानना चाहते हो येह क्या है ?" तो वोह कहेंगे : "क्यूं नहीं ।" कहा जाएगा : "**येह मौत है** ।" फिर उस मेंढे को जन्नत व दोज़ख़ के दरमियान ज़ब्ह कर दिया जाएगा और मुनादी निदा करेगा : "**ऐ जन्नतियो** ! तुम जन्नत में हमेशा रहोगे । अब कोई मौत नहीं और **ऐ जहन्नमियो** ! तुम दोज़ख़ में हमेशा रहोगे । अब कोई मौत नहीं ।" उस वक़्त जहन्नमियों को बहुत ज़ियादा ह़सरत होगी और वोह रोते हुवे (जहन्नम की त़रफ़) लौट जाएंगे और जन्नती बहुत ख़ुश होंगे और अपने मह़ल्लात की त़रफ़ लौट जाएंगे ।

क़ुरआन और ह़दीस सुनने वालों के लिये ने'मतें :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जन्नतियों के लिये गाने वाली हूरें ऐन भेजेगा और वोह जन्नत के बाग़ात में सफ़ेद चमकदार मोती के ऐवानों में बैठे होंगे जिस का तूल या'नी लम्बाई **100** साल की मसाफ़त होगी और उस की चौड़ाई **500** साल की मसाफ़त होगी और सब औरतें ख़ातूने जन्नत ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास बैठी होंगी और एक दूसरे ऐवान में तमाम मर्द हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुज़ूर बैठे होंगे । उन के

www.dawateislami.net

लिये बिछौने और मस्नदें लगाई जाएंगी। फिर वोह हूर आगे बढ़ कर उन को ऐसी ख़ुश कुन आवाज़ में ह़क़ तआ़ला की ह़म्द सुनाएगी कि उस से अच्छी आवाज़ किसी सुनने वाले ने कभी न सुनी होगी और उस मैदान में ऐसे दरख़्त होंगे जिन की हर टहनी में **90** क़िस्म के साज़ होंगे। मलाइका उन दरख़्तों को उस हूर के सामने कर देंगे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस हूर से फ़रमाएगा : "मेरे इन बन्दों को (मेरी ह़म्दो सना के नग़मे) सुनाओ जिन्हों ने दुन्या में मेरी ख़ातिर गानों (और बाजों) से अपने कानों को बचाए रखा और जो दुन्या में **मेरे कलाम (या'नी कुरआने मजीद) और मेरे ह़बीब** (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) **की अह़ादीस को सुन कर ख़ुश होते थे** आज उन के लिये मेरे हां ख़ुशी और इ़ज़्ज़त है।"

फिर हूरे ऐ़न ह़क़ तबारक व तआ़ला की तस्बीह़, उस की ह़म्द, बुज़ुर्गी और वह़दानिय्यत के नग़मे गाएगी और अ़र्श के नीचे से इन साज़ों पर ऐसी हवा चलेगी कि सब लोग ह़क़ तआ़ला से मुलाक़ात की ख़ुशी व मसर्रत में झूम उठेंगे और वज्द में आ जाएंगे। फ़िरिश्ते उन की त़रफ़ सोने की कुरसियां बढ़ाएंगे जिन पर सोने की कढ़ाई वाले बिछौने (या'नी कवर) होंगे और वोह सब्ज़ बारीक रेशम के होंगे जिन का अस्तर (या'नी अन्दरूनी ह़िस्सा) क़नादीज़ (या'नी ख़ालिस रेशम) का होगा। जन्नती इन कुरसियों पर बैठ जाएंगे। मलाइका कहेंगे कि ह़क़ तबारक व तआ़ला तुम से फ़रमाता है : "तुम ने दुन्या में नमाज़ व इबादत की जो मशक़्क़त उठाई वोह काफ़ी है। अब तुम झूम झूम कर अपने आ'ज़ा को मशक़्क़त में न डालो और इन कुरसियों पर बैठ जाओ। येह कुरसियां तुम्हें ले कर पलक झपकने की मिस्ल नाज़ो फ़ख़्र से चलेंगी। इन में रूह़ और पर हैं, चुनान्चे, वोह कुरसियों पर बैठ जाएंगे। वोह कुरसियां

www.dawateislami.net

पलक झपकने की मानिन्द उन को लिये झूमती रहेंगी अगर हूरे ऐन का नग़मा धीमा होगा तो वोह कुरसियां भी आहिस्ता आहिस्ता झूमेंगी और अगर नग़मा पुर जोश होगा तो कुरसियां भी पुर जोश हो जाएंगी और अहले जन्नत ख़ुशी के मारे ख़ुद से बे गाने हो जाएंगे।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ख़ुश आमदीद फ़रमाएगा :

अल्लाह तबारक व तआ़ला उन को हुस्बे मरातिब येह (ने'मत) अ़ता फ़रमाएगा और उन को ऐसा साफ़ सुथरा लिबास अ़ता फ़रमाएगा जो उस के नूरे रह़मत से मलमअ़ व मुज़य्यन होगा जिस की कढ़ाई व नक़्शो निगार सोने के होंगे। उस नक़्शो निगार के वस्त में येह लिखा होगा :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ هٰذِهِ الْخِلْعَةُ نُسِجَتْ بِرَسْمِ فُلَانَةِ بِنْتِ فُلَانَةَ اَوْ فُلَانِ بْنِ فُلَان

(या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला, येह लिबास फ़ुलानी की बेटी फ़ुलानी या फ़ुलां के बेटे फ़ुलां की तकरीम के लिये बनाया गया है) जब वोह लिबास पहनेंगे तो لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه और **अल्लाहु अकबर** कहेंगे। ह़क़ तबारक व तआ़ला अ़लाह़िदा अ़लाह़िदा हर मर्द व औ़रत पर सलामती नाज़िल फ़रमाएगा और उन से फ़रमाएगा : "मेरी इत़ाअ़त करने वाले बन्दों को "**ख़ुश आमदीद !**" मैं तुम से राज़ी हो गया हूं क्या तुम भी मुझ से राज़ी हो ?" वोह अ़र्ज़ करेंगे : "ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ तमाम ता'रीफ़ें और शुक्र तेरे लिये है। हम कैसे राज़ी न हों कि तू ने हमें इस क़दर इ़ज़्ज़त से नवाज़ा।" ह़क़ तबारक व तआ़ला फ़रमाएगा : "तुम ने मेरी ह़राम कर्दा चीज़ों से इजतिनाब किया। जिस का मैं ने तुम्हें हुक्म दिया उस पर अ़मल किया। मेरे लिये रोज़ा रखा, मेरे लिये नमाज़ पढ़ी। तुम मेरे क़ुर्ब से दूरी के ख़ौफ़ से रोते थे। मेरी मुख़ालफ़त नहीं करते

www.dawateislami.net

थे । मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! अब मैं तुम्हें इतना अ़ता करूंगा जो तुम्हें काफ़ी होगा । ऐ मेरे महबूब बन्दो ! ऐ मेरे मुती़अ़ व फ़रमां बरदार और मुझ से महब्बत करने वाले बन्दो ! अब तुम अपने महल्लात की त़रफ़ लौट जाओ ।

तो वोह महल्लात उन के लिये खोले जाएंगे, हर किसी को एक महल मिलेगा और हर महल के **70** हज़ार दरवाज़े होंगे । हर दरवाज़े पर **70** हज़ार दरख़्त होंगे । हर दरख़्त की **70** हज़ार टहनियां होंगी । हर टहनी पर **70** हज़ार अक़्साम के फल होंगे । एक फल दूसरे फल से (ज़ाइके में) जुदागाना होगा । हर दरख़्त का तना सोने का और पत्ते चांदी के होंगे । हर फल मटके के बराबर होगा । दरख़्तों की हर दो क़तारों के दरमियान सोने के **70** तख़्त होंगे । हर तख़्त की लम्बाई **300** गज़ होगी । जब वोह उस पर बैठना चाहेंगे तो तख़्त इतना झुक जाएगा कि एक हाथ की ऊंचाई पर आ जाएगा और जब वोह ठीक त़रह़ से बैठ जाएंगे तो बुलन्द हो जाएगा कि जैसे हवा में पहाड़ बुलन्द होता है । अगर उन के दिल में येह बात आएगी कि वोह तख़्त उन को ले कर चले तो वोह जन्नत की ज़मीन पर चलना शुरूअ़ कर देगा और अगर वोह चाहेंगे कि वोह उन को ले उड़े तो वोह दरख़्तों के दरमियान उड़ना शुरूअ़ कर देगा ।

और वोह अपने सरों के ऊपर से जो चाहेंगे फल तोड़ कर खाएंगे । हर तख़्त पर **70** हज़ार बिछौने होंगे । उन पर ख़ालिस रेशम के सिरहाने और गाऊ तकिये होंगे । हर तख़्त के इर्द गिर्द **70** ख़ुद्दाम होंगे । हर ख़ादिम के हाथ में सोने का पियाला होगा जो **70** हज़ार मोतियों से जड़ा हुवा होगा । हर पियाले में मुख़्तलिफ़ अक़्साम के मशरूब होंगे और हर **वली** के लिये **70** हूरे ऐन और ख़िदमत गार बांदियां होंगी । हर हूर पर **70** हुल्ले होंगे । ऐसा

www.dawateislami.net

लगेगा कि अ़नक़रीब उन का नूर आंखों को उचक लेगा और **70** हज़ार अक़्साम के ज़ेवरात होंगे जो मोतियों और जवाहिरात से जड़े होंगे । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का **वली** उन में से जिस से चाहेगा नफ़्अ़ उठाएगा ।''

﴿31﴾ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيْهَا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ﴿۶۲﴾

(پ۱۶، مریم:۶۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और उन्हें इस में उन का रिज़्क़ है सुब्ह़ व शाम ।*

जन्नती अंगुश्तरियां और कंगन :

(**126**)....ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जन्नत में सुब्ह़ के वक़्त एक फ़िरिश्ता महल का दरवाज़ा खट-खटाएगा । ख़ादिम पूछेगा : ''कौन है ?'' **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से आने वाला फ़िरिश्ता कहेगा : ''तुम्हारे सरदार मर्द या औ़रत के लिये नमाज़े सुब्ह़ के बदले हदिय्या लाया हूं ।'' चुनान्चे वोह दरवाज़ा खोलेगा । फ़िरिश्ता दाख़िल हो कर कहेगा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर सलाम भेजता है और तुम से फ़रमाता है : ''तुम दुन्या में मेरी त़रफ़ सुब्ह़ की नमाज़ भेजा करते थे तो मैं क़बूल फ़रमा लिया करता था ह़ालांकि मैं ने तुम्हें जज़ा न दिखाई थी ।'' (फिर फ़िरिश्ता कहेगा) और अब येह हदिय्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारी त़रफ़ नमाज़े सुब्ह़ की जज़ा के त़ौर पर भेजा है । फिर वोह फ़िरिश्ता सोने का दस्तर ख़्वान बिछाएगा उस पर **70** त़श्तरियां होंगी । दस सोने की, दस चांदी की, दस याक़ूत की, दस ज़ुमर्रद की, दस मोती की, दस मरजान की और दस अ़क़ीक़ की । हर त़श्तरी में ऐसा खाना होगा कि दूसरे खाने से मुशाबहत न रखता होगा और उस पर बर्फ़ से ज़ियादा सफ़ेद रोटी होगी । और येह सब उस

www.dawateislami.net

ज़ात की क़ुदरत से होगा जो किसी चीज़ को फ़रमाता है : **कुन** (या'नी हो जा) तो वोह हो जाती है।" वोह तश्तरियां रेशम के सब्ज़ रूमालों से ढकी होंगी।

फिर एक और फ़िरिश्ता आएगा। उस के पास सोने का तबाक़ होगा जिस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से फल, शाही ताज, हार, कंगन, पाज़ेब और अंगुश्तरियां (या'नी अंगूठियां) होंगी। हर जन्नती को दस अंगुश्तरिया दी जाएगी जिन के नगीनों पर सब्ज़ नूर से एक इबारत लिखी होगी। अंगूठे की अंगुश्तरी के नगीने पर लिखा होगा : "**ऐ बन्दे! मैं तुझ से राज़ी हूं।**" दूसरी उंगली की अंगूठी के नगीने पर लिखा होगा : "तुम मेरे लिये हो और मैं तुम्हारे लिये।" तीसरी पर : "तुम मेरे क़ुर्ब से कभी न उक्ताओगे।" चौथे पर : "हमेशा रहने वाले घर में तुम मेरे क़ुर्ब से लज़्ज़त उठाओगे। पांचवें पर : "तुम ने दुन्या में खेती बोई और आख़िरत में काटी।" छटे नगीने पर : "तुम ने मेरी ख़ातिर लम्बे लम्बे सजदे किये जब कि लोग ग़ाफ़िल थे।" सातवें नगीने पर : "आज तुम्हारे लिये मेरे मुशाहदे और दीदार की ख़ुश ख़बरी है।" आठवें नगीने पर :

﴿32﴾

لِمِثْلِ هٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعٰمِلُوْنَ ﴿۶۱﴾

(پ۲۳، الصّٰفّٰت: ۶۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐसी ही बात के लिये कामियों को काम करना चाहिये।*

और नवें नगीने पर :

﴿33﴾

سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ﴿۲۴﴾

(پ۱۳، الرعد: ۲۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *सलामती हो तुम पर तुम्हारे सब्र का बदला तो पिछला घर क्या ही ख़ूब मिला।*

www.dawateislami.net

और दसवें नगीने पर :

﴿34﴾

سَلٰمٌ ۚ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ ﴿۵۸﴾

(پ۲۳،یٰس:۵۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उन पर सलाम होगा मेहरबान रब का फ़रमाया हुवा।*

लिखा हुवा होगा।"

ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام हर मर्द व औ़रत को दस दस अंगूठियां पहनाएंगे और तीन तीन कंगन भी पहनाएंगे जिन में एक सोने का, दूसरा चांदी का और तीसरा मोतियों का होगा। हर कंगन पर सब्ज़ नूर से लिखा हुवा होगा : لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हूं ! आज तुम बिग़ैर दरबान और बिग़ैर वज़ीर के अपनी ह़ाजतें मेरी बारगाह में पेश करो। ऐ मेरे बन्दो !

طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا خٰلِدِيْنَ ۝ (پ ۲۴،الزمر:۷۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम ख़ूब रहे तो जन्नत में जाओ हमेशा रहने।*

जन्नती ज़ेवर तस्बीह़ बयान करेगा :

फिर उन के सरों पर इ़ज़्ज़त का शाही ताज रखा जाएगा और जन्नत के ज़ेवरात दुन्या के ज़ेवरात की त़रह़ भारी न होंगे और दुन्या के ज़ेवर से तो शोर की आवाज़ आती है जब कि जन्नत का ज़ेवर धीमी धीमी और ख़ुश कुन आवाज़ में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ बयान करेगा जिस से सुनने वाले ख़ुशी से झूम उठेंगे। फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "मेरे **इत़ाअ़त गुज़ार बन्दों** को "मरह़बा" **ऐ मेरे फ़िरिश्तो** ! इन को ख़ुशी के नग़मे सुनाओ।" चुनान्चे, मलाइका जाएंगे और उन के लिये जन्नत की गाने वाली ह़ूरे ऐ़न को लाएंगे और टहनियों और दरख़्तों पर सीटियां नसब

www.dawateislami.net

करेंगे। तमाम दरख़्तों की टहनी पर **70** हज़ार जन्नती साज़ होंगे। अ़र्श के नीचे से हवा चल कर उन जन्नती साज़ों में दाख़िल होगी तो उन से ऐसे नग़मे सुने जाएंगे जिन से अच्छे नग़मे सुनने वालों ने न सुने होंगे।

फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हुरे ऐन से फ़रमाएगा : "मेरे बन्दों को ख़ुशी के नग़मे सुनाओ क्यूंकि येह मेरी रिज़ा के लिये दुन्या में गानों की आवाज़ से अपने कानों को बचाते थे। मेरे ज़िक्र और मेरे कलाम (या'नी क़ुरआने मजीद) को सुन कर लुत्फ़ अन्दोज़ हुवा करते थे। तो तुम इन को अपनी आवाज़ में मेरी ह़म्दो सना सुनाओ।" हुरे ऐन गाएंगी और साज़ भी उन के हम आवाज़ हो कर बजते होंगे। लोग मक़ामे क़ुर्ब में इसे सुन कर ख़ुशी से मस्तो बेख़ुद हो जाएंगे। जब वज्द व सुरूर से इफ़्तिक़ा होगा और सैर हो जाएंगे तो अ़र्ज़ करेंगे : "ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ हम दुन्या में तेरा ज़िक्र और तेरा प्यारा कलाम पसन्द किया करते थे।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : "हां ! बेशक मेरे पास तुम्हारे लिये वोह सब कुछ है जिस की तुम्हें जन्नत में ख़्वाहिश है और तुम इस में हमेशा हमेशा रहोगे।

जन्नत में ज़बूर शरीफ़ की तिलावत :

फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "**ऐ दावूद** (عَلَيْهِ السَّلَام) तो वोह अ़र्ज़ करेंगे : "लब्बैक या रब्बल आ़लमीन (या'नी ऐ तमाम जहानों के मालिक मैं ह़ाज़िर हूं)।" फिर इरशाद फ़रमाएगा : "ऐ दावूद (عَلَيْهِ السَّلَام) मैं तुम्हें हुक्म देता हूं कि तुम मिम्बर पर खड़े हो कर मेरे मह़बूब बन्दों को "**ज़बूर शरीफ़**" की दस सूरतें सुनाओ।" चुनान्चे, ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा हो कर ज़बूर शरीफ़ की दस सूरतों की तिलावत

www.dawateislami.net

फ़रमाएंगे, हज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की आवाज़ जो कि गाने वाली जन्नती हूरों की आवाज़ से भी बढ़ कर ख़ूब सूरत होगी इस से अहले जन्नत ख़ुशी व मसर्रत से वज्दो सुरूर में आ जाएंगे जैसे मद्होशी में हों और हज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की आवाज़ (ख़ुश इल्हानी में) **90** मज़ामीर की आवाज़ के बराबर होगी। जब अहले जन्नत को (वज्द से) सैर हो कर इफ़ाक़ा होगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "ऐ मेरे बन्दो ! क्या तुम ने इस से अच्छी आवाज़ कभी सुनी थी ?" तो वोह अ़र्ज़ करेंगे : "नहीं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आज तक हमारे कानों ने न तेरे नबी हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की आवाज़ की मिस्ल आवाज़ सुनी थी और न इस से बेहतर और प्यारी आवाज़ सुनी थी।"

जन्नत में साहिबे कुरआन की तिलावत

फिर इरशाद फ़रमाएगा : "मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं तुम्हें इस से भी ज़ियादा अच्छी आवाज़ सुनाऊंगा। **ऐ मेरे महबूब ! ऐ मुहम्मद** (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा हो कर सूरए یٰسٓ और सूरए طٰهٰ की तिलावत कीजिये।" तो सुल्ताने दो जहान, साहिबे कुरआन, साहिबे हुस्ने सौते ज़ीशान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तिलावत फ़रमाएंगे और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आवाज़ हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की आवाज़ से **70** गुना **ज़ियादा ख़ुश कुन** होगी। सारे जन्नती, इन के नीचे कुरसियां, अ़र्श की किन्दीलें, मलाइका, हूरो ग़िलमां और बच्चे सब ख़ुशी से वज्दो सुरूर में आ जाएंगे और जन्नत की कोई चीज़ ऐसी न होगी जो हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सूरए یٰسٓ और सूरए طٰهٰ की तिलावत पर आप की आवाज़ की नग़मगी और हुस्न से न झूमती

www.dawateislami.net

होगी। फिर **अल्लाह** तबारक व तआ़ला इरशाद फ़रमाएगा : "ऐ मेरे महबूब बन्दो ! क्या तुम ने कभी इस से ज़ियादा अच्छी आवाज़ सुनी थी ?" वोह अ़र्ज़ करेंगे : "तेरी इ़ज़्ज़त और जलाल की क़सम ! जब से हम पैदा हुवे हैं इस से अच्छी आवाज़ कभी नहीं सुनी और अपने महबूब आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आवाज़ से ज़ियादा मीठी आवाज़ किसी की नहीं सुनी।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सूरए अन्आ़म सुनाएगा :

फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं तुम्हें इस से भी ज़ियादा मीठी और सुरीली आवाज़ सुनाऊंगा। फिर **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ख़ुद सूरए अन्आ़म सुनाएगा। जब जन्नती हक़ तबारक व तआ़ला का कलाम सुनेंगे तो वज्दो मस्ती में होशो हवास खो बैठेंगे। तमाम मालो अस्बाब, पर्दे, हिजाबात, महल्लात, दरख़्त, हूरें और नूर के समन्दर बेक़रार हो जाएंगे, बाग़ात झूम उठेंगे, तमाम दरख़्त और नहरें कलामे अ़ज़ीज़ो ग़फ़्फ़ार عَزَّوَجَلَّ की मिठास से वज्द करने लगेंगी। जन्नत भी वज्द में आ जाएगी, उस के सुतून ख़ुशी से लहराएंगे, अ़र्श, कुरसी, मलाइका सब झूमने लगेंगे और जन्नत अपने तमाम साज़ो सामान समेत महब्बत व शौक़ से वारिफ़्ता हो जाएगी।

जन्नत में दीदारे इलाही की ने'मते कुब्रा :

इस के बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने और बन्दों के दरमियान हाइल हिजाब उठा देगा और इरशाद फ़रमाएगा : "ऐ मेरे बन्दों ! मैं कौन हूं ?" लोग अ़र्ज़ करेंगे : "तू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारे रिज़्क़ का मालिक है।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "ऐ मेरे बन्दो ! मैं सलाम (या'नी सलामती देने वाला) हूं और तुम मुसलमान हो। मैं मोमिन (या'नी अमान देने वाला) हूं और तुम मोअमिनीन हो।

www.dawateislami.net

मैं ह़बीब हूं और तुम मुह़िब्बीन (या'नी मह़ब्बत करने वाले) हो। येह मेरा कलाम है तुम इसे सुनो। येह मेरा नूर है तुम इसे देखो और मेरा दीदार करो।"

उस वक़्त सब जन्नती **अल्लाह** तबारक व तआ़ला का दीदार बिग़ैर वासित़े और बिग़ैर ह़िजाब के करेंगे, जब ह़क़ तआ़ला का नूर उन के चेहरों पर पड़ेगा तो उन के चेहरे नूर से जगमगा उठेंगे और वोह **अल्लाह** तआ़ला के दीदार से लुत्फ़ अन्दोज़ होंगे और **300** साल तक इस त़रह़ नज़र जमाए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का दीदार करते रहेंगे कि दीदार की बे इन्तिहा लज़्ज़त की वजह से उन में किसी को येह त़ाक़त न होगी कि वोह पलक भी झपक सके। वोह अपने देखने की लज़्ज़त से उस के जमाल में मह़्व हो जाएंगे और उन की निगाहें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की सिफ़ते कमाल पर जमी होंगी।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ लज़्ज़त भरे ख़ित़ाब के साथ उन्हें मुख़ात़ब कर के फ़रमाएगा : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ ऐ मेरे मह़बूब बन्दो ! आज तुम जितना चाहो मुझ से फ़ैज़ ह़ासिल करो और ख़ूब सैराब हो जाओ तुम्हारे लिये ह़िजाबात उठा दिये गए हैं।" फिर ह़क़ तबारक व तआ़ला हर मर्द व औ़रत को एक एक अनार अ़त़ा फ़रमाएगा जिस का छिलका सोने का होगा। उस के अन्दर अनार के दानों की जगह कई अक़्साम के रंग बि रंगे हुल्ले होंगे। एक हुल्ला सब्ज़, एक ज़र्द, एक सफ़ेद और एक हुल्ला सोने से कढ़ा हुवा होगा।

फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (अपने और बन्दों के दरमियान) ह़िजाब को ह़ाइल कर के इरशाद फरमाएगा : "ऐ मेरे बन्दो ! अपने ठिकानों पर चले जाओ। **मैं तुम से राज़ी हूं** और मैं ने तुम्हारे हुस्न में **70** गुना इज़ाफ़ा कर दिया है।"

www.dawateislami.net

तमाम मर्द और औ़रतें एक ही मकान में होंगे लेकिन उन के दरमियान नूर का एक हि़जाब होगा जिस से एक दूसरे की बीवियों को न देखेंगे। मर्दों के लिये जो ए'ज़ाज़ होगा उतना ही ए'ज़ाज़ औ़रतों के लिये भी होगा। जब ह़क़ तबारक व तआ़ला तजल्ली फ़रमाएगा तो तमाम मर्द व औ़रतें इस त़रह़ एक साथ मुशाहदए ह़क़ तआ़ला करेंगे जैसे सूरज को तमाम लोग एक ही वक़्त में देखते हैं और बेशक **अल्लाह** तबारक व तआ़ला तश्बीह दिये जाने से पाक है और न कोई उस के मुशाबेह व मिस्ल हो सकता है।

बाज़ारे मा'रिफ़त की सैर और दोस्तों की पहचान :

फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "ऐ मेरे फ़िरिश्तो ! मेरे बन्दे जिन सुवारियों पर आए थे उन्हें इन के इ़लावा नई सुवारियां पेश करो।" मलाइका उन्हें सुर्ख़ याक़ूत के घोड़े पेश करेंगे जिन की ज़ीनें भी सुर्ख़ होंगी और इन के बाज़ू सब्ज़ होंगे जो कि सब्ज़ हुल्लों से भरे हुवे होंगे। फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन से फ़रमाएगा : "बाज़ारे मा'रिफ़त (या'नी एक दूसरे की पहचान के बाज़ार) की सैर करो।" तो वोह वहां सैर करते हुवे एक दूसरे से गुफ़्तगू करेंगे तो कोई किसी को कहेगा : "येह तो वोही है, ऐ मेरे भाई ! तुम जन्नत में किस जगह रहते हो ?" तो दूसरा जवाब देगा कि "मैं फ़ुलां बाग़ में फ़ुलां जगह रहता हूं।" इस त़रह़ एक दूसरे से मुतआ़रिफ़ होंगे। मलाइका कहेंगे : "जब तुम दुन्या के बाज़ार में जाते थे और तुम्हें कोई कपड़ा या कोई चीज़ पसन्द आ जाती तो क़ीमत अदा किये बिग़ैर तुम उसे नहीं ले सकते थे मगर तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे लिये इस बाज़ार में हर शै रखवा दी है जिस चीज़ की तुम्हें ख़्वाहिश हो क़ीमत अदा किये बिग़ैर ले सकते हो।"

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मज़ीद इरशाद फ़रमाया : फिर वोह बिछौनों, क़ालीनों, मुख़्तलिफ़ रंग के तकयों, हुल्लों और बरतनों की त़रफ़ देखेंगे तो जो कोई किसी चीज़ का इरादा करते हुवे उस पर नज़र डालेगा तो उस के पीछे आने वाले फ़िरिश्ते उस शै को उठा लेंगे फिर उन का गुज़र इन्सानी तसावीर पर होगा तो जो सूरत जन्नती की आंख में अपने चेहरे से ज़ियादा भली मा'लूम होगी तो अभी वोह उसे देखता ही होगा कि उस का चेहरा भी उसी जैसा हो जाएगा और जिस सूरत को भी चाहेगा वोह ज़ैबो ज़ीनत और हुस्न में उस की सूरत हो जाएगी और (कुदरते इलाहिय्या से) वोह (साबिक़ा) सूरत उस से ज़ाइल हो जाएगी। फिर जन्नती, बाज़ार में मुख़्तलिफ़ हुल्लों और परों को देखेंगे। फ़िरिश्ते कहेंगे : "जिसे भी उड़ने की ख़्वाहिश हो वोह इन परों और हुल्लों को पहन कर उड़ सकता है।" चुनान्चे, वोह इन परों को पहन लेंगे और वोह जहां चाहेंगे पर उन्हें ले कर उड़ेंगे।"

अन्वारे इलाही से चमकते दमकते चेहरे :

बाज़ार की सैर के बा'द वोह अपने ठिकानों को रवाना हो जाएंगे और जब अपने महल में दाख़िल होंगे तो (हर किसी की) बीवी उस से कहेंगी : "आज आप के हुस्न में किस क़दर इज़ाफ़ा हो गया और आप का नूर कितना बढ़ गया है ?" वोह कहेगा : "आज मैं ने अपने मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ का **दीदार** किया तो मेरे चेहरे पर मेरे रब्बे करीम का नूर वाक़ेअ़ हुवा।" फिर शौहर बीवी से कहेगा : "अ़ज़मत वाले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुम्हारे चेहरे का नूर और हुस्न भी तो कुछ कम नहीं।" ज़ौजा कहेगी : "मेरा चेहरा नूर से क्यूं न जग मगाए कि इस पर भी मेरे रब عَزَّوَجَلَّ का नूर

www.dawateislami.net

वाक़ेअ़ हुवा है।" तो यूं जन्नतियों के चेहरे अन्वारे इलाही عَزَّوَجَلَّ से चमकते दमकते रहेंगे और येह ने'मतें दारुल क़रार (या'नी जन्नत) में उन के लिये दाइमी और अबदी होंगी।"

﴿35﴾ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اَلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ طُوْبٰى لَهُمْ وَحُسْنُ مَاٰبٍ ﴿۲۹﴾

(پ۱۳، الرعد:۲۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *वोह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उन को ख़ुशी है और अच्छा अन्जाम।*

तूबा दरख़्त और इस में मौजूद ने'मतें :

(**127**)....हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**तूबा** जन्नत में एक दरख़्त है जिस की जड़ मेरे घर में और टहनियां जन्नत के महल्लात पर साया फ़िगन हैं। जन्नत में कोई घर और कोई महल ऐसा नहीं जिस पर उस की एक टहनी न हो। हर टहनी तमाम अक़्साम के दुन्यावी फल उठाए हुवे हैं और हर टहनी पर तमाम दुन्यावी कलियां मौजूद हैं मगर उस टहनी के फल और कलियां दुन्यावी फलों और कलियों से ज़ियादा ख़ूब सूरत, उ़म्दा और वाफ़िर मिक़्दार में होंगे। तूबा दरख़्त में अंगूर लगे हुवे हैं। हर ख़ोशए अंगूर की लम्बाई एक माह की मसाफ़त है और इस का दाना पानी से भरे हुवे मश्कीज़े की मानिन्द है।" किसी ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क्या एक दाना मुझे, मेरे घर वालों और मेरे ख़ानदान को काफ़ी होगा?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "बेशक एक दाना तुझे, तेरे घर वालों और तेरी क़ौम के दस अफ़राद के लिये किफ़ायत करेगा।"

www.dawateislami.net

और तूबा दरख़्त में खजूरें भी हैं। हर खजूर मश्कीज़े के बराबर है हर दो खजूरों का वज़्न एक ऊंट जितना होगा और वोह सूरज की त़रह़ चमकती हैं। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मज़ीद फ़रमाया : "उस में भी (सेब के मुशाबेह एक फल), सेब, अनार, आड और ख़ूबानियां भी हैं। हर दो फलों का वज़्न ऊंट के बोझ के बराबर है। उस दरख़्त को पैदा करने वाले के इ़लावा उस के अवसाफ़ ह़क़ीक़तन कोई नहीं जानता। जन्नत में हर मोमिन के लिये उस दरख़्त की एक टहनी होगी और उस का नाम उस टहनी पर लिखा हुवा होगा और उस टहनी पर हर क़िस्म के फल मौजूद होंगे। ह़त्ता कि वोह घोड़ों को अपनी ज़ीनों के साथ, ऊंटों को अपनी नकीलों के साथ और ख़िदमत गार मर्दों और औ़रतों को उठाए हुवे होगी। हर शाख़ में हार, कंगन, अंगूठियां, ताज और अश्याए ख़ुर्दो नोश से भरे टोकरे भी होंगे और येह सब शाख़ के पत्तों की जगह पर होंगे। जब भी कोई मोमिन एक टोकरा तोड़ेगा उस की जगह दो टोकरे और आ जाएंगे और अगर एक फल तोड़ेगा तो उस की जगह दो फल और लग जाएंगे।

त़ूबा दरख़्त के नीचे बहुत से मैदान हैं। इस के साए में कोई सुवार अगर **100** साल तक चलता रहे तो भी इस की मसाफ़त ख़त्म न होगी। इन मैदानों में शराबे त़हूर, दूध और शहद की नह्रें हैं। इन नह्रों में छोटी और बड़ी मछलियां हैं, जिन की जिल्द चांदी की और सिन्ने (या'नी छिलके) दीनार की त़रह़ सोने के हैं। इन का गोश्त बिग़ैर हड्डी और बिग़ैर कांटे के, बर्फ़ से ज़ियादा सफ़ेद और मख्खन से ज़ियादा नर्म है। इन नह्रों में सुर्ख़ याक़ूत की सुवारियां हैं जिन में सुवार हो कर औलियाए किराम इन मैदानों में अपने मह़ल्लात की सैर करेंगे।

www.dawateislami.net

जन्नत के आ़लीशान महल्लात

पहले महल की दीवारें सब्ज़, दूसरे की ज़र्द, तीसरे की सुर्ख़ और चौथे महल की दीवारें सफ़ेद होंगी। चाश्त के वक़्त सब महल्लात के रंग एक ही त़रह़ के हो जाएंगे और तमाम महल्लात का रंग ऐसा ही होगा जैसा कि ज़िक्र किया गया है। जब ज़ोहर का वक़्त होगा तो इन महल्लात की इमारतें सोने, चांदी, याक़ूत और मोती की हो जाएंगी और अ़स्र के वक़्त कोई दीवार ज़र्द तो कोई सफ़ेद हो जाएगी। येह महल्लात उस की क़ुदरत से रंग बदलते रहेंगे जो किसी चीज़ को फ़रमाता है : **कुन** (या'नी हो जा) तो वोह हो जाती है। अहले जन्नत उस रंग बिरंगी तब्दीली से बड़े ख़ुश होंगे और जन्नत में हर मोमिन के लिये ठिकाने, घर और अ़ज़ीमुश्शान अम्लाक होंगी। इन पर और इन के दरवाज़ों पर जन्नती का नाम लिखा होगा और इन में उस के ख़ुद्दाम और हूरो ग़िलमां होंगे जो कलिमए त़य्यिबा और तक्बीर कहते हुवे इस का इस्तिक़बाल करेंगे, और वोह जन्नती वहां आने पर बहुत ख़ुश होगा।

जन्नत में वली की हूर से गुफ़्तगू :

(ख़ाज़िने जन्नत ह़ज़रते) रिज़वान (عَلَيْهِ السَّلَام) आ कर औलियाए किराम को तन्हाई मुहय्या करेंगे। उन में से हर वली के लिये एक ख़ैमा और दुल्हन होगी जिस के जिस्म पर हुल्ले और ज़ेवर होंगे। वोह उस से कहेगी : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वली ! मुझे काफ़ी अ़र्से से आप की मुलाक़ात का शौक़ था। तमाम ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने हम दोनों को एक जगह इकठ्ठा फ़रमाया।" बन्दए मोमिन कहेगा : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बन्दी ! तू मुझे कैसे जानती है ह़ालांकि आज से पहले तू ने मुझे कभी नहीं देखा ?" वोह कहेगी : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे आप

www.dawateislami.net

के लिये पैदा फ़रमाया और आप का नाम मेरे सीने पर लिखा और येह मकानात बना कर इन के दरवाज़ों पर आप का नाम लिख दिया और येह तमाम हूरो ग़िलमां भी आप के लिये पैदा किये हैं और इन के रुख़्सारों पर आप का नाम इस ख़ूब सूरती से लिख दिया है कि वोह नाम चेहरे पर तिल से ज़ियादा ख़ूब सूरत लगता है और येह (सब) उस वक़्त हुवा जब आप दुन्या में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत करते, नमाज़ पढ़ते और त़वील दिन में रोज़ा रखते थे। पस उस वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ख़ाज़िने जन्नत ह़ज़रते रिज़वान عَلَيْهِ السَّلَام को हुक्म फ़रमाता कि "वोह हमें (या'नी हूरों को) अपने परों पर उठा कर ले जाए ताकि हम आप का दीदार करें और आप के अच्छे आ'माल देखें।" ह़ज़रते रिज़वान عَلَيْهِ السَّلَام हम से फ़रमाते : येह तुम्हारा सरदार है। उस वक़्त हम ने आप को देखा और पहचान लिया और जब कभी हमें आप के दीदार का शौक़ होता तो हम महल्लात के दरवाज़ों से निकल कर ह़ज़रते रिज़वान عَلَيْهِ السَّلَام से कहतीं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हम अपने महल्लात में उस वक़्त तक दाख़िल नहीं होंगी जब तक अपने सरदारों का दीदार न कर लें। तो वोह हमें आस्माने दुन्या की त़रफ़ ले जाते और हर हूर अपने सरदार को देख लेती लेकिन उसे (या'नी सरदार को) इस देखने का इल्म न होता था।"

अगर वोह हूर अपने सरदार को रात की तारीकी में नमाज़ पढ़ता देखती तो ख़ुश हो कर कहती : "इत़ाअ़त किये जाओ ताकि तुम्हारी ख़िदमत हो और खेती उगाए जाओ ताकि काट सको। **ऐ मेरे सरदार ! अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप के दरजात को बुलन्द फ़रमाए और आप की इत़ाअ़त को क़बूल फ़रमाए। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त में फ़ना होने और त़वील उ़म्र गुज़ारने के बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे

www.dawateislami.net

और आप को मिला देगा और मैं आप से मिलने के शौक़ में आस लगाए बैठी हूं।" फिर हम जन्नत में अपने ठिकानों की त़रफ़ लौट जाती थीं और आप इस मुआ़मले से बे ख़बर दुन्या ही में होते थे।" और दुन्या में कोई भी मोमिन ऐसा नहीं जिस के लिये जन्नत में ख़ुद्दाम और हूरो ग़िलमां न हों जो उसे देखते हैं और वोह उन से बे ख़बर होता है और जब वोह उस को इ़बादत में देखते हैं तो ख़ुश होते हैं और (इ़बादत से) ग़ाफ़िल देख कर ग़मगीन होते हैं।

रोज़ाना पांच हदिय्ये मिलेंगे :

"फिर जन्नतियों को उन के बाग़ात से फल पेश किये जाएंगे। एक और फ़िरिश्ता दाख़िल होगा। उस के साथ एक गठड़ी होगी जिस में सोने के नक़्शो निगार वाले हुल्ले होंगे। जिन पर उन के अ़ज़ीम नाम लिखे हुवे होंगे। वोह फ़िरिश्ता कहेगा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वली ! इन हुल्लों को देखिये अगर इन की सूरत पसन्द है तो ठीक वरना मैं इसे आप की पसन्दीदा सूरत में तब्दील कर दूंगा।" फिर दूसरा फ़िरिश्ता अपने साथ मुख़्तलिफ़ क़िस्म के ज़ेवरात ले कर आएगा। दुन्या के ज़ेवरात तो शोर पैदा करते हैं लेकिन आख़िरत के ज़ेवरात ऐसी आवाज़ में अल्लाह तआ़ला की तस्बीह़ बयान करेंगे जिस से सामेईन को राह़त व ख़ुशी होगी। इन ने'मतों पर मोमिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये सजदए शुक्र बजा लाएगा, फिर वोह फ़िरिश्ते जो नमाज़े फ़ज्र, ज़ोहर, अ़स्र, मग़रिब और इ़शा के हदिय्ये ले कर आएं होंगे वोह उसे सलाम करते हुवे हदिय्ये पेश करेंगे। जब फ़िरिश्ते उस को हदिय्ये दे कर फ़ारिग़ होंगे तो बन्दए मोमिन तमाम ख़ाली बरतनों को जम्अ़ कर के फ़िरिश्तों के ह़वाले करेगा। येह देख कर फ़िरिश्ते मुस्कुराते हुवे उस से कहेंगे : "तुम अभी तक ख़ुद को दुन्या में गुमान कर रहे हो कि हदिय्या खा

www.dawateislami.net

कर (या ले कर) बरतन साहिबे हदिय्या को दे दिया करते थे। दुन्या में तो हदिय्या देने वाले को इन बरतनों की क़िल्लत की वजह से इन की मोह़ताजी होती थी, जब कि येह बरतन रब्बे अ़ज़ीम عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से हैं जो ग़नी और इ़ज़्ज़त व करम वाला है। उस की मिल्किय्यत में कोई कमी नहीं आती न उस के ख़ज़ाने फ़ना होने वाले हैं और उस की ज़ाते अक़्दस वोह है जो किसी चीज़ को फ़रमाता है : **कुन** (या'नी हो जा) तो वोह हो जाती है। पस येह बरतन और जो कुछ इस में है सब तुम्हारे लिये है क्यूंकि तुम दुन्या में रोज़ाना पांच नमाज़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश करते थे। अब तुम को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से जज़ा के त़ौर पर रोज़ाना **पांच हदिय्ये मिलेंगे** और जो दुन्या में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये फ़राइज़ व नवाफ़िल की कसरत करता था तो ह़क़ तबारक व तआ़ला की त़रफ़ से बत़ौरे जज़ा उस के अ़मल के मुत़ाबिक़ इन पांच हदाया से ज़ियादा भी अ़त़ा फ़रमाए जाएंगे।"

ऐ मेरे भाई ! जिस ने रब तआ़ला की इ़बादत की जन्नत में उस की ख़िदमत की जाएगी, जिस ने खेती उगाई वोही काटेगा और जो ख़सारे में रहा वोह शर्मिन्दा होगा।

क्या जन्नत में दिन और रात होंगे ?

सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क्या जन्नत में दिन और रात होंगे ?" इरशाद फ़रमाया : "जन्नत में कभी भी अन्धेरा न होगा और जिस त़रह़ आस्मान, दुन्या की छत है उसी त़रह़ अ़र्श जन्नत की छत है और अ़र्श नूर से लबरैज़ है और इस की तख़्लीक़ सब्ज़, सुर्ख़, ज़र्द और सफ़ेद नूर से हुई है और अ़र्श के नूर के रंगों से दुन्या और आख़िरत में मौजूद तमाम नूरों की ज़र्दी, सब्ज़ी, सुर्ख़ी और सफ़ेदी

www.dawateislami.net

क़ाइम है और दुन्या के सूरज में मौजूद नूर, अ़र्श के नूर से राई के दाने बराबर है। लेकिन (जन्नत में) दिन और रात की पहचान इस त़रह़ होगी कि रात के वक़्त मह़ल्लात के दरवाज़े बन्द हो जाएंगे और पर्दे लटका दिये जाएंगे और मोमिन अपनी अज़्वाज के साथ पर्दे में और ह़ूरे ऐ़न के साथ ख़ल्वत व तन्हाई में रात बसर करेगा और बा'ज़ जन्नती ऐसे भी होंगे जो तन्हाई में बख़्शिश फ़रमाने वाले मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ के मुशाहदे में मुस्तग़्क़ होंगे। दिन होते ही मह़ल्लात के दरवाज़े खोल दिये जाएंगे। पर्दे उठा दिये जाएंगे और परन्दे चहचहाते हुवे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ बयान करेंगे। फ़िरिश्ते जन्नतियों को सलाम करेंगे। फिर ह़क़ तबारक व तआ़ला के हुक्म से तह़ाइफ़ लाएंगे और इन की अवलाद, बहन भाई और रिश्तेदार इन से मुलाक़ात को आएंगे।

अफ़्सोस है उस शख़्स पर जो जहन्नम में गया और ऐसी दाइमी ने'मतों से मह़रूम हो गया। जब मोमिन अपने किसी दोस्त को देखना चाहेगा तो ऐसा तख़्त उस को ले चलेगा जिस की रफ़्तार (आंखों को) उचक लेने वाली बिजली से भी ज़ियादा तेज़ होगी और जब दिल में किसी दूसरे दोस्त को देखने की ख़्वाहिश होगी तो वोह तख़्त उस को आ'ला क़िस्म के घोड़े की रफ़्तार में ले जाएगा, और दोनों दोस्त जन्नत के मैदानों में एक दूसरे से मुलाक़ात करेंगे और उस के बाग़ात में एक दूसरे से गुफ़्तगू कर के बेह़द ख़ुश होंगे फिर वोह दोनों वापस अपनी जगह अपने मह़ल्लात की त़रफ़ लौट जाएंगे।

ऊंट की मिस्ल सब्ज़ परन्दे :

हर जन्नती मह़ल के कमरे बड़े बड़े हैं, हर कमरे के **70** दरवाज़े हैं, हर दरवाज़े के दोनों पट सोने के हैं, हर दरवाज़े पर ऐसा दरख़्त है जिस का तना सुर्ख़ मरजान का हैं, इस में **70** हज़ार

www.dawateislami.net

टहनियां हैं, हर टहनी 70 हज़ार मोतियों से भरी हुई है, बा'ज़ मोती अन्डे के बराबर बा'ज़ चने के बराबर और दूसरे बा'ज़ इस से भी छोटे हैं, जन्नती छोटे बड़े मोतियों में से जो भी लेना चाहेंगे तोड़ लेंगे। जब भी जन्नती कोई मोती तोड़ेगा तो उस की जगह दो मोती और निकल आएंगे, कोई दरख़्त ज़ुमर्रद से लदा हुवा होगा तो कोई या याक़ूत से भरा हुवा होगा। जन्नतियों को जिस की चाहत होगी उसे ले कर (बतौ़रे ज़ेवर) पहनेंगे और उन दरख़्तों पर सब्ज़ परन्दे होंगे, हर परन्दा ऊंट के बराबर होगा और उस दरख़्त की टहनियों पर बैठा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ करता होगा और कहता होगा : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वली ! जन्नत के फलों से खाओ और इस की नह्रों से पियो कि येह सब अपनी ही मिल्किय्यत है।"

फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत से वोह परन्दा दस्तरख़्वान पर पेश हो जाएगा और मुख़्तलिफ़ अक़्साम में उस का कुछ हिस्सा भुना हुवा, कुछ तला हुवा, कुछ मीठा और कुछ नमकीन व तुर्श पका हुवा होगा। मोअमिनीन मर्द व औ़रत और हूरे ऐ़न उस में से खाएंगे यहां तक कि उस की हड्डियां बाक़ी रह जाएंगी। फिर वोह परन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत से पहले की त़रह़ (ज़िन्दा) हो जाएगा और टहनी पर बैठ कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ बयान करना शुरूअ़ कर देगा और वोह हुल्ले (या'नी लिबास) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के औलिया के इस्तियाक़ में हैं कि कब वोह उन को पहनेंगे और बेशक महल्लात और तमाम जवाहिर उसी ज़ात के बनाए हुवे हैं जो किसी शै को फ़रमाता है : "**कुन** या'नी हो जा।" तो वोह हो जाती है। जन्नत के महल्लात में कोई जोड़ तोड़ न होगा। मोमिन 70 साल तक इन (महल्लात) में ऐशो इशरत की ज़िन्दगी बसर करेगा। एक महल से दूसरे महल, एक बाग़ से दूसरे बाग़ मज़े करता, घुमता रहेगा।

www.dawateislami.net

सुर्ख़ याक़ूत के घोड़े और सफ़ेद ऊंट :

जन्नतुल फ़िरदौस के घोड़े सुर्ख़ याक़ूत के हैं। उन की ज़ीनें सब्ज़ ज़ुमर्रद की, पर सोने के और रानें चांदी की हैं और जन्नती घोड़े के दो हाथ और दो पाउं होंगे। वोह कहेगा : " ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वली ! मुझ पर सुवार हो जाइये।" अगर जन्नती चलने का इरादा करेगा तो वोह चलेगा और उड़ने का इरादा करेगा तो वोह उड़ने लगेगा। इसी त़रह़ ऊंटनियां और आ'ला नस्ल के सफ़ेद ऊंट भी होंगे। जब मोमिन उन घोड़ों में से किसी पर सुवार होगा तो वोह बाक़ी सुवारियों पर फ़ख़्र करेगा और मोमिन अपनी बीवियों और ख़ादिमाओं में से जिसे चाहेगा अपने साथ सुवार करेगा। वोह घोड़ा उन्हें सैर कराते हुवे एक साअ़त में 70 साल की मसाफ़त त़ै कर के जन्नत के वस्त़ में पहुंच जाएगा। फिर वोह सोने और मोती का एक ऐसा महल देखेंगे जिस में जवाहिर (या'नी मोतियों) का एक दरख़्त होगा जो उ़म्दा पोशाकें (या'नी लिबास) उठाए हुवे होगा। उस के पत्ते ज़ेवरात (या'नी सोने चांदी) के होंगे। उस में बे शुमार फल होंगे। हर फल मश्कीज़े के बराबर होगा और वोह शहद से ज़ियादा मीठे होंगे। जब वोह उस फल को खाएंगे तो बीज बाक़ी रह जाएगा। हर बीज में से एक बांदी या ग़ुलाम निकलेगा। उस के रुख़सार पर उस के मालिक का नाम ऐसे लिखा होगा कि चेहरे पर तिल से ज़ियादा ख़ूब सूरत दिखाई देगा। वोह बांदी कहेगी : "आप पर सलामती हो ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वली ! मैं तो अ़र्सए दराज़ से आप के इश्तियाक़ में थी।"

फिर वोह उन महल्लात के दरमियान दूध और साफ़ शफ़्फ़ाफ़ शहद की नहरें देखेंगे। उन नहरों पर याक़ूत, मरजान और

www.dawateislami.net

मोती के ख़ैमे हैं जिन में ख़ुद्दाम और हूरो ग़िलमां की कसरत है। वोह सब कहेंगे : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वली ! हम त़वील अ़र्से से आप के मुश्ताक़ हैं।" **मोमिन** अपनी बीवियों के साथ ने'मतों और लज़्ज़तों में रहेगा। वोह बीवी के हुस्नो जमाल से लुत़्फ़ अन्दोज़ होगा और बीवी इस के हुस्नो जमाल से लुत़्फ़ अन्दोज़ होगी। शोहर का नाम बीवी के और बीवी का नाम शोहर के सीने पर लिखा हुवा होगा जो तिल से ज़ियादा ख़ूब सूरत लगेगा और **अन्वारो तजल्लियात** की वजह से शोहर अपना चेहरा बीवी के चेहरे और सीने के नूर में देखेगा और बीवी अपना चेहरा शोहर के चेहरे और सीने के नूर में देखेगी।

जन्नती इसी ह़ाल में होंगे कि उन के रब तआ़ला की त़रफ़ से उन के लिये हदिय्ये आएंगे और फ़िरिश्ते कहेंगे : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَااَوْلِيَاءَ اللّٰهِ (या'नी ऐ **अल्लाह** तआ़ला के दोस्तो ! तुम पर सलामती हो) येह हदिय्या तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है।"

﴿36﴾ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ﴿۲۴﴾ (پ ۱۳، الرعد: ۲۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *सलामती हो तुम पर तुम्हारे सब्र का बदला तो पिछला घर क्या ही ख़ूब मिला !*

ख़ुद्दाम दस्तरख़्वान लाएंगे, बा'ज़ मोती के, बा'ज़ याक़ूत और बा'ज़ सोने के होंगे, इन पर ऐसे बरतन होंगे जिन में मुख़्तलिफ़ अक़्साम के खाने होंगे।

﴿37﴾ इरशादे बारी तआ़ला है :

وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿۲۱﴾ (پ۲۷، الواقعة: ۲۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और परन्दों का गोश्त जो चाहें।*

www.dawateislami.net

उन दस्तरख़्वानों पर मोतियों से जड़े हुवे सब्ज़ रूमाल होंगे। जन्नती और उस की बीवी (जो दुन्या में थी) एक साथ खाना खाएंगे क्यूंकि (जो हदिय्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से आएगा) वोह निस्फ़ तो शोहर के लिये होगा और निस्फ़ बीवी के लिये होगा क्यूंकि उस ने भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त में ज़िन्दगी गुज़ारी थी।

और वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दीदार से लज़्ज़त ह़ासिल करेंगे और वोह दस्तरख़्वान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वली, उस की ज़ौजा, ह़ूरो ग़िलमां और ख़ुद्दाम के लिये काफ़ी होंगे, न इन में से कुछ कम होगा और न इन में तग़य्युर वाक़ेअ़ होगा। उन के सरों के ऊपर से टहनियों पर परन्दे ऐसी आवाज़ में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना और बुर्जुगी बयान करेंगे जिस से जन्नती वज्द में आ जाएंगे और सुनने वालों ने इस से ज़ियादा अच्छी आवाज़ न सुनी होगी। फ़िरिश्ते दाईं और बाईं जानिब आ कर उन से गुफ़्तगू करते होंगे और उन को रब عَزَّوَجَلَّ की बिशारतें सुनाएंगे। वोह खाना खाएंगे मगर उन का खाना बिग़ैर भूक के (महज़ लज़्ज़त के लिये) होगा और जब वोह सैर हो जाएंगे तो उन्हें बोलो बराज़ की ह़ाजत न होगी बल्कि सैर होने के बा'द उन को मुश्क से ज़ियादा ख़ुश्बूदार और पाकीज़ा पसीना आएगा जिसे उन का लिबास जज़्ब कर लेगा, उन के कपड़े पुराने नहीं होंगे और न उन की जवानी फ़ना होगी, उन की ने'मतें आरिज़ी न होंगी बल्कि हमेशा हमेशा रहेंगी।

दीदारे इलाही मक़ाम व मर्तबे के ए'तिबार से होगा :

फिर **अल्लाह** तबारक व तआ़ला उन्हें हर जुमुआ़ को अपने दीदार के लिये बुलाएगा। इन में से कुछ लोगों को साल में एक मरतबा जब कि कुछ को हर महीने एक मरतबा बुलाएगा और कुछ हर तीन साल बा'द मुशाहदए ह़क़ तआ़ला करेंगे और कुछ लोगों

www.dawateislami.net

को तमाम मुद्दत में सिर्फ़ एक ही मरतबा दीदार होगा और येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां उन के मक़ाम व मर्तबे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से महब्बत और दुन्या में उस की इबादत के ए'तिबार से होगा। हर जुमुआ़ को उस का मुशाहदा करने वाले वोह लोग होंगे जिन्हों ने अपनी जवानी और बुलूग़त से मौत के दिन तक तमाम उ़म्र उस की इबादत में सर्फ़ कर दी और हर महीने एक मर्तबा उस का दीदार करने वाले लोग वोह होंगे कि जब तक उन में जवानी की रमक़ मौजूद थी उन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इताअ़त की और हर साल एक मरतबा उस की ज़ियारत करने वाले लोग वोह होंगे जिन्हों ने अपनी उ़म्र के आख़िरी हिस्से में अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इबादत की और फ़क़त एक मरतबा दीदारे हक़ करने वाले वोह लोग होंगे जिन्हों ने अपनी उ़म्र नाफ़रमानियों में गुज़ार दी तो उन्हें उन के रब तआ़ला ने पसन्द न फ़रमाया लेकिन उन्हों ने (मरने से पहले) तौबा कर ली तो **अल्लाह** तबारक व तआ़ला उन को भी महरूम न रखेगा और वोह लोग दूसरे अहले जन्नत से दरजे में कम होंगे।

तो **ऐ अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के बन्दो!** अपनी जवानी के दिनों को इताअ़ते ख़ुदावन्दी में गुज़ारने में सबक़त ले जाओ, और अपने रब तआ़ला के दीदार के शौक़ में ख़ूब इबादत करो क्यूंकि एक दिन ऐसा होगा जिस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने औलिया पर तजल्ली फ़रमाएगा। वोह यूं कि जब जुमुआ़ का दिन होगा जिस का नाम अहले जन्नत के हां "**यौमुल मज़ीद**" है। चुनान्चे,

सेब से हूर निकल आएगी :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तमाम महल्लात के दरवाज़ों पर सेब भेजेगा, हर वली को एक एक सेब दिया जाएगा। जब वोह उसे अपने हाथ में पकड़ लेगा तो उस के दो टुकड़े हो जाएंगे और

www.dawateislami.net

दरमियान से एक हूर निकल आएगी जिस के पास मोहर किया हुवा एक ख़त होगा। वोह कहेगी : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें अपने सलाम से नवाज़ता है और येह तुम्हारे नाम उस का ख़त है।" जब वोह उस को खोलेगा तो उस में येह लिखा होगा : "**येह ख़त अल्लाह अ़ज़ीज़ व अ़लीम की त़रफ़ से फुलां बिन फुलां के नाम है। मैं तुम्हारी मुलाक़ात का मुश्ताक़ हूं और अगर तुम भी मेरी मुलाक़ात का शौक़ रखते हो तो मेरी ज़ियारत के लिये आ जाओ।**" (ख़त पढ़ कर) वोह कहेगा : "मेरी क्या हैसिय्यत कि वोह मुझ से पूछे येह तो महज़ उस का फ़ज़्लो करम है। जब मेरा रब عَزَّوَجَلَّ मुझ से मुलाक़ात का मुश्ताक़ है तो मैं भी उस के दीदार का बेहद शौक़ रखता हूं।"

दीदारे इलाही के लिये जुलूस :

फिर मर्द आ'ला क़िस्म के ऊंटों पर और औ़रतें कजावें में सुवार हो जाएंगी। तमाम मर्द हमारे सरदार ह़ज़रते मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में और तमाम औ़रतें ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا के हुज़ूर ह़ाज़िर होने के लिये चल पड़ेंगी। सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बुराक़ पर सुवार होंगे। आप के लिये **लिवाउल ह़म्द** लहराया जाएगा और वोह झन्डा **4** हज़ार सब्ज़ रेशम के कपड़ों का होगा। उस पर नूर से लिखा हुवा होगा, اُمَّةٌ مُذْنِبَةٌ وَرَبٌّ غَفُوْرٌ या'नी उम्मत गुनाहगार है और रब عَزَّوَجَلَّ बख़्शने वाला है। मलाइका उस झन्डे को नूरी सुतूनों पर बांध कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सरे अक़्दस पर बुलन्द कर के लहराएंगे। उस झन्डे के पीछे पीछे आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत के सादाते किराम का अ़ज़ीम लश्कर अपने घोड़ों पर सुवार हाथों में "رَایَاتُ الوِصَال" या'नी कुर्ब व

www.dawateislami.net

विसाल के झन्डे लिये चलेंगे । यहां तक कि ह़ज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के महल तक पहुंच जाएंगे। ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام इस्तिफ़्सार फ़रमाएंगे : "येह कौन हैं ?" मलाइका अ़र्ज़ करेंगे : "येह आप के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा, अह़मदे मुजतबा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और उन की उम्मत है, इन को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने दीदार के लिये बुलाया है ।"

ह़ज़रते सय्यिदुना **आदम** عَلَیْہِ السَّلَام कहेंगे : "ऐ मेरे मह़बूब ! ऐ मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे आने तक ठहरिये कि **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने मुझे भी बुलाया है।" चुनान्चे, आप عَلَیْہِ السَّلَام तशरीफ़ लाएंगे और आप की अवलाद से ह़ज़रते सय्यिदुना शीस, ह़ज़रते सय्यिदुना इदरीस (علیہما السلام) नीज़ ह़ज़रते सय्यिदुना हाबील رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और नेक लोग घोड़ों पर सुवार हो जाएंगे और सब ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ चलेंगे। ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَیْہِ السَّلَام घोड़ों के हनहनाने और मलाइका के परों की आवाज़ सुन कर पूछेंगे : "येह कौन हैं ?" मलाइका अ़र्ज़ करेंगे : "येह आप के भाई ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा, अह़मदे मुजतबा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं।" ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَیْہِ السَّلَام कहेंगे : "ऐ मेरे मह़बूब ! ऐ मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे आने तक ज़रा रुक जाइये मैं भी चलता हूं इस लिये कि **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने मुझे भी बुलाया है।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَیْہِ السَّلَام और आप की क़ौम के नेक लोग साथ हो जाएंगे और ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के पास पहुंचेंगे । आप عَلَیْہِ السَّلَام भी दरयाफ़्त फ़रमाएंगे : "येह आवाज़ कैसी है ?"

www.dawateislami.net

मलाइका अ़र्ज़ करेंगे : "येह ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा, अह़मदे मुजतबा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुवारी (की आवाज़) है। इन को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी ज़ियारत के लिये बुलाया है।" ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام अपने मह़ल से झांक कर कहेंगे : "ठहरिये ! मैं भी आप के साथ चलता हूं कि **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने मुझे भी दीदार की दा'वत दी है।"

फिर येह सब हुज़ूरे अन्वर, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के झन्डे के नीचे ह़क़ तबारक व तआ़ला के दीदार के लिये चलेंगे। मर्द घोड़ों पर और औ़रतें कजावों में सुवार होंगी। जब अपनी मन्ज़िल पर पहुंचेंगे तो फ़िरिश्ते औ़रतों को ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا के हुज़ूर ले चलेंगे और मर्द नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़रीब ही में रहेंगे। सब ऐसे मैदान में उतरेंगे जिस की ज़मीन मुश्क की होगी, उस का नाम ह़ज़रतुल कुदुस है, उस में याक़ूत और सोने चांदी की कुरसियां रखी होंगी। कुरसियों के ऊपर सब्ज़ चादरें होंगी और कुछ कुरसियां नूर की होंगी। फिर फ़िरिश्ते हाथ थाम कर हर किसी को उस के मर्तबे के मुत़ाबिक़ बिठाएंगे। कुछ लोग तो उन कुरसियों पर बैठेंगे और कुछ अपने दरजे व मक़ाम के मुत़ाबिक़ मुश्क के टीलों पर बैठेंगे।

फिर **अल्लाह** तबारक व तआ़ला हर मर्द और हर औ़रत को जुदा जुदा सलाम से नवाज़ेगा। तमाम नेक औ़रतें **तूबा** दरख़्त के नीचे सफ़ेद मोती के मह़ल में ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا के पास बैठी होंगी। उन के लिये भी उन के मक़ाम व मर्तबे के मुत़ाबिक़ कुरसियां रखी जाएंगी।

www.dawateislami.net

हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सुवाल करते हैं कि वोह हमें भी अपने फ़ज़्लो करम से इस ने'मते उ़ज़्मा से सरफ़राज़ फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

फ़िरिश्ते मेहमान नवाज़ी करेंगे :

अल्लाह तबारक व तआ़ला हर मर्द और औ़रत को सलाम के बा'द फ़रमाएगा : "मेरे **औलिया** और **मुती़अ़ व फ़रमां बरदार** बन्दों को "**मरह़बा !**" ऐ मेरे फ़िरिश्तो ! इन की मेहमान नवाज़ी करो।" फ़िरिश्ते मोती के दस्तरख़्वान पेश करेंगे जिन पर मुख़्तलिफ़ अक़्साम के खाने होंगे। जब वोह खा चुकेंगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "मेरे बन्दों को "**मरह़बा !**" ऐ मेरे फ़िरिश्तो ! इन को पिला कर सैराब करो।" मलाइका सोने के पियाले पेश करेंगे, हर पियाला **70** मोतियों से जड़ा होगा और शीशे के पियाले पेश करेंगे जो सुर्ख़ याक़ूत से जड़े होंगे, हर पियाले में शराबे त़हूर की एक अ़लाहि़दा क़िस्म होगी।"

﴿37﴾ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَسَقٰىهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا ﴿۲۱﴾

(پ ۲۹، الدھر: ۲۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और उन्हें उन के रब ने सुथरी शराब पिलाई।*

इन में से हर कोई एक एक पियाला ले कर शराबे त़हूर नोश करेगा यहां तक कि सैर हो जाएगा तो पियाला उस से कहेगा : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वली ! अगर आप ने मुझ से दूध नोश फ़रमा लिया तो अब शराबे त़हूर नोश फ़रमाइये और अगर शराबे त़हूर पी चुके हैं तो अब साफ़ सुथरा शहद नोश कीजिये।" तो वोह उस से पियेगा यहां तक कि सैराब हो जाएगा। फिर मलाइका कहेंगे : "हमें हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ने हुक्म दिया है कि हम इन पियालों से आप

www.dawateislami.net

को अन्वाओ अक्साम की **70** ज़ाइक़ों की शराबे तृहूर से सैराब करें। इन में से हर एक का ज़ाइक़ा दूसरे से ज़ियादा लज़ीज़ होगा।" जब वोह सैराब हो जाएंगे तो **अल्लाह** तबारक व तआला इरशाद फ़रमाएगा : "मेरे **मुतीअ़ व फ़रमां बरदार** और मुझ से महब्बत करने वाले बन्दों को "**मरहबा** !" ऐ मेरे फ़िरिश्तो ! अब फलों से इन की तवाज़ोअ़ करो।" फ़िरिश्ते सोने के तृबाक़ों में मुख़्तलिफ़ अक्साम और मुख़्तलिफ़ ज़ाइक़ों के फल पेश करेंगे जब वोह खा चुकेंगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "मेरे **मुतीअ़ व महबूब** बन्दों को "**मरहबा** !" ऐ मेरे फ़िरिश्तो ! इन्हें ख़ुश्बू से महकाओ।" फ़िरिश्ते अ़र्श के नीचे से सफ़ेद मुश्के अज़्फ़र ले कर उसे जन्नतियों पर छिड़क देंगे। फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "मेरे मुतीअ़ व फ़रमां बरदार बन्दों को "**मरहबा**" ऐ मेरे फ़िरिश्तो ! इन्हें लिबास पहनाओ।" तो फ़िरिश्ते नूरे रह़मान से चमकते हुवे सब्ज़, ज़र्द, सुर्ख़ और सफ़ेद रंग के जुब्बे पेश करेंगे, अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन की आंखों की हिफ़ाज़त न फ़रमाए तो इस लिबास के नूर से उन की बिसारत ज़ाएअ़ हो जाए, हर जन्नती एक एक जुब्बा पहन लेगा। फिर **अल्लाह** तबारक व तआला इरशाद फ़रमाएगा : "मेरे फ़रमां बरदार और मुझ से महब्बत करने वाले बन्दों को "**मरहबा** !" ऐ मेरे फ़िरिश्तो इन्हें ज़ेवरात से ज़ीनत दो।" तो फ़िरिश्ते हर क़िस्म के ज़ेवरात हाज़िर कर देंगे।"

ने'मतों से महरूमी :

बा'ज़ हूरों को उन के सरदारों से रोके जाने का सबब उन हूरों का उन के तमाम अहवाल की इत्तिलाअ़ पाना है। चुनान्चे, एक हूर दूसरी से कहती है : "तुम ने अपने सरदार को क्या अ़मल

www.dawateislami.net

करते हुवे पाया ?" जवाब में दूसरी कहती है : "मैं ने उन को नमाज़ और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में गिर्या व ज़ारी करते हुवे पाया।" तो पहली कहती है : "मैं ने तो अपने सरदार को नींद के आ़लम में पाया।" उस पर दूसरी कहती है : "मेरे सरदार तो कसरत से मुजाहदे करता है और तेरा सरदार तो इन्तिहाई ग़फ़्लत में है। क़रीब है कि तुम भी मेरे सरदार की मीरास बन जाओ।" तो पहली कहती है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ न करे कि मेरा आक़ा मुझ से जुदा हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे और उस के दरमियान कभी जुदाई न डाले और न उस को महरूम करे।" अब अगर बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इताअ़त से मुंह मोड़ कर मा'सिय्यत (या'नी गुनाह) का रुख़ करता है तो उस का नाम महल्लात से मिटा दिया जाता है और दूसरे जन्नतियों को उस के मरातिब और ख़ुद्दाम का वारिस बना दिया जाता है और अगर वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हमेशा इताअ़त करता रहे तो दाइमी ने'मतों का मुस्तहिक़ हो जाएगा।

ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दो ! हक़ तआ़ला के दरवाज़े को हमेशा के लिये थाम लो और वक़्तन फ़ वक़्तन तौबा करते रहो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में गिर्या व ज़ारी करते रहो ताकि जन्नत में अपने दोस्तों की मुलाक़ात से महज़ूज़ हो सको।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالصَّوَابِ وَاِلَيْهِ الْمَرْجِعُ وَالْمَاٰبِ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَامُحَمَّدٍوَّعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا

اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ وَالْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी ।

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माह़ोल में ब कषरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है, आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते षवाब सुन्नतों की तर्बिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

ISBN 978-969-579-873-7
0101068

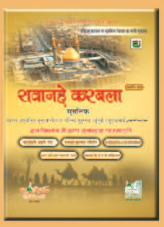

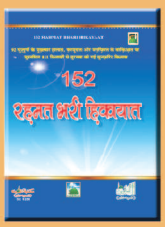

مکتبۃ المدینہ
MAKTABA TUL MADINAH
MC 1286

MAKTABATUL MADINA
421, URDU MARKET, MATYA MAHAL, JAMA MASJID
DELHI - 110006, PH : 011-23284560
email : maktabadelhi@gmail.com
web : www.dawateislami.net